

## २४ तीर्थंकर महाराजों के नाम

- १ श्री आप्तमदेवजी महा० १३ श्री विमलमयवजी महा०  
 २ श्री अजितनाथजी ॥ १४ श्री अमलानाथजी ॥  
 ३ श्री संभवनाथजी ॥ १५ श्री वर्मनाथजी ॥  
 ४ श्री अमिनन्दनजी ॥ १६ श्री शान्तिनाथजी ॥  
 ५ श्री सुमतिनाथजी ॥ १७ श्री कुन्नुनाथजी ॥  
 ६ श्री पद्मपुत्री , १८ श्री अर्धनाथजी ॥  
 ७ श्री सुकरबेभवाजी ॥ १९ श्री मङ्गलनाथजी ॥  
 ८ श्री चन्द्रपद्मजी , २० श्री सुमिसुप्रवर्धजी ॥  
 ९ श्री सुविचित्रनाथजी ॥ २१ श्री मयिनाथजी ॥  
 १० श्री शीतलनाथजी , २२ श्री अरिहमेमिताथजी ॥  
 ११ श्री जेज्जलनाथजी २३ श्री परबेभवाजी ॥  
 १२ श्री वासुदेवजी ॥ २४ श्रीमहावीरदेवासीजी ॥

( ३ )

## २० श्री विहरमान तीर्थंकरों के नाम

- |                           |                             |
|---------------------------|-----------------------------|
| १ श्री सिमंधरस्वामीजी     | ११ श्री विशालधरस्वामीजी     |
| २ श्री युगमंधरस्वामीजी    | १२ श्री चन्द्रानन स्वामीजी  |
| ३ श्री बाहुस्वामीजी       | १३ श्री चन्द्रबाहु स्वामीजी |
| ४ श्री सुबाहुस्वामीजी     | १४ श्री भुजंगस्वामीजी       |
| ५ श्री सुजातस्वामीजी      | १५ श्री ईश्वरस्वामीजी       |
| ६ श्री स्वयंप्रभुस्वामीजी | १६ श्री नेमप्रभुस्वामीजी    |
| ७ श्री ऋषभानंदस्वामीजी    | १७ श्री वीरसेनस्वामीजी      |
| ८ श्री अनंतवीर्यस्वामीजी  | १८ श्री महाभद्रस्वामीजी     |
| ९ श्री सूरप्रभुस्वामीजी   | १९ श्री देवयशस्वामीजी       |
| १० श्री वृषधरस्वामीजी     | २० श्री अजितवीर्य स्वामीजी  |



## ११ श्री गणधर महाराजों के नाम

- |                        |                       |
|------------------------|-----------------------|
| १ श्री इन्द्रमूर्तिजी  | ७ श्री धीरपुत्रजी     |
| २ श्री अग्निमूर्तिजी   | ८ श्री अर्धपितृजी     |
| ३ श्री वायुमूर्तिजी    | ९ श्री अचक्षुमूर्तिजी |
| ४ श्री विगतमूर्तिजी    | १० श्री मेघारुद्रजी   |
| ५ श्री सुवर्मास्वामीजी | ११ श्री प्रमासजी      |
| ६ श्री रंजी पुत्रजी    |                       |

## १६ श्री सतियों के नाम

- |                      |                    |
|----------------------|--------------------|
| १ श्री ग्यहीजी       | ६ श्री दुग्धवतीजी  |
| २ श्री सुन्दरीजी     | १० श्री जेजभाजी    |
| ३ श्री कौरवकीजी      | ११ श्री प्रमावतीजी |
| ४ श्री खीराजी        | १२ श्री सुमद्राजी  |
| ५ श्री राजपत्नीजी    | १३ श्री दमकन्तीजी  |
| ६ श्री कुन्तीजी      | १४ श्री सुवसाजी    |
| ७ श्री द्रोपदीजी     | १५ श्री शिवाजी     |
| ८ श्री चन्द्रमहालाजी | १६ श्री पद्मावतीजी |

( ५ )

षट्द्रव्य भिन्न २ कहा जिनवर आगम सुनत व्याख्यान ।  
 पंचास्तिकाय नव पदार्थ पंच भाषा ज्ञान ॥  
 चारित्र तेरह कहा जिनवर ज्ञान दर्शन प्रधान ।  
 जो शास्त्र नित्य सुनो भव्यजन आन शुद्धमन ध्यान ॥  
 चौवीस तीर्थंकर लोक माहीं तरण तारण जहाच्च ।  
 नव वासु नव प्रतिवासुदेवा वारह चक्रवर्ती जान ॥  
 बलदेव नव सव हुवा त्रेसठ धन्य गुणारी खान ।  
 जो शास्त्र नित्य सुनो भव्यजन आन शुद्धमन ध्यान ॥  
 चार देशना दी थी जिनवर कियो पर सेपकार ।  
 पाच अणुव्रत चार शिक्षा तीन गुणव्रत धार ॥  
 पाँच सवर जिनेश्वर भाषा दया धर्म प्रधान ।  
 जो शास्त्र नित्य सुनो भव्यजन आन शुद्ध मन ध्यान ॥



( १ )

चोर क्यों कहा क्यों भी वर्णन तीन लोक प्रमाण ।  
 मुक्त पाप भित्तार कार्ये पायें पर निर्वाण ॥  
 देव वैमानिक माहें परबी कही भी पंच प्रधान ।  
 जो शास्त्र मिल्य सुनो भक्त्यजन आनन्दमय मन ध्यान ॥  
 दोहा—विष्णु हरद मंगल करसु धन्य श्री ब्रह्मचर्य ।  
 जिन सपरिषों पावक ठहें दूरें आठों कर्म ॥  
 धन्य साधु धन्य साध्वी धन्य श्री ब्रह्मचर्य ।  
 जिन सपरिषों संकट ठहें दूरें आठों कर्म ॥  
 दोहा—इस स्वर्ग को प्राप्त कर सक्य कर्मन के पीछे  
 पढ़ना चाहिये ।



## सप्त कुव्यसन निषेध

१. शिकार खेलना, २. जूवा, सट्टा खेलना  
३. चोरी करना, ४. मास भक्षण, ५. मदिरा पान,  
६. पर स्त्री गमन, ७. वेश्या गमन ।

नोट—प्रत्येक मनुष्य को इन सातों कुव्यसनों का  
त्याग करना चाहिए इनका त्याग करने से  
प्राणीमात्र को कल्याण का मार्ग प्राप्त हो  
सकता है अन्यथा नहीं ।

## सागारो संथारा करने का दोहा

आहार शरीर उपधि पचखूँ पाप अट्टार ।

मरन पाऊँ तो वोसिरे जीऊँ तो आगार ॥

नोट—संथारा तीन बार नवकार मंत्र पढ़ कर पारना  
चाहिये ।

( ८ )

## अनुपूर्वी पढ़ने की विधि

जहाँ १ है वहाँ तमो अरिहंसायं बोधना आदिये  
जहाँ २ है वहाँ यमो सिद्धायं बोधना आदिये  
जहाँ ३ है वहाँ यमा आपरिषायं बोधना आदिये  
जहाँ ४ है वहाँ यमो हववमप्रायं बोधना आदिये  
जहाँ ५ है वहाँ यमो कोप छम्बसाहूयं बोधना आदिये

## अनुपूर्वी गुणने का फल

अनुपूर्वी गुण्ये जो कोब हमासी तपमो फलबोय ।  
सचिद मत्त आखो हगदर निर्मल मने जपो सबकार ॥  
एत मज बरी बिबेक से जो आखी इच्छो मखे ।  
सबमाया विनेरवर ने, पाँचसी सागरमा पावइये  
अष्टम कर्म के हरकको, मन्त्र बड़ो सबकार ।  
बाखी हवय अंग में देख लियो तब सार ॥१॥

|   |   |   |   |   |
|---|---|---|---|---|
| १ | २ | ३ | ४ | ५ |
|---|---|---|---|---|

|   |   |   |   |   |
|---|---|---|---|---|
| २ | १ | ३ | ४ | ५ |
|---|---|---|---|---|

|   |   |   |   |   |
|---|---|---|---|---|
| १ | ३ | २ | ४ | ५ |
|---|---|---|---|---|

|   |   |   |   |   |
|---|---|---|---|---|
| ३ | १ | २ | ४ | ५ |
|---|---|---|---|---|

|   |   |   |   |   |
|---|---|---|---|---|
| २ | ३ | १ | ४ | ५ |
|---|---|---|---|---|

|   |   |   |   |   |
|---|---|---|---|---|
| ३ | २ | १ | ४ | ५ |
|---|---|---|---|---|



|   |   |   |   |   |
|---|---|---|---|---|
| १ | २ | ४ | ३ | ५ |
| २ | १ | ४ | ३ | ५ |
| १ | ४ | २ | ३ | ५ |
| ४ | १ | २ | ३ | ५ |
| २ | ४ | १ | ३ | ५ |
| ४ | २ | १ | ३ | ५ |

|   |   |   |   |   |
|---|---|---|---|---|
| १ | ३ | ४ | २ | ५ |
| ३ | १ | ४ | २ | ५ |
| १ | ४ | ३ | २ | ५ |
| ४ | १ | ३ | २ | ५ |
| ३ | ४ | १ | २ | ५ |
| ४ | ३ | १ | २ | ५ |

( १२ )

|   |   |   |   |   |
|---|---|---|---|---|
| २ | ३ | ४ | १ | ५ |
| ३ | २ | ४ | १ | ५ |
| २ | ४ | ३ | १ | ५ |
| ४ | २ | ३ | १ | ५ |
| ३ | ४ | २ | १ | ५ |
| ४ | ३ | २ | १ | ५ |

|   |   |   |   |   |
|---|---|---|---|---|
| १ | २ | ३ | ५ | ४ |
| २ | १ | ३ | ५ | ४ |
| १ | ३ | २ | ५ | ४ |
| ३ | १ | २ | ५ | ४ |
| २ | ३ | १ | ५ | ४ |
| ३ | २ | १ | ५ | ४ |

|   |   |   |   |   |
|---|---|---|---|---|
| 2 | 2 | 4 | 3 | 8 |
| 2 | 2 | 4 | 3 | 8 |
| 2 | 4 | 2 | 3 | 8 |
| 4 | 2 | 2 | 3 | 8 |
| 2 | 4 | 2 | 3 | 8 |
| 4 | 2 | 2 | 3 | 8 |

( १५ )

|   |   |   |   |   |
|---|---|---|---|---|
| १ | ३ | ५ | २ | ४ |
| ३ | १ | ५ | २ | ४ |
| १ | ५ | ३ | २ | ४ |
| ५ | १ | ३ | २ | ४ |
| ३ | ५ | १ | २ | ४ |
| ५ | ३ | १ | २ | ४ |

( ११ )

|   |   |   |   |   |
|---|---|---|---|---|
| २ | ३ | ५ | १ | ८ |
| ३ | २ | ५ | १ | ८ |
| २ | ५ | ३ | १ | ८ |
| ५ | २ | ३ | १ | ८ |
| ३ | ५ | २ | १ | ८ |
| ५ | ३ | २ | १ | ८ |

( १७ )

|   |   |   |   |   |
|---|---|---|---|---|
| १ | २ | ४ | ५ | ३ |
| २ | १ | ४ | ५ | ३ |
| १ | ४ | २ | ५ | ३ |
| ४ | १ | २ | ५ | ३ |
| २ | ४ | १ | ५ | ३ |
| ४ | २ | १ | ५ | ३ |





( ५३ )

|   |   |   |   |   |
|---|---|---|---|---|
| १ | ४ | ५ | ३ | २ |
| ४ | १ | ५ | ३ | २ |
| १ | ५ | ४ | ३ | २ |
| ५ | १ | ४ | ३ | २ |
| ४ | ५ | १ | ३ | २ |
| ५ | ४ | १ | ३ | २ |

|   |   |   |   |   |
|---|---|---|---|---|
| २ | ४ | ५ | १ | ३ |
| ४ | २ | ५ | १ | ३ |
| २ | ५ | ४ | १ | ३ |
| ५ | २ | ४ | १ | ३ |
| ४ | ५ | २ | १ | ३ |
| ५ | ४ | २ | १ | ३ |

|   |   |   |   |   |
|---|---|---|---|---|
| १ | ३ | ४ | ५ | २ |
| ३ | १ | ४ | ५ | २ |
| १ | ४ | ३ | ५ | २ |
| ४ | १ | ३ | ५ | २ |
| ३ | ४ | १ | ५ | २ |
| ४ | ३ | १ | ५ | २ |

( १८ )

|   |   |   |   |   |
|---|---|---|---|---|
| १ | २ | ५ | ४ | ३ |
| २ | १ | ५ | ४ | ३ |
| १ | ५ | २ | ४ | ३ |
| ५ | १ | २ | ४ | ३ |
| २ | ५ | १ | ४ | ३ |
| ५ | २ | १ | ४ | ३ |

( १६ )

|   |   |   |   |   |
|---|---|---|---|---|
| १ | ४ | ५ | २ | ३ |
| ४ | १ | ५ | २ | ३ |
| १ | ५ | ४ | २ | ३ |
| ५ | १ | ४ | २ | ३ |
| ४ | ५ | १ | २ | ३ |
| ५ | ४ | १ | २ | ३ |

|   |   |   |   |   |
|---|---|---|---|---|
| ३ | ४ | ५ | ६ | ७ |
| ४ | ३ | ५ | ६ | ७ |
| ३ | ५ | ४ | ६ | ७ |
| ५ | ३ | ४ | ६ | ७ |
| ४ | ५ | ३ | ६ | ७ |
| ५ | ४ | ३ | ६ | ७ |

( २५ )

|   |   |   |   |   |
|---|---|---|---|---|
| २ | ३ | ४ | ५ | १ |
| ३ | २ | ४ | ५ | १ |
| २ | ४ | ३ | ५ | १ |
| ४ | २ | ३ | ५ | १ |
| ३ | ४ | २ | ५ | १ |
| ४ | ३ | २ | ५ | १ |



|   |   |   |   |   |
|---|---|---|---|---|
| २ | ३ | ५ | ४ | १ |
| ३ | २ | ५ | ४ | १ |
| २ | ५ | ३ | ४ | १ |
| ५ | २ | ३ | ४ | १ |
| ३ | ५ | २ | ४ | १ |
| ५ | ३ | २ | ४ | १ |

( २७ )

२

४

५

३

१

४

२

५

३

१

२

५

४

३

१

५

२

४

३

१

४

५

२

३

१

५

४

२

३

१

( २८ )

|   |   |   |   |   |
|---|---|---|---|---|
| ३ | ४ | ५ | २ | १ |
| ४ | ३ | ५ | २ | १ |
| ३ | ५ | ४ | २ | १ |
| ५ | ३ | ४ | २ | १ |
| ४ | ५ | ३ | २ | १ |
| ५ | ४ | ३ | २ | १ |

६ श्री योगसामान्यम्, ६

# ॐ श्री सामाधिक सूत्र ॐ

( मूल पाठ )

पंच परमेष्ठी मन्त्र

शमो अरिहंताणं । शमो सिद्धाणं ।

शमो आयरियाण । शमो उवज्जमायाणं ।

शमो लोण सच्च साहणं ।

एसो पंच शमोकारो । सच्च पाप प्पणासणो ।

मंगलाणं च सच्चैसि । पद्म हवर्ह मंगलं ॥

## २ गुरु वन्दना

विष्णुचो आयादिष्टं वयादिष्टं करोमि वंशमि  
समंशामि सञ्चरेमि सम्मासेमि कञ्चयं मंगलं  
देववं चैव्यं पञ्चुवाप्तमि मत्पत्तु वंशमि ॥

## ३ सम्यक्त्व पाठ

अरिहो महरेवो वाव बीवाय सुस्था सुगुरुय ।  
त्रिप्य पपयत्तं तत्तं पसम्मत्तं मे गदिष्टं ॥१॥  
पंचेदिय संवरयो तह मव विह वंसजेर गुप्ति परो ।  
चरविहकस्यय गुप्ते इय अट्टारस्त गुणदि संजुत्तो ॥  
पंचमहम्यवजुत्तो पंचविह आयार पात्तु समस्वो ।  
पंच समिद्ध विगुत्तो ज्ञप्तीस्त गुणोगुरु दोई सो  
गुरु मग्नं ॥२॥

## ૪. ગમનાગમને રૂપ પાપ નિવૃત્તિ પાઠ

इच्छा कारेण सदिसह भगवन् इरिया वहियं  
 पडिक्कमामि इच्छ इच्छामि पडिक्कमिउं इरियाव-  
 हियाए विराहणाए गमणागमणे पाणक्कमणे वीय-  
 क्कमणे हरियक्कमणे उसा उतिंग पणग दग मट्टी  
 मक्कड़ा सताणा सक्कमणे जे मे जीवा विराहिया  
 एगिंदिया वेइंदिया तेइंदिया चउरिंदिया पंचिंदिया  
 अभिहया वत्तिया लेसिया सघाइया सघट्टिया  
 परियाविया किलामिया उदविया ठाण उठाण  
 संकामिया जीवियाउ ववरोविया तस्स मिच्छामि  
 दुक्कढ ॥

( १२ )

## ५ च्यान शुद्धि पाठ

तत्सं वत्तरी करण्यं पावाच्छिष्टं करणेण विसोपेदि  
करण्यं विसाप्ती करणेण पावाच्छं कम्मायं निग्घाय  
छठाप ठम्मिअवसमां अन्नत्वं वत्तस्सिपणं मिम  
स्सिपणं आस्सिपणं च्छीपणं अमाप्पणं लङ्गणं  
वावमिस्सणोणं अमक्किप पित्तमुच्चाप सुद्धमेदि अंग  
संवाप्तेदि सुद्धमेदि लोक्क संवाप्तेदि सुद्धमेदि रिद्धिं संवा-  
त्तेदि एवमाहपदि । आगपरेदि अमग्गो अविपादिक्क  
हुक्क मे अक्कसग्गो वाव अविर्णवाणं अगवण्ठाणं ववो  
अरेणं नवारेणं वाव अक्कं ठाप्तेणं माप्तेणं अण्णं  
अण्णं बोक्किमि ॥

( ३३ )

## ६. अरिहंत स्तुति पाठ

लोगस्स चञ्जोय गरे पम्मा नित्ययरे जिणो ।  
अरिहंते कित्तइस्सं चट्ठीसंपि षेयली ॥ १ ॥  
उत्तम मजियंच वंदे सम्भय गमियांइयुंच सुमहंच ।  
पवमप्पइ सुपासं जिणय चंदप्पइ वंदे ॥ २ ॥  
सुविहिंच पुप्फइत्तं सीअत्त सिज्जंत्त पासुपुज्जंच ।  
विमल मयंतंच जिण धम्मं सतिंच वदामि ॥ ३ ॥  
कुन्धु अरंच मल्लि वंदे मुणि सुच्चय नमि जिणंच ।  
वदामि रिद्धिनेमि पासं तइ चद्धमाणच ॥ ४ ॥  
एवं मए अभियुष्सा विट्ठयरयमत्ता पहिणजरमरणा ।  
चट्ठीसपिजिणवरा तित्थयरा मे पसीयतु ॥ ५ ॥  
कित्तिय वदिय महिया जेए लोगस्स उत्तमासिद्धा ।  
आरोगगवोदित्ताभं समाहि वर मुत्तम दितु ॥ ६ ॥





## ८. सिद्ध अरिहंतों का स्तुति पाठ

नमोत्तुणं अरिहंताणं भगवंताणं आइगराणं  
 तित्थयराणसयसबुद्धाणपुरिसुत्तमाणं पुरीससीहाणं  
 पुरीसवरपुंढरियाणं पुरीसवरगन्ध वट्ठीणं लो-  
 तुत्तमाणं लोगनाह्वाणं लोगहियाणं लोगपईवाणं  
 लोगपज्जोयगराणं अभयदयाणं चक्खुदयाणं मग्गद-  
 याणं सरणदयाणं जीवदयाणं बोहिदयाणं धम्मद-  
 याणं धम्मदेसियाणं धम्मनायगाणं धम्मसारहीणं  
 धम्मवरचाउरंते चक्कवट्ठीणं दिवोत्ताणं सरणगहप-  
 इट्ठाणं अप्पहिइयवरनाणं दसणधराणविअट्ठल्ल-  
 माणं जिणाणजावयाणं तिन्नाणतारयाणं बुद्धाणं  
 बोहियाणं मुत्ताणं मोयगाणं सव्वन्नूणं सव्वदरिसिणं  
 सिवमयलं मरुत्तयमणत्तं गक्खत्तयं सव्ववावोदं



## ८. सिद्ध अरिहंतों का स्तुति पाठ

नमोत्थुण अरिहंताणं भगवताण आइगराण  
 तित्थयराणसयसबुद्धाणपुरिसुत्तमाण पुरीससीहाण  
 पुरीसवरपुंढरियाण पुरीसवरगन्ध हत्थाणं लोगु-  
 त्तमाण लोगनाहाण लोगहियाण लोगपईवाण  
 लोगपज्जोयगराण अभयदयाणं चक्खुदयाण मग्गद-  
 याण-सरणदयाण जीवदयाणं बोद्धिदयाण धम्मद-  
 याण धम्मदेसियाण धम्मनायगाण धम्मसारहीण  
 धम्मवरचाउरते चक्खवट्ठीण दिवोत्ताणं सरणगइप-  
 इट्ठाण अप्पडिइयवरनाण दसणधराणविअट्ठच्च-  
 माण जिणाणजावयाणं तिन्नाणतारयाण बुद्धाणं  
 वोहियाण मुत्ताण मोयगाण सव्वन्नूण सव्वदरिसिण  
 सिवमयल मरुत्तयमणत्त मक्खय मव्वावाह

मपुस्तर्पेति स्थित्याहं नाम वेत्तं तस्य संपत्ताय नमो-  
विद्याय विप्रभषाय ॥

## ६. सामायिक पारने का पाठ

जबमां सामयिक ऋतु के विषय को कोई  
अतिथर बना हो वे में आछोड सब बचन करा  
क्य छोडा योग करछया, हो सामयिक में समता न  
करी हो बिना पूर्ण पाठी हो १० यन के १० बचन के  
१२ अय्य के इन बलीस दोबों में से कोई दोब राप  
बगा हो वो वस्तु मिच्छामि दुक्कई ।

## सामायिक करने की विधि

प्रथम त्वाम ( जगद् ) आसन, पूर्वकी मुख  
बलिहा आदि की परिकेदया कर बीजे जगद् अय्य  
पूर्वक पूजकर आसन बिछाने फिर मुखबलिका

( ३७ )

को मुँह पर बाध कर आसनके पास खड़ा होकर  
 मुनिराज के सम्मुख यदि मुनिराज विराजमान न  
 हों तो पूर्व तथा उत्तर दिशा की ओर मुँह कर के  
 दोनों हाथ जोड़ कर पंचांग नमा कर भगवान्  
 श्रीसीमन्धर स्वामी जी महाराज को विधि युक्त  
 तिक्युतो के पाठ से धंदना ( नमस्कार ) करके पहले  
 अरिहंतों महदेवों का पाठ पढ़ कर पीछे इरिया  
 घहियाय का पाठ बोले, बाद तस्स उत्तरी का पाठ  
 कह कर काउस्सग करें, काउस्सग में एक लोगस्स  
 उज्जयोगरेका सम्पूर्ण पाठ चगैर ज्ञान दिलाये मन  
 ही मन में पढ़े ( बाद <sup>२</sup> एक लोगस्स का पाठ प्रगट कहे )  
 फिर <sup>१</sup> नमो अरिहंताणं सिर्फ इतना ही कह कर  
 ध्यान पारे । पीछे 'करेमि भंते' का पाठ पढ़ता  
 हुआ जितने मुहूर्त करने हों उतने मुहूर्त कह पाठ

( ३८ )

पूर्ण कर लेवे बाएँ पीछे बैठ कर बायाँ गोड़ा  
( धुठमा ) पकड़ा कर दोनों हाथ जोड़ कर नमोत्पुर्ण  
का पाठ दो बार कहे । दूसरे नमोत्पुर्ण के अन्त में  
जहाँ 'ठार्यं सम्पत्तयः' आता है वहाँ 'ठार्यं  
संपादिष्ठ कामस्तु' बोधे फिर आसन पर बैठकर  
सामायिक काष्ठ पूरा मही हो जब तक ज्ञान ध्यान  
करे या पढ़ा हुआ ज्ञान पाए करे अथ बोध अथ  
बोधका पढ़े या विचारे इत्यदि चर्म सम्पन्नी  
ज्ञान ध्यान से सामायिक काष्ठ पूरा करे । शुद्ध  
महाराज विराजमान हों तो उनके सम्मुख बैठे, पीठ  
तक सम्मुख स्तब्धचान आदि का उपयोग रहे  
तो इसमें उपयोग रक्खे । सामायिक काष्ठ मरह  
पकरण विचाररतक न रक्खे । सामायिक में  
सामायिक के कपीस शेष रहें ।

## सामायिक पारने की विधि

सामायिक पारने के समय पढ़ले इरियात्रदिगाव का पाठ पढ़ फिर तन्म उत्तरी का पाठ पूर्ण पढ़ कर वात्सल्य करे । पारम्भ में एक बार लोमस का पाठ सम्पूर्ण पढ़कर मिरा, “नमो अरिहता” इतना पढ़ कर ध्यान पारने फिर एक लोमस का पाठ प्रगट उच्चारण करे फिर वाया गोड़ा खड़ा करके दोनों हाथ जोड़ पर दो नमोस्तुत का पाठ धोल पर नवमा सामायिक पारने का पाठ पढ़े पीछे तीन नव-कार मंत्र भी पढ़ ले ।

॥ इति ॥





## चौदह नियम

१. छवित—छत्तीस वस्तु

२. शृण्व—स्वाद तथा मद्य पकड़े कामे पीने की वस्तु

३. विगय—रूप, बड़ी, पी ठेक, पीठा

४. पत्नी—कूडा, घोआ कढ़ाई बगैर

५. तंबोळ—मुकबास सुपाटी, पान बगैर

६. बक—पहनेने ओढ़ने के कपड़े

७. कुमुम—सू घने की वस्तु फूल इत्र मसुका

८. काहन—चोका चोकी बहाल रेक, मोटर गाड़ी

९. शपब—काद, पहांग, बिजौने

१०. विओपस—ठेक पीठी शरीर के लगावे की वस्तु

११. बम—मद्यपय, कुशीक की मर्बादा

१२. विरय—झेंकी मीची ठिराही विरय

१३. म्हाय—स्नान करमे, बक पोने की वस्तुयें धावन

१४. भूतेषु—आहार पाणी का वजन

- क. पृथ्वीकाय—मिट्टी, लवण इत्यादि  
 ख. अपकाय—पानी, जिवणि, टूँटी, परेंडे प्रमुख  
 ग. तेजकाय—अग्नि, दीया, चूल्हा, चिलम  
 घ. वायुकाय—हवा, पंखा, झूला  
 ङ वनस्पतिकाय—सब्जी, फल, शाक  
 च. त्रसकाय—हलते चलते जीव  
 छ. असि—तलवार, छुरी, सुई, कैंची आदि  
 ज. कृसि—खेती बाड़ी का सामान  
 झ. मसि—दवात, कलम, काराज आदि

इन बातों की नित्य मर्यादा करना हर एक भाई का कर्ज है इससे सर्व लोक की अग्रत आनी बहुत बन्द हो जाती है जिससे जीव कर्मों से हलका होकर थोड़े ही काल में मोक्ष के परम सुख की प्राप्ति कर सकता है ।

## दोपहर के व्याख्यान के पश्चात् पठनीय स्तवन

शीरष करता हुआ इत्य, इन्द्र सारे सेव हैं ।  
 त्रैलोक्य रक्षायी मोक्षगामी सो हमारे देव हैं ॥  
 महाशक्त धारी व्याप्ताकारी जीव बद्ध प्रविष्टकृत ।  
 गरुदेवमोटा त्रिबाही छोटा हुआ सगले दासता ॥  
 सब जीव रक्षा बही कटीका धर्म त्रिमूर्ति जानिब ।  
 जहाँ होत दिसा नहीं संशय, अपर्म पोरि विप्रानिब ॥  
 यं तीम रत्ना कीजो यत्ना सुख विच सुधारिये ।  
 बड़े बल्य सुनो मोक्ष, प्रथमो मै सार बे ॥  
 सुख सार्न स्वर्ग पाहैं, कठिनी निज दिव आखिये ।  
 प्रभु राम्य छेड़ धर्म सेऊँ, तादीसो कल्याण है ॥

( ५६ )

## पोषध व्रत लेने का पाठ

आर्यो षष्ठिपूर्णां पौष्य व्रत-शमर्चयाम् स्वाद्वनं  
 माद्वनं चार आदार मेवने का पशवत्याण्य अधम चेर  
 सेवने का पशवत्याण्य माक्षा यणश्च निनेवन का  
 पशवत्याण्य ऊयुक्त मणि गुपणं माय गुराणादिक  
 सायज्ज जोग का पशवत्याण्य जाय अहोरन पज्जु-  
 चासामि दुविहं तिविहेणं न करेमि न कारयेमि  
 मणमा पयमा कायमा तस्स भंते पट्टिणामाभिं  
 निदामि गरिहामि अप्पाणं वोत्तिरामि ।



( ४४ )

## पौषध व्रत पारने का पाठ

ग्यारहौं पौषध व्रत का पंच महत्त्व आश्विनमा  
 न समाचारिबद्धा तं ब्रह्मा ते, आश्विनं अण्डिसेहिए  
 दुण्डिसेहिए सेना संघारण अण्डमण्डिए दुण्ड मण्डिए  
 सेना संघारण अण्डिसेहिए दुण्डिसेहिए हजार  
 पासवय भूमि अण्डमण्डिए दुण्डमण्डिए हजार पास  
 वय भूमि पौषहोद्यसस्व धर्म अणुपात्रपाय वस्व  
 मिष्ट्यामि दुर्गम् ।



# प्रथम वा अन्तिम तीर्थंकर वा सिद्धों की स्तुति

असिञ्चाउसाय नमः

प्रथम सिद्ध परमात्मा की स्तुति:—

( हरिगीत छंद )

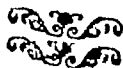
तुम तरण तारण दुग्ग निवारण भविक जोष  
आराधन, भी नाभिनन्दन जगत् पन्दन नमो सिद्ध  
निरंजन ॥१॥ जगत् भूषण विगत दूषण प्रवण प्राण  
निरुपक, ध्यान रूप अनेप उपम नमो सिद्ध निरंजन  
॥ २ ॥ गगन मडल मुक्ति पदवी सर्व ऊर्द्ध निवासिन  
ज्ञान ज्योति अनंत राजे नमो सिद्ध निरंजन ॥ ३ ॥  
अज्ञान निद्रा विगत वेदन दलित मोह निरायुषं, नाम  
गोत्र निरवराय नमो सिद्ध निरंजन ॥४॥ विकट क्रोधा  
मान योधा माया लोभ विसर्जन । राग द्वेष विमर्द

( ४६ )

अधुर नमो सिद्ध निरंजन ॥ ५ ॥ विमल केवल काम  
 बोधन ध्यान शुद्ध समिद्धि, योगिना विगम्भ्य हर्ष  
 नमो सिद्ध निरंजन ॥ ६ ॥ योग मे समोत्तरा सुभा  
 परी पर्यवसासनं । सर्व हीसे तेज हर्ष नमो सिद्ध  
 निरंजन ॥ ७ ॥ जगत् विनये दास दासी ताम्रं ध्यास  
 निपासनं चन्द्र पे परमानन्द हर्ष नमो सिद्ध निरंजन  
 ॥ ८ ॥ स्व समथ समकित इष्टि विनयी सोप योगी  
 आयोगिणं । देवतामा कीम बोधे नमो सिद्ध निरंजन  
 ॥ ९ ॥ तीर्थ सिद्धा अतीर्थ सिद्धा मेद पंच विराटिणं,  
 सर्व कर्म विमुख चैतन नमो सिद्ध निरंजन ॥ १० ॥  
 चन्द्र सूर्य हीन मधि की ज्योति येन बद्धवित् । ते  
 ज्योतिषि अपरम ज्योति नमो सिद्ध निरंजन ॥ ११ ॥  
 एक माहि अनेक एवे अनेक माहि एकिणं एक अनेक  
 की माहि संकट नमो सिद्ध निरंजन ॥ १२ ॥ अजर

( ४७ )

अमर अलघ अतन्तर निरुत्तर निरंजन, परि मया  
 ज्ञान अनंत दर्शन नमो सिद्ध निरंजन ॥१३॥  
 अतुल गुण की लहर में प्रसु खीन रहे निरंतर, भग्न  
 ध्यान भी सिद्ध दर्शन नमो सिद्ध निरंजन ॥१४॥  
 ध्यान धूप मन पुष्प पंचेन्द्रिय हुतारान, घुमा जाप  
 सन्तोष पूजा पूजो देय निरंजन, ॥ १५ ॥ तुम्हें शुक्ति  
 दाता कर्म घाता दीन जानी दया करो, सिद्धारथ  
 नन्दन जगत वदन महावीर जिनेश्वरो ॥ १६ ॥





( ४८ )

## शान्तिनाथ स्तुति

साता कीजोकी श्री शान्तिनाथ प्रभु शिव सुख  
हीनो की ॥ तेर ॥ शान्तिनाथ है नम्य व्यपक  
सब ने सखा कही की । तीस मयम में जाही प्रभु की,  
शुभी बिहारी की ॥ १ ॥ आप सरीखा देव जगत में  
और नजर नहीं आवे की । त्वांगी ने बीतगंगी मोहा  
मुझमन मावेजो ॥ २ ॥ शान्ति आप मन मूर्खें अपरा  
वादे सो फल आवे की । सब विन्यारी हुकम दारिद्र  
सब मिट जावे की ॥ ३ ॥ अरबसेम राजा की के  
मन्दन अवका बेबी जाया की । गुरु प्रसाई भीषम  
करे, क्या दुहावा की ॥ ४ ॥

---

( ४६ )

## जिनदेव स्तुति

[ तर्ज—ॐ जय जगदीश हरे ]

ॐ जय जिनवर स्वामी जय जिनवर स्वामी । संकट  
हरणम् शांति करणम् जयजिनवर स्वामी ॥८॥ सुख  
करणम् दुःख हरणम् स्वामी तुम केवल ज्ञानी । चिंता  
चूरण आशा पूरण अमृतसम बानी ॥ १ ॥ ॐ ॥ रोग  
नशावे शोक मिटावे, विष अमृत होवे, जो ध्यावे  
सुख पावे भव भव दुःख खोवे ॥२॥ ॐ ॥ नाम की  
माला रटने वाला हो जावे आला । दीन दयालु तू  
रखवाला भक्तन प्रतिपाला ॥ ३ ॥ ॐ ॥ अगणित  
थारी महिमा भारी जाने नर नारी । नाथू मुनि ली  
शरण चरण की करो मदद हमारी ॥ ४ ॥ ॐ ॥



## शान्तिनाथ स्तुति

( तबे—जय बगसीरा हरे )

जय श्री शान्ति प्रभो स्वामी जय श्री शान्ति प्रभो ।  
 संकट मोचन करिये सुनिधे विनय विभो । ॐ जय श्री  
 शान्ति प्रभो । टेक । इस्तिन्नगपुर में अग्ने स्वामी अचला  
 के मन्दन । बिरबसेन दुख दीपक प्रभु अमर रंजन ॥  
 ॐ ॥ १ ॥ अमृत मृगी नरार्थ स्वामी शान्ति करी  
 देया । अमर अमरपति करते चरण कमल सेवा ॥ ॐ  
 ॥ २ ॥ शान्ति शान्ति महामन्त्र जो प्रेम पुष्ट गाये । रोग  
 शोक भय नाशो सुख वैभव पाये । ॥ ॐ ॥ ३ ॥ निर्भय  
 निरुद्ध निरंजन स्वामी काय जपूँ तेरा । भवदधि प्रवह  
 भंवर से पार करो बेड़ा ॥ ॐ ॥ ४ ॥ भक्ति भाव से  
 करता स्वामी 'सोदम' अधिनन्दन । प्रेमापणो बगसीध  
 स्वीकृत कर मन्दन ॥ ॐ ॥ ५ ॥

# स्तोत्र शान्तिनाथजी का

श्री शान्तिनाथजी साता बतौई संसारजी,  
मन मोहन हारा जपतिया मंगलाचारजी ॥ श्री ॥१॥  
अश्वसैन नृप अचरा अंगज जाया शान्तिकुमार ।  
शान्ति थई सहु देशमें सकौई मृगोरोग निवारजी । श्री  
॥२॥ धौ धौ धर्ष मप मादल बाजै, नाटक नां कतकार ।  
सुगुड़ सुजान सुघड़ जिनमहिमा बोलि रहा नर नार  
जी ॥ श्री ॥ ३ ॥ कामन टूमन टोट कास कोई खात  
खैन टंकार । ताव तेजारी निकट न आवे, तूठे  
शान्ति जिवारजी ॥ श्री ॥४॥ विष प्याला अमृत होई,  
प्रग में अग्नि होवे छार । द्वेपी दुश्मन चोर टास कोई  
नहीं आवे घर द्वारजी ॥ श्री ॥ ५ ॥ शान्ति नाम  
ताबीज हिये लिख, भव दुख भंजन हार । मंगन  
शांतिता बतै निश दिन शान्ति उत्तारे पारजी ॥ श्री ॥६॥

## उवसग हरण का पाठ

उवसग हरं पासं पसं बंदामि १००० पय मुक्कं ।  
 विस्हर विस् विम्रासं संग्रह कज्ञाय जावासं ॥१॥  
 विस्हर कुडिंग मंतं, कंठे बारोई जो सचा मणुयो ।  
 तस्स गह रोग धारी बुद्ध बरु बौंठि उवस्सर्म ॥२॥  
 विस्हर दूरे मंतो तुम्ह पयामो विस्हरु पयो होई ।  
 कर विरियसु विबीज पारंति म कुंठ होइमो ॥३॥  
 तुम सम्मते कसे विम्रासणि कस्य पाव वस्स विर ।  
 पारंति अविग्गेहं बीजा अपयमरं टाव ॥४॥  
 इम संवत् महापस पतिम्मउत्तिमरेय्हि अपय ।  
 तावेद विम्र बोहि भवे भवे पास विस्सपन्द ॥५॥  
 विवि-नीमद्रवाडु स्वायी मसादात् वर वोग-कज्ञातु

देसा प्रथम जोरहर हर इमेय सचाइस कर  
 सचाइस रोह तक एक विच से उवसग हरण का  
 पाठ पढ़ें वो इसका उवसग मिठे और पारंति दूर  
 आपदा दूर होवे ।

ॐ

सिद्धेभ्यो नमः.

## पच्चीस बोल का थोकड़ा

पहिले बोले गति चार । दूसरे बोले जाति पाँच  
तीसरे बोले काय छ. । चौथे बोले इन्द्रिय पाँच ।  
पाँचवें बोले पर्जा ( प र्जासि ) छः छः । छठे बोले प्राण  
दश । सातवें बोले शरीर पाँच । आठवें बोले योग  
( जोग ) पन्द्रह । नवें बोले सपयोग बारह । दशवें  
बोले कर्म आठ । ग्यारहवें बोले गुणठाणा १४ ।  
बारहवें बोले पाँच इन्द्रियों के तेईस विषय । तेरहवें  
बोले मिथ्यात्व के दश बोल । चौदहवें बोले छोटी  
नवतत्त्व के ११५ भेद । पन्द्रहवें बोले आत्मा आठ ।  
सोलहवें बोले दण्डक चौतीस । सत्रहवें बोले लेश्या

ब्र । अठारहवें बोले दृष्टि तीन । बत्तीसवें बोले ध्येय  
चार । बीसवें बोले बटुर्ध्व के तीस भेद । इत्तीसवें  
बोले परि दो । बाईसवें बोले आषट के शरद्व प्रथ ।  
तेईसवें बोले साधुजी के पाँच महाप्रद । चौतीसवें  
बोले गुह्यपचास भागों का आनयना । पत्तीसवें बोले  
चारित्र पाँच ।

पहिले बोले गतिः ४—नारकगति, तिर्यञ्च-  
गति, मनुष्यगति, देवगति ।

दूसरे बोले जातिः ५—एकेन्द्रिय जाति,  
द्वेन्द्रिय जाति, त्रैन्द्रिय जाति, चतुरिन्द्रिय  
जाति, पंचेन्द्रिय जाति ।

१ गति किसको कहते हैं ? गतिनामा नाम कर्म  
के उद्भव से जीव की पञ्चावधिरोप का गति कहते हैं ।

२. जाति किसको कहते हैं ? अनेक व्यक्तियों में एकपने की प्रतीति कराने वाले समान धर्म को जाति कहते हैं । जैसे—काली, पीली, नीली गायों में गोपन एक है । अर्थात् काली गाय कहने से भी उसमें गोपन है, वैसे ही पीली और नीली कहने से भी ।

तीजे बोले कायः छः—पृथ्वीकाय, अपकाय, तेउकाय, वाउकाय, वनस्पतिकाय, व्रसकाय ।

१ काय किसको कहते हैं ? व्रस स्थावर नाम-कर्म के उदय से जीव जिस पिंड ( शरीर ) में उत्पन्न हो उसे काय कहते हैं ।

(१) पृथ्वी काय—मिट्टी हींगलु, हड़ताल, मोडल, पत्थर, हीरा, पन्ना आदि सात लाख योनि हैं । आयुष्य लघन्य अन्तर्मुहूर्त की उत्कृष्ट शुद्ध



( २६ )

पृथ्वीकाय की १२ इञ्चार बर्ष की भीर कर पृथ्वी  
काय की २२ इञ्चार बर्ष की है । एक कौंकरे में  
असंख्यता बीज भी मगधन्त ने करमाया है ।  
पृथ्वी काय का बर्ष पीछा है । स्वभाव कठोर है ।  
संठाण मसूर की दाह के आधार है । पृथ्वीकाय की  
१२ जल कुल कोकी हैं । एक वर्षासा की नेसणव  
असंख्यता अपर्वासा है ।

(२) अपृथ्वीक—बरसात का पानी जोध का  
पानी गन्ध का पानी, समुद्र का पानी सुँवर का  
पानी कुँवा-बाबड़ी का पानी, यदि देखने सात  
बात पोति हैं । आहुण्ड जवन्ध अन्तर्मुहूर्त भीर  
अन्तर्मुहूर्त १२ इञ्चार बर्ष की है । एक कनी की वन्द  
में असंख्यता बीज भी मगधन्त ने करमाया है ।  
एक वर्षासा की नेसणव असंख्यता अपर्वासा है ।

( ४७ )

अपकाय का वर्ण लाल है। स्वभाव ठोका है।  
संठाण पानी के परपोटे यूनयुले माफिक है। अपकाय  
की ७ लाख फुल कोड़ी हैं।

(३) तेउकाय ( तेजस्काय )-अग्नि, भाल की  
अग्नि, बिजली की अग्नि, घाँसकी अग्नि, उल्कापात  
आदि देइने मात लाय योनि हैं, आयुष्य जघन्य  
अन्तर्मुहूर्त की और उत्कृष्ट तीन रात दिन की है।  
एक अग्नि की चिन्गारी में असंख्याता जीव श्री  
भगवन्त ने फरमाया है एक पर्याप्त की नेसराय  
असंख्याता अपर्याप्ता हैं। तेउकाय का वर्ण सफे-  
है। स्वभाव उष्ण ( गर्म ) है। संठाण खुई की  
भारे के माफिक है। खुई की तरह अग्नि की भाल  
नीचे से मोटी ऊपर से पतली। तेउकाय की तीन  
लाख फुल कोड़ी हैं।

( ५८ )

(४) वायुकाय—वायु, मंडलिका वायु, पञ्चवायु, तप्त वायु, पूर्ण वायु परिचय वायु  
 अपरि रोहने क्षमि काय पोषि हैं। वायुकाय कायकाय  
 अन्तर्मुखी की और उत्कृष्ट तीव्र हवा काय काय की है।  
 एक फूँक में अस्वस्थता तीव्र भीमाकाय के फरमाय  
 है। एक पर्याप्त की नेष्टकाय अस्वस्थता कायकाय हैं।  
 वायुकाय काय काय है। स्वभाव वायुकाय है।  
 संठकाय अन्तर्मुख ( पञ्चकाय ) के कायकाय है। वायुकाय  
 की ७ काय काय कोषी हैं।

(५) वनस्पतिकाय—वायु के ९ भेद-प्रत्येक  
 साधारण। वनस्पतिकाय का काय काय ( मीठा )  
 है। स्वभाव संठकाय अन्तर्मुख काय है। ९८ काय  
 काय कोषी हैं। एक शरीर में एक जीव होने वस्तुको  
 प्रत्येक कहिये। जैसे अम, अंगूर केकाय वद पीपल

( ५६ )

आदि देइने १० लाख जाति हैं । कन्दमूल की जाति को साधारण वनस्पति कहिये, जैसे लशान, सकरकदी, अद्रक, आलू, रतालू, मूली, नीलीहल्दी, गाजर, लीलाण, फूलण आदि देइने १४ लाख योनि हैं । आयुष्य जघन्य अन्तर्मुहूर्त की, उत्कृष्ट १०००० वर्ष की है ।

कन्दमूल—एक सुई के अपभाग में असख्याता श्रेणी हैं । एक एक श्रेणी में असंख्याता प्रतर हैं । एक एक प्रतर में असंख्याता गोला हैं । एक एक गोला में असख्याता शरीर हैं । एक एक शरीर में अनन्ते जीव हैं । निगोद का आयुष्य जघन्य और उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त का, चवे और उपने ।

त्रसकाय—जो जीव हाले चाले, छाया से धूप में आवे और धूप से छाया में जावे उसको त्रसकाय

कहते हैं। इसको चार भेद—बेहमित्रिय तेशमित्रिय चर  
 रिमित्रिय पंचेमित्रिय। (१) बेहमित्रिय एक काया दूसरा  
 मुख से दो शमित्रियाँ निकले हों, इसको बेहमित्रिय  
 कहते हैं। जैसे राहू कोड़ी सीप, बट कोड़ा, अथ  
 सिपा कुमि (चुरपीया), आदि देकर १ काज पोनि  
 हैं। बेहमित्रिय की ७ काज कुल कोड़ी हैं। आबुध्व  
 अथवा अन्तमु हूर्त अथवा बारह वर्ष की है। (२)  
 तेशमित्रिय—एक काया दूसरा मुख, तीसरा नाक,  
 यह तीन शमित्रियाँ निकले हों इसको तेशमित्रिय कहते  
 हैं। जैसे—बूँ लीला पांचव नाकव कोड़ा कुमुपा  
 मकोड़ा अनठबूरा आदि देकर १ काज पोनि हैं।  
 तेशमित्रिय की ८ काज कुल कोड़ी हैं। आबुध्व अथवा  
 अन्तमु हूर्त की अथवा गुणपचास दिन की है। (३)  
 चरिमित्रिय—एक काया दूसरा मुख, तीसरी नाक

चौथी आँख, ये चार इन्द्रियाँ जिसके हों उसको चरिन्द्रिय कहिये । जैसे मक्खी, डाँस, मच्छर, ममरा, टोही, पतंगा आदि २ लाख योनि हैं, आयुष्य जघन्य अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट छमास की, चरिन्द्रिय की ६ लाख कुल कोटी हैं । (४) पंचेन्द्रिय—एक काया, दूसरा मुख, तीसरी नाक, चौथी आँख, पाँचवा कान, यह पांच इन्द्रियाँ जिसके हों उसको पंचेन्द्रिय कहिये, जैसे—गाय, भैंस, बैल, हाथी, घोड़ा, मनुष्य आदि देने २६ लाख ( ४ लाख देवता, ४ लाख नारकी, ४ लाख तिर्यञ्च, १४ लाख मनुष्य ) योनि हैं । आयुष्य नारकी जघन्य दस हजार वर्ष की, उत्कृष्ट ३३ सागरोपम की । तिर्यञ्च की ज० अन्तर्मुहूर्त, उत्कृष्ट तीन पत्न्योपम की । देवता की जघन्य दस हजार वर्ष की, उत्कृष्ट ३३ सागरोपम की ।

( ६२ )

वंचेन्द्रिय की ( ११६५०००० ) एक कोड़ वाले घोहर  
 सात कुल कोड़ी हैं । कुल कोड़ी का सुखाद्य इस  
 प्रकार है—आरकी की २५ सात कुल कोड़ी हैं, रेवण्य  
 की २६ सात तिर्थाव वंचेन्द्रिय बलधर की १२॥  
 आत स्वयंवर की १० सात, कोवर की १२ सात,  
 तरपरिधर्प की १० सात मुद्रपरिधर्प की १ सात  
 मनुष्य की १२ सात कुल कोड़ी हैं । कुल कीड़ी किस  
 को कहते हैं ? कुलों के प्रकार (भेद) को कुल कोड़ी  
 कहते हैं । जैसे अमुक प्रकार के रूप-रसादि वाले  
 परमाणुओं से बने हुये हो वह कुल का एक प्रकार,  
 उन्से भिन्न प्रकार के रूप-रसादि वाले परमाणुओं से  
 बने हुये हो वह दूसरी प्रकार । इस तरह अमुक  
 प्रकार के परमाणुओं के विचारक्रम ही कुलों के भेद  
 होते हैं । अर्थात् जैसे एक घांसे (भोजने) में बीछ के

कुल बहुत उपजते हैं येमे दी पंचेन्द्रिय में भी बहुत  
 कुल उपजते हैं उसको कुल कोटो कहते हैं ।

एक मुहूर्त में एक जीव उत्कृष्ट कितने भव करता  
 है—पृथ्वीकाय, अप्काय, तेजकाय, याउकाय, एक  
 मुहूर्त में उत्कृष्ट १२८२४ भव करे । वादर घनस्पति-  
 काय एक मुहूर्त में उत्कृष्ट ३२००० भव करे । सूक्ष्म  
 घनस्पति एक मुहूर्त में उत्कृष्ट ६५५३६ भव करे ।  
 वेहन्द्रिय एक मुहूर्त में उत्कृष्ट ८० भव करे । तेशन्द्रिय  
 एक मुहूर्त में उत्कृष्ट ६० भव करे । चरिन्द्रिय एक  
 मुहूर्त में उत्कृष्ट ४० भव करे । अमन्त्री पंचेन्द्रिय  
 एक मुहूर्त में उत्कृष्ट २४ भव करे । सन्त्री पंचेन्द्रिय  
 एक मुहूर्त में १ भव करे ।

लकाय का अल्पबहुत्व

सब से कम त्रस काय, उससे तेजकाय, असंख्यात



( ६४ )

गुणो, उससे पृथ्वी अथ विशेषणिक ( गुणो से कुल अधिक ) उससे अपरअथ विशेषणिक उससे वायुकाय विशेषणिक उससे अमरगतिअथ अमरगुणो हैं ।

### अकाय का विशेष स्वरूप

( १ ) इन्द्रमावरकाय ( २ ) अमरमावरकाय ( ३ ) सिन्धुमावरकाय ( ४ ) सुमतिमावरकाय ( ५ ) पञ्चवक्त्रमावरकाय और ( ६ ) अंगमकाय ।

( १ ) पृथ्वीअथ अ इन्द्र देवता आश्रित है इसलिये इसे इन्द्रमावरकाय कहते हैं ।

( २ ) अपरअथ का महा देवता आश्रित है इसे अमरमावरकाय कहते हैं ।

( ३ ) तेजअथ अ शिवजी नामक देवता स्वामी है इसलिये इसे सिन्धुमावरकाय कहते हैं ।

( ६५ )

चौथे बोले इन्द्रियः ५—श्रुत इन्द्रिय,  
चक्षुः इन्द्रिय, घ्राणेन्द्रिय, रसना इन्द्रिय,  
स्पर्श इन्द्रिय ।

---

(४) वायुकाय का सुमति नामक देवता मालिक है इसलिये इसे सुमतिधावरकाय कहते हैं ।

(५) वनस्पति काय का प्रजापति मालिक है इसलिये इसे पयावक्षथावरकाय कहते हैं ।

(६) त्रसकाय का जंगमनामा देवता मालिक है इसलिये इसे जगमकाय कहते हैं ।

१ इन्द्रिय किसको कहते हैं ? जीव तीन लोक के पेश्वर्य से सम्पन्न है इसलिये इसे इन्द्र कहते हैं । उस इन्द्र ( जीव ) के चिन्ह को इन्द्रिय कहते हैं, अर्थात् इन्द्रिय से जीव पहचाना जाता है, जैसे स्पर्शन

पाँचवें बोले पर्व ( पर्याप्ति ) छः—आ-  
हारपर्याप्ति, शरीरपर्याप्ति, इन्द्रियपर्याप्ति, सासो-  
सास ( स्वासोच्छ्वास ) पर्याप्ति, माया पर्याप्ति  
( बन्धनपर्याप्ति ), मना पर्याप्ति ।

---

इन्द्रिय से एकेन्द्रिय—बुद्धादि—जीव पहचाने जाते  
हैं । जो इन्द्रिय ( स्पर्श रज्ज्ना ) से वेइन्द्रिय जीव  
कह भादि पहचाने जाते हैं इत्यादि ।

• पर्याप्ति किसको कहते हैं ? आहार वर्गका,  
शरीर वर्गका इन्द्रियवर्गका स्वासोच्छ्वासवर्गका,  
मायावर्गका और मनोवर्गका के परमासुप्तों को  
शरीर, इन्द्रिय आदि रूप में बरिखमाने की शक्ति की  
पूर्वता को पर्व ( पर्याप्ति ) कहते हैं ।

छठे बोले प्राणः १०—श्रुतेन्द्रिय बल-  
प्राण, चक्षुरिन्द्रिय बलप्राण, घ्राणेन्द्रिय बलप्राण,  
रसेन्द्रिय ( रसनेन्द्रिय ) बलप्राण, स्पर्शनेन्द्रिय  
बलप्राण, मनोबलप्राण, वचनबलप्राण, कायबल  
प्राण, सासोसास ( श्वासोच्छ्वास ) बलप्राण,  
आयुष्यबलप्राण ।

सातवें बोले शरीरः ×—उदारिक ( औ-

ॐ प्राण किस को कहते हैं ? जिनके संयोग से  
यह जीव जीवन अवस्था को प्राप्त हो और वियोग  
से मरण अवस्था को प्राप्त हो उनको प्राण कहते हैं ।

× शरीर किस को कहते हैं ? जिसमें प्रति क्षण  
शीर्ण जीर्ण होने का धर्म हो तथा शरीर नाम कर्म के  
उदय से उत्पन्न होता हो उसे शरीर कहते हैं ।

हारिक ), वैक्रिय (वैक्रिय), आहारिक, १ तैजस ( तैजस ), कर्मय ।

---

(१) क्लृप्तिक शरीर किसे कहते हैं ? मनुष्य विर्यम्ब के स्वरूप शरीर को क्लृप्तिक शरीर कहते हैं । तथा हाड मांस कोट्ट, एव जिसमें हो वसको क्लृप्तिक शरीर कहते हैं । इसका स्वभाव गन्ध, सङ्गति विष्णुस ( विचार ) होता है ।

(२) वैक्रिय शरीर किसे कहते हैं ? जिसमें छोटे बड़े अनेक अदि माता प्रकार के रूप बसाने की शक्ति हो वसे वैक्रिय कहते हैं तथा वेध और मारकी के शरीर को वैक्रिय कहते हैं । अथवा जिसमें हाड, मांस कोट्ट, एव नहीं हो तथा मरने के बाद अपूर की तरह बिलर रूप वसको वैक्रिय शरीर कहते हैं ।

(३) आहारिक शरीर किसे कहते हैं ? बड़े

( ६६ )

गुणस्थानवर्ती मुनि के तत्त्वों में कोई शंका होने पर तीर्थकर महाराज या केवली महाराज के निकट जाने के लिये शरीर में से जो एक हाथ का पुतला निकलता है, ( कोई लब्धिधारी मुनिराज अप्रमाद करने ज्ञान भण्डा प्रमाद करने पर ज्ञान विसर्जन हो गया हो और कोई पुरुष आकर प्रश्न पूछे उस वक्त मुनिराज का उपयोग लागे नहीं जब अपने शरीर में से एक हाथ का पुतला निकाले, उस पुतले को जहाँ तीर्थकर महाराज या केवली महाराज हों वहाँ भेजे, वहाँ से तीर्थकर महाराज या केवली महाराज बिहार कर गये हों तब वहाँ पर उस एक हाथ के पुतले में से मुँहे हाथ का पुतला निकले जहाँ पर तीर्थकर महाराज व केवली महाराज हों वहाँ पर जाकर प्रश्न का उत्तर लेकर मुँहे हाथ का

पुष्पा एक हाथ के पुष्पों में प्रवेश करे और एक हाथ का पुष्प मुनिपत्र के शरीर में प्रवेश करे जब मुनिपत्र के शरीर में प्रवेश करे जब मुनिपत्र प्रजनन वृत्त में हों । मुनिपत्र आहारिक की दृष्टि से ( पुष्प निष्पन्न ) वृत्त की आलोचना किने और निष्पन्न और आलोचना करते तो निष्पन्न के आहारिक शरीर करते हैं ।

(४) तैजस शरीर किसे कहते हैं ? महत्त्व किने हुए निष्पन्न को कहते हैं तैजस शरीर कहते हैं ।

(५) अर्धशरीर किसे कहते हैं ? ज्ञान वरणी आदि अर्ध कर्मों के समूह को अर्धशरीर के कहते हैं ।

संघाती जीव के तैजस अर्धशरीर हर वृत्त का ही रहते हैं ।

आठवें घोले जोग (योग) १५—१ सत्य-  
मनोयोग, २ असत्य मनोयोग, ३ मिथ मनो-

१. जोग ( योग ) किसको कहते हैं ? मन वचन  
काया के व्यापार से होने वाला जो आत्मा का परि-  
णाम उसको योग कहते हैं । योग के २ भेद होते  
हैं—१ भावयोग, २ द्रव्ययोग । भावयोग किसको  
कहते हैं ? पुण्ड्रविपाकी शरीर और अगोपांग  
नामकर्म के उदय से मनोवर्गणा वचनवर्गणा काय-  
वर्गणा के अवलम्बन से कर्म नोकर्म को ग्रहण करने  
की जीव की शक्ति विशेष को भावयोग कहते हैं ।  
द्रव्ययोग किसको कहते हैं ? इसी भाव योग के  
निमित्त से आत्मप्रदेश के परिस्पन्द ( चंचल होने )  
को द्रव्ययोग कहते हैं ।



योग, ४ व्यवहार मनोयोग, ५ सत्य भाषा, ६ असत्य भाषा, ७ मित्र भाषा, ८ व्यवहार भाषा  
 ९ औदारिक, १० औदारिक मित्र, ११ वैक्रिय,  
 १२ वैक्रिय मित्र, १३ आहारक, १४ आहार-  
 क मित्र, १५ कर्मण योग ।

नवे दोस्ते उपयोगः १२—पौष ज्ञान,  
 तीन ज्ञान, चार दर्शन । ज्ञान १—मच्छिज्ञान,  
 भुतज्ञान, अवधिज्ञान, मनापर्यायज्ञान, केवस-  
 ज्ञान । अज्ञान २—मति अज्ञान, भुत अज्ञान,  
 विमंगअज्ञान । दर्शन ४—चक्षुदर्शन, अपचक्षुदर्शन,  
 अवधिदर्शन, केवस दर्शन ।

---

९. उपयोग किसको कहते हैं ? सामान्य विशेष  
 रूप से वस्तु वा आवृत्ति उसे उपयोग कहते हैं ।

( ७३ )

दसवें बोले कर्म, ८—१ क्षानावरणीय,  
२ दर्शनावरणीय, ३ वेदनीय, ४ मोहनीय, ५  
आशु, ६ नाम, ७ गोत्र, ८ अन्तराय ।

ग्यारहवें बोले गुणठाणा १४—१ मि-  
थ्यात्वगुणठाण, २ सास्वादानगु०, ३ मिश्रगु०

१. कर्म किसको कहते हैं ? जीव के राग-द्वेषादिक  
परिणामों के निमित्त से कर्मणवर्गणारूप पुद्गल-  
स्कन्ध जीव के साथ बन्ध को प्राप्त होते हैं, उनको  
कर्म कहते हैं ।

२ गुणठाणा किसको कहते हैं ? मोह और  
योग के निमित्त से सम्यग्दर्शन और सम्यक्चरित्र  
रूप आत्मा के गुणों की तारतम्यरूप (हीनाधिकता-  
रूप) अवस्था विशेष को गुणठाणा कहते हैं ।

४ अनिरसिसम्पत्तिगु०, १ देशविरसिभावकगु०,  
 ६ प्रमादीसाधुगु०, ७ अप्रमादीसाधुगु०, ८  
 निपट्टीबाधर गु०, ९ अनिपट्टीबाधर गु०, १०  
 सुखमसम्परायगु०, ११ उपशान्तमोहनीयगु०,  
 १२ स्त्रीमोहनीयगु०, १३ सयोगी केवलीगु०,  
 १४ अयोगी केवलीगु ।

बारहवें बोधे पांच इन्द्रियों के तीस विषय  
 और २४ विकार । भोजेन्द्रिय के ३ विषय—

१ इन्द्रियों के विषय किसे कहते हैं ? किन्को  
 इन्द्रियों कागती हैं उन्हें इन्द्रियों के विषय कहते हैं ।

मरनेपुच्छर-रसीर से ऊपर क्या ? रंग की एडी ।  
 सुखा क्या ? गले का लज्जा । मारी क्या ? इष्टी ।  
 दुःख क्या ? बेरा । ठंडा क्या ? कम की कोह ।

उष्ण क्या ? कालजा । चिकना क्या ? आँख की  
 कीकी । लूसा क्या ? जीभ । इन्द्रियों के २४० विकार  
 होते हैं वे इस प्रकार श्रुतेन्द्रिय के १२ विकार ।  
 १ जीवशब्द, २ अजीवशब्द, ३ मिश्रशब्द, ये ३  
 शुभ और ३ अशुभ । इन ६ ऊपर राग और ६ ऊपर  
 द्वेष इस प्रकार १२ । चक्षुरिन्द्रिय के पाँच विषयों के  
 ६० विकार—५ सचित्त, ५ अचित्त, ५ मिश्र, ये १५  
 शुभ और १५ अशुभ, इन ३० ऊपर राग और ३०  
 ऊपर द्वेष इस प्रकार ६० । घ्राणेन्द्रिय के दो विषयों  
 के १२ विकार—२ सचित्त, २ अचित्त, २ मिश्र, इन  
 ६ ऊपर राग और ६ ऊपर द्वेष इस प्रकार १२ ।  
 रसनेन्द्रिय के पाँचों विषयों के ६० विकार—५  
 सचित्त, ५ अचित्त, ५ मिश्र, १५ शुभ और १५ अशुभ  
 इन ३० ऊपर राग और ३० ऊपर द्वेष, इस प्रकार

१ जीवशब्द, २ अजीवशब्द, ३ मिथशब्द ।  
 पशुइन्द्रिय के ३ विषय—१ काला, २ नीला,  
 ३ लाल, ४ पीला, ५ श्वेत । प्राणोन्द्रिय के २  
 विषय—१ गुरुमिगन्ध, २ दुरुमिगन्ध । रसने-  
 न्द्रिय के ५ विषय—१ तीखा, २ कड़वा, ३  
 कपायसा, ४ स्वादा, ५ मीठा । स्पर्शनेन्द्रिय  
 के ८ विषय—१ तरवरा, २ घुहाहा, ३ मारी  
 ४ हलका, ५ ठण्डा, ६ ठण्ड, ७ सूखा, ८  
 चीकना ।

---

६ । स्पर्शनेन्द्रिय के आठों विषयों के २६ विकार—  
 ८ स्थित ८ अस्थित ८ मिश्र वे १४ गुण और १४  
 अगुण इन ४८ ऊपर राग और ४८ ऊपर द्वेष इष्ट  
 प्रकर्ष २६ । कुल १४० विकार ।

तेरहवें बोले मिथ्यात्व के १० भेद—

१ जीव को अजीव श्रद्धे तो मिथ्यात्व, २ अजीव को जीव श्रद्धे तो०, ३ धर्म को अधर्म श्रद्धे तो० ४ अधर्म को धर्म श्रद्धे तो०, ५ साधु को असाधु श्रद्धे तो०, ६ असाधु को साधु श्रद्धे तो०, ७ संसार के मार्ग को मोक्ष का मार्ग श्रद्धे तो०, ८ मोक्ष के मार्ग को संसार का मार्ग श्रद्धे तो०, ९ आठ कर्मों से मुकाणा ( मुक्त ) को अमुकाणा ( अमुक्त ) श्रद्धे तो०, १० आठकर्मों से अमुकाणा ( अमुक्त )

१. मिथ्यात्व किसको कहते हैं ? कुदेव, कुगुरु, कुधर्म और कुशास्त्र पर श्रद्धान ( विश्वास ) करना, उसको मिथ्यात्व कहते हैं।

को सु काशा ( मुक्त ) बड़े तो मिथ्यात्व ॥

चौदहवें बोले छोटी नवतत्व के ११५ में  
नवतत्वों के नाम—

१ जीवतत्व, २ अजीवतत्व, ३ पुण्यतत्व,

१ जीवतत्व किसे कहते हैं ? जीव चेतनामय  
व्ययोग कण्ठ मुक्त मुक्त का चेतन, चरित्र प्राण  
का चर्चा आठ कर्मों का कर्ता और भोग्य सत्ताका  
राज्यता रहे वरुण पित्रो मही और अमलकता  
मदेरी हो वसन्त जीवतत्व कहते हैं तथा यह जीव  
ज्ञान दर्शन, सुख और पीर इस बार भाव प्रत्यो  
से गद्य काल में जीव, चरित्र काल में जीव है  
और अमलकता काल इन्हीं बार भाव प्रत्यो से जीव  
इस विषय इसको जीव कहते हैं। जीव के मुख दो

४ पोषतत्व, ५ आश्रयतत्व, ६ संवरतत्व,  
 ७ निर्जरातत्व, ८ बन्धतत्व, और ९ मोक्षतत्व ।  
 जीव के १४, अजीव के १४, पुण्य के ६,  
 पाप के १८, आश्रय के २०, संवर के २०,  
 निर्जरा के १२, बन्ध के ४, मोक्ष के ४ ।  
 कुल ११५ भेद ।

### जीव के १४ भेद

सूक्ष्म एकेन्द्रिय के २ भेद-अप्रजापता और प्रजापता  
 वादर एकेन्द्रिय के    "    "    "    "

भेद होते हैं—संसारी और सिद्ध ॥ संसारी जीव  
 किसे कहते हैं ? जो कर्म सहित है उसे संसारी कहते  
 हैं । जो ज्ञानावरणादि आठ कर्म रहित है उसे सिद्ध  
 जीव कहते हैं ।



|                    |                                |  |  |
|--------------------|--------------------------------|--|--|
| वेदन्द्रिय         | के १ मेद-अप्रमापता और प्रमापता |  |  |
| तेन्द्रिय          | के " " "                       |  |  |
| पठरिन्द्रिय        | के " " "                       |  |  |
| असभी पंचन्द्रिय के | " " "                          |  |  |
| सभी पंचेन्द्रिय के | " " "                          |  |  |

अजीव के १४ मेद—

धर्मास्तिकाय के तीन मेद—स्वयं, दश और प्रदेश । आधर्मास्तिकाय के तीन मेद—स्वयं, देश और प्रदेश । अकालास्तिकाय के तीन

१ अजीव किसको कहते हैं ? अजीव—

वेदमर्यादित सुख दुःख को नैव ज्ञी, वर्णसि प्रायु जाग वपराग और अष्ट कर्मों से परिण और अक कपय उदरवहन हो गते अजीव कहते हैं ।

भेद—खंघ, देश और प्रदेश । ये नव और दशवाँ काल । ये दश भेद अरूपी अजीव के जानना । रूपी पृथ्वी के चार भेद—१ खंघ, २ देश, ३ प्रदेश और ४ परमाणुपृथ्वी । ये चौदह भेद अजीव के दृष्ट ।

१पुण्य के ६ भेद

१ अन्नपुण्य—अन्न देने से पुण्य होता है ।

१. पुण्य किसको कहते हैं ? जो आत्मा को पवित्र करे तथा जिसकी प्रकृति शुभ, जो पांथता दोहिला, भोगवता सोहिला, दुखे दुखे बांधे, सुखे सुखे भोगवे, शुभ जोग से बांधे शुभ सज्ज्वल पृथ्वीलों का बांध पादे पुण्य धर्म का सहायक तथा पथ्यरूप है । जिसका फल मीठा हो उसे पुण्य कहते हैं ।



६ नमस्कारपुण्य—नमस्कार करने से पुण्य० ।

उपरोक्त नव प्रकारे पुण्य बांधे और ४२ प्रकारे

भोगवे ।

१ पुण्य कर्म भोगने की ४२ प्रकृति इस प्रकार हैं—आयुष्य कर्म की ३ ( देवायु मनुष्यायु, और तिर्यञ्च का लम्बा युगलिया में आयु ), वेदनीय की एक ( सातावेदनीय ), नाम कर्म की ३७ ( १ मनुष्य गति, २ मनुष्य की आनुपूर्वी, ३ देव गति, ४ देव आनुपूर्वी, ५ पंचेन्द्रिय जाति, ६ औदारिक शरीर, ७ वैक्रिय शरीर, ८ आहारिक शरीर, ९ तैजस शरीर, १० कर्मण शरीर ११ औदारिक का अंगोपांग, १२ वैक्रिय का अंगोपांग १३ आहारिक का अंगोपांग, १४ ब्रह्मचर्यभनाराच-संघयण, समचतुरस संठाण ( समचतुरस्र ), १६

( ८४ )

शुभ वर्ण, १७ शुभ गन्ध १८ शुभ रस, १९ शुभ  
 पद, ( लक्ष्मी ), २० अगुहकपु शुभ, २१ पयपाव  
 नाम २२ वज्रवास शुभ, २३ आचार शुभ, २४  
 वयोव नाम, २५ शुभ विहायोगदि शुभ, २६ निर्माह  
 नाम, २७ तीर्थहर नाम, २८ वस शुभ २९ वाहर  
 नाम ३० पर्वानि शुभ ३१ प्रत्येक नाम ३२ त्विर  
 शुभ ३३ शुभ नाम ३४ सौम्यव शुभ ३५ सुखर  
 शुभ ३६ आरेख ( आरेख ) शुभ ३७ पशु ( कीर्ति )  
 शुभ गोत्रकर्म की १ ( कर्मागोत्र ) शुभ ४९ ।

पाप के १८ मोह

१ प्रत्यातिपात—भीषों की हिंस्र करण ।

१ पाप निवृत्ति कैसे करते हैं ? को आत्म्य को  
 महीन करे तथा को वांछ सोहिदा, योग्यता

- २ मृपावाद—अमत्य झूठ बोलना ।
- ३ अदत्तादान—अणदीधी वस्तु का लेना चोरी
- ४ मैथुन—कुशील का सेवन ।
- ५ परिग्रह—द्रव्य आदि रखना, ममता करना ।
- ६ क्रोध—अपने आप तपना, दूसरे को तपाना और  
क्रोध करना ।
- ७ मान—अहंकार ( घमंड ) करना ।
- ८ माया—कपटाई, ठगाई करना ।
- ९ लोभ—वृष्णा बढ़ाना, मूर्छा ( गृद्धिपणा ) रखना ।

---

दोहिला, अशुभ योग से बंधे, सुखे सुखे, दुखे दुखे  
भोगवे, पाप अशुभ प्रकृति रूप है, जिसका  
फल कड़वा, जो प्राणी को मैला करे उसे पाप कहते  
हैं ।

- १० राग—सोह रसना मीठि करना ।
- ११ वेष—अवगमती वस्तु पर ड़ाव करना ।
- १२ कलह—कसेरा करना ।
- १३ अम्याम्यान—मूठ कर्जक ( असाव ) बगान ।
- १४ पैशुन्य—दूसरे की चुगली करना ।
- १५ परपरिवाद—दूसरे का अवयर्णवाद ( निन्दा )  
बोझना ।
- १६ रतिभरति—पंचों इन्द्रियों के तेईस बिबकों  
में से अवगमती वस्तु पर धराव  
होना ।
- १७ मायामृपावाद—कबड सहित मूठ बेझना,  
कपडार में कपडार करना ।
- १८ मिथ्यादर्शनशून्य—कुरेव, कुगुड पीर  
कुवर्म पर भसा रसना ।

पाप १८ प्रकारेः बांधे और ८२ प्रकारे भोगवे ।

१. पाप कर्म भोगने की ८२ प्रकृति इस प्रकार हैं—ज्ञानावरणीय की ५ ( मतिज्ञानावरणीय १, श्रुतज्ञानावरणीय २, अवधि ज्ञानावरणीय ३, मनः पर्ययज्ञानावरणीय ४, केवल ज्ञानावरणीय ५, दर्शनावरणीय की ६ ( निद्रा १, निद्रानिद्रा २, प्रचला ३, प्रचलाप्रचला ४, थीणद्धी ५, चक्षुदर्शनावरणीय ६, अचक्षुदर्शनावरणीय ७, अवधि दर्शनावरणीय ८, केवल दर्शनावरणीय ९ ), वेदनीय की १, ( असाता वेदनीय ), मोहनीय की २६ ( मिथ्यात्व-मोहनीय, अनन्तानुबन्धी-क्रोध मान माया लोभ । अप्रत्याख्यानावरणीय-क्रोध मान माया लोभ । प्रत्याख्यानावरणीय-क्रोध मान माया लोभ । संवत्सन-



कोष मान माया खोम । नत्र मो कषाय—हारव रति,  
 अरति, शोक मय गुगुम्भा, कीबेर, पुठबेर  
 मनु सक्बेर २६ ), आधुष्य की १ ( धारकी क  
 आधुष्य ) नाम कर्म की ३४ ( नरकगति १, विर्बन  
 गति २, एकेन्द्रियपम ३, वेदन्द्रियपम ४ वेदन्द्रियन  
 ५, चरतिन्द्रियन ६ अयमव्यय संवय ७,  
 नायन संवय ८, अर्द्धनायन संवय ९, कीलिक  
 संवय १ बोरह ( सेवार्त ) संवय ११, म्योव  
 परिमस्त्र संठाव १२, धादीसंठाव १३ नामय  
 संठाव १४ हुडव संठाव १५ हुयव संठाव १६  
 अष्टमवय १७ अष्टमगण १८, अष्टमरस १९,  
 अष्टमकरस २० मरकमुपूर्वी २१ विर्बज्जमुपूर्वी  
 २२ अष्टम चक्रने की गति २३, कपयत मम २४  
 स्वावर मम २५, सुख मम २६ अर्वात्मम २७

आस्रव के २० भेद

## १ मिथ्यात्व—मिथ्यात्व को सेवे से आस्रव ।

साधारण नाम २८, अथिर नाम २९, अशुभ नाम ३०, दुर्भाग्य नाम ३१, दुःस्वर नाम ३२, आनादेय नाम ३३, अयश कीर्ति नाम ३४, गोत्र कर्म की १ ( नीच गोत्र ), अन्तराय कर्म की ५ ( दानान्तराय १, लाभान्तराय २, भोगान्तराय ३, उपभोगान्तराय ४, वीर्यान्तराय ५ ) कुल ८२ ।

उपरोक्त ८२ प्रकार से पाप के अशुभ फल भोगे जाते हैं, इन पापों को जानकर पाप के कारणों को छोड़े तो इस भव में और पर भव में निराबाध परम सुख को पावे ।

१. आस्रव किसे कहते हैं ? जिसके द्वारा आत्मा

- २ अजठ-पञ्चकत्वाद्य नहीं करे सो आसूय ।  
 ३ प्रमाद-पाँच प्रमाद सेवे सो , , ।  
 ४ कषाय-पचीस कषाय सेवे सो , , ।  
 ५ अगुमजोग-अगुमजोग प्रवर्त्तने सो आसूय

में कर्म आये तथा जीवस्वीया ताश्चाद्य कर्म स्वीया  
 पानी पाँच आम्बवह्निरूप आका ( मिच्छात्वा अजठ  
 प्रमाद कषाय अगुम जोग ) कटी मरे बड़को  
 आम्बवह्निरूप कहते हैं । इसके सामान्य प्रकार से  
 बड़ोफ १ भेद करे हैं और विरोध प्रकार से इसके  
 ४२ और २७ भेद भी होते हैं । बीते—२ इन्द्रिय के  
 विषय ४ कषाय ३ अगुम जोग, २२ क्रियाएँ, २  
 अजठ से ४२ भेद हुये । २७ भेद इस प्रकार—२  
 मिच्छात्वा १२ अजठ २२ कषाय, १२ जोग ।



१६ मण्ड उपगच्छ अथयथा से सेवे और  
अथयथा से रखे सो आसन्न ।

२० सर्व इत्यम् मात्र अथयथा से सेवे और  
अथयथा से रखे सो आसन्न ।

संवर, तत्त्व के २० भेद

१ समकृत संवर । २ मत्त पञ्चस्तोत्रकर  
सो संवर । ३ प्रमाद नहीं करे सो संवर । ४  
कषाय नहीं करे सो संवर । ५ दृढ योग प्रव

१ संवर किसको कहते हैं ? आकाश को रोके  
किसको संवर कहते हैं तथा जीवरूपीया वायु,   
कर्मरूपीया पानी आसन्नरूप नाभ्य, संवर रूपी पाक  
करके आते हुए कर्मों को रोके किसको संवर तब  
कहते हैं । इसके सामान्य अन्तर से २० भेद करे हैं

तर्बे सो संवर । ६ प्राणातिपात-जीव<sup>१</sup> की  
 हिसा नहीं करे सो संवर । ७ मृपावाद झूठ<sup>२</sup>  
 नहीं बोले सो संवर । ८ अदत्तादान-चोरी नहीं  
 करे सो संवर । ९ मैथुन-कुशील<sup>३</sup> नहीं सेवे सो  
 संवर । १० परिग्रह-प्रमत्ता नहीं राखे सो संवर  
 ११ श्रुतेन्द्रिय वश करे सो संवर । १२ चक्षु-  
 रिन्द्रिय वश करे सो संवर । १३ घ्राणेन्द्रिय वश  
 करे सो संवर । १४ रसेन्द्रिय वश करे सो  
 संवर । १५ स्पर्शेन्द्रिय वश करे सो संवर ।

और बिरोध प्रकार से ५७ भेद होते हैं—५ समिति,  
 ३ गुप्ति, २२ परीषद्, १० अतिधर्म, १२ भावना, ५  
 चारित्र, ये ५७ हुये ।

१ जीवदया पाले । २. सत्य बोले । ३. ब्रह्मचर्य पाले ।

१६ मन बश करे सो संबर । १७ वपन बश  
करे सो संबर । १८ कम्पावश करे सो संबर ।  
१९ मण्ड उपगम्य अयथासे सेवे अयथासे  
सुके (रस्ते) सो संबर । २० सुई कुसंग मात्र  
अयथासे सेवे और रस्ते सो संबर ।

निर्बरा १ के १२ भेद

१ अनशन, २ ऊखोदरी, ३ निषाचर्या,  
४ रसपरिस्त्राग, ५ कषयाकसेय, ६ पडिसंसी-  
याया, ७ प्रायश्चित्त ८ विनय, ९ वैषाख  
( वैषाखस्य ), १० स्वाध्याय, ११ ध्यान,  
१२ विठसंग ( व्युत्सर्ग ) अर्थात् काठसंग ।

---

१ निर्बरा तथा किसी कहते हैं । आत्मा से  
कर्मकर्मा का एक बेरात दूर होना तथा जीवरूपो

कपड़ा, कर्मरूपी मैल, ज्ञानरूपी पानी, तप संयम रूपी साजी साधुन, उसमे धोय के मैल को निकाले उसको निर्जरातत्व कहते हैं ।

अनशन—चार प्रकार के या तीन प्रकार के आहार का त्याग करना । २ ऊणोदरी (अन्नमौदर्य)—भोजन की अविक रुचि होने पर भी कम भोजन करना । ३ भिक्षाघर्या—शुद्ध आहार आदि का लेना । ४ रम परित्याग—विगयादिक का त्याग करना । ५ कायक्लेश—वीर आसन आदि करना । ६ पण्डिसंलीणया ( प्रति संलीनता ) एकान्त शयनासन करना । ७ प्रायश्चित्त—जो आलोचना के योग्य हो उसकी आलोचना करके आत्मा को शुद्ध करना । ८ विनय—गुरु आदि का भक्ति भाव से अभ्युत्थानादि-द्वारा आदर सत्कार करना । ९—वैयावद्य (वैयावृत्य)



बन्ध, के ४ भेद

१ प्रकृतिबंध—आठ कर्म का स्वभाव । २ स्थितिबंध—आठ कर्म की स्थिति (काल) का मान प्रमाण । ३ अनुमागबंध—आठ कर्म का तीस्र भेदादि रस । ४ प्रदेशबंध—कर्म पुद्गलों के रस का आत्मा के साथ रचना ।

---

आचार्यादि की दश प्रकार से सेवा करण । १० अश्वत्थ ( स्वाश्वत्थ ) शाल की बाधना पुच्छद्वय आदि करना । ११ अश्वत्थ ( अश्वत्थ ) अश्व को रक्षण करना । १२ विजयग ( अश्वत्थ ) काश के अश्वत्थ का रक्षण करना ।

१ अश्वत्थ किसे कहते हैं ? अश्वत्थ का नाम होकर कर्म पुद्गलों को रक्षण करे तथा आत्मा के

प्रदेश और कर्म के पुद्गल एक साथ मिले जैसे  
 गीर नीर की तरह व लोहे पिठ ( गोला ) अग्नि के  
 माफिक लोलीभूत होकर बन्धे उसको बन्ध पड़ते हैं ।  
 जैसे दृष्टान्त—जीव आठ कर्म से बंधा हुआ है,  
 जीव और कर्म एकाग्र है, जैसे दूध और पानी एकाग्र  
 है, हमराज पत्तो की चोंच खाटी है, दूध में पड़ते  
 दूध पृथक् कर दे, पानी न्यारा कर दे, उम माफिक  
 जीव रूप इसराज ज्ञान रुपी चोंच द्वारा जीव जुदा  
 कर दे कर्म जुदा कर दे । इन चार प्रकार के बन्ध  
 का स्वरूप मोदक के दृष्टान्त से जानना । जैसे—१  
 कोई मोदक बहुत प्रकार के द्रव्य के संयोग से उत्पन्न  
 हुआ, वायु, पित्त, कफ को जिस स्वरूप करके हणो,  
 उसको स्वभाव कहिये । २. वोही लाडू पच, मास  
 दो मास तक उसी स्वरूप में रहे उसको स्थितियन्ध



सम्यग्ज्ञान, २ सम्यग्दर्शन, ३ सम्यग्चारित्र  
और सम्यग् तप ।

पंद्रहवें बोले आत्माः आठ—१ द्रव्य  
आत्मा, २ कषाय आत्मा, ३ योग आत्मा,  
४ उपयोग आत्मा, ५ ज्ञान आत्मा, ६ दर्शन  
आत्मा, ७ चारित्र आत्मा, ८ वीर्य आत्मा ।

सोलहवें बोले दण्डकः चौबीस—सात

के प्रदेशों से सब कर्मों का क्षय होना, बन्धन से  
छूटना, उसको मोक्ष कहते हैं ।

१. आत्मा किसको कहते हैं ? जो ज्ञानादि  
पर्यायों में निरन्तर गमन करे उसको आत्मा कहते हैं ।

२ दण्डक किसको कहते हैं ? जीवादि के स्वरूप  
को समझाने वाली वाक्यपद्धति ( वाक्यरचना )  
को दण्डक कहते हैं ।



देवता का एक दण्डक । वैमानिक देवता का एक दण्डक । एवं २४ दण्डक ।

सत्रहवें बोले लेश्याः ६—१ कृष्ण लेश्या, २ नील लेश्या, ३ कापोत लेश्या, ४ तेजो लेश्या, ५ पद्म लेश्या, ६ शुक्ल लेश्या ।

---

१. लेश्या किसको कहते हैं ? जिसके द्वारा आत्मा कर्मों से लिप्त होता है तथा योग और कषाय की तरंग से उत्पन्न होती हो तथा मन के शुभाशुभ परिणाम को लेश्या कहते हैं अर्थात् परमार्थ से लेश्या कषाय स्वरूप ही है ।

छः लेश्या के लक्षण—आम्र वृक्ष को फला हुआ देखकर छः पुरुषों को उसके फल खाने की इच्छा हुई, इसमें जो पहला कृष्ण लेश्यावाला था उसको



अतिरौद्रः सदा क्रोधी, मत्सरी धर्मवर्जितः ।

निर्दयो वैरसयुक्तः कृष्णलेश्याधिको नरः ॥१॥

नीललेश्यावन्त के लक्षण—

अलसो मन्दबुद्धिश्च, स्त्रीलुब्धः परवचकः ।

कातरश्च सदा मानी, नीललेश्याधिको नरः ॥२॥

कापोत लेश्यावन्त के लक्षण—

शोकाकुलः सदा रुष्टः परनिन्दात्मशंसकः ।

सग्रामे प्रार्थते मृत्युं, कापोतक सदाहृतः ॥३॥

तेजो लेश्यावन्त के लक्षण—

विद्यावान् करुणायुक्तः, कार्याकार्यविचारकः ।

लाभालाभे सदा प्रीतिस्तेजोलेश्याधिको नरः ॥४॥

पद्मलेश्यावन्त के लक्षण—

क्षमाशीलः सदा त्यागी, गुरुदेवेषु भक्तिमान् ।

शुद्धचित्तः सदानन्दी, पद्मलेश्याधिको नरः ॥५॥



अठाहरवें बोसे दृष्टि तीन—१ सम्यग्दृष्टि,  
२ मिथ्यादृष्टि, ३ सम्यग्मिथ्यादृष्टि(मिथ्यादृष्टि) ।

उन्नीसवें बोसे ध्यान १ चार—१ आर्षध्यान  
२ रौद्रध्यान, ३ धर्मध्यान, ४ शुक्लध्यान ।

शुक्लशेखरपावन्त के अक्षर—

एगद्वेषनित्रिस्तु तः, शोकनिन्वाविबर्जितः ।

परमात्मवासनम्, शुक्लशेखरो यथेतरः ॥ ६ ॥

१ दृष्टि किस को कहते हैं ? अन्तःकरण की प्रवृत्ति को अर्थात् मन के अभिप्राय को दृष्टि कहते हैं ।

२ ध्यान किसको कहते हैं ? एक वस्तु पर मन को स्थिर करना उसको ध्यान कहते हैं । वह (ध्यान) ब्रह्मत्त्वों के अन्तर्मुख में मात्र रहता है । वह चार प्रकार का होता है—

बीसवें बोले पट् द्रव्य के ३० भेद, द्रव्य छः उनके नाम—१ धर्मास्तिकाय, २ अधर्मास्तिकाय, ३ आकाशास्तिकाय, ४ कालद्रव्य, ५ जीवास्तिकाय, ६ पुद्गलास्तिकाय ।

आर्त्तध्यान—अनिष्ट वस्तु का वियोग और दृष्ट वस्तु का संयोग चिन्तवना ।

रौद्रध्यान—हिसादि दुष्ट आचरणों को चिन्तवना

धर्मध्यान—निर्जरा के लिए शुभ आचरणादि को चिन्तवना, तथा संसार की असारता चिन्तवना ।

शुक्लध्यान—संसार, पुद्गल, कर्म और जीवादि के स्वरूप स्वभाव का विशुद्ध रीति से चिन्तवना ।

१. द्रव्य किसको कहते हैं ? जिसमें गुण हैं व पर्याय उत्पन्न हों, ठहरे और नष्ट होती हैं उसको द्रव्य कहते हैं ।

अठारवें श्लोक दृष्टिः तीन—१ सम्पगृह्यति,  
२ मिथ्यादृष्टि, ३ सम्पगृमिथ्यादृष्टि (मिथ्यादृष्टि) ।

उन्नीसवें श्लोक ध्यानः चार—१ आर्चध्यान  
२ शौचध्यान, ३ धर्मध्यान, ४ शुक्लध्यान ।

शुक्लक्षेत्रभावन्त के अर्थ—

यगद्दोषविनिर्मुक्तं, शोकमिन्द्रादिचर्मितं ।

परमात्मसाक्षात्पन्नं, शुक्लक्षेत्रमो मवेक्षतः ॥ ६ ॥

१ दृष्टि किस को कहते हैं ? अन्तःकरण की प्रवृत्ति को अर्थात् मन के अभिप्राय को दृष्टि कहते हैं ।

२ ध्यान किसको कहते हैं ? एक वस्तु पर मन को स्थिर करना उसको ध्यान कहते हैं । वह (ध्यान) ज्ञानियों के अन्तर्गुह्य ही मात्र रहता है । वह चार प्रकार का होता है—

( ३१४ )

बीसवें बोले पद द्रव्य १ ६ ३ ३

छः उनके नाम—१ धर्मास्तिकाय,

स्तिकाय, ३ आकाशास्तिकाय,

५ जीवाम्तिकाय, ६ पुद्गलास्तिकाय

आर्त्तध्यान—अनिष्ट वस्तु का चिन्तन।  
वस्तु का संयोग चिन्तन।

रौद्रध्यान—हिंसादि दुष्ट आचरणों को चिन्तन।

वर्मध्यान—निर्जरा के लिए शुभ आचरणों का  
चिन्तन, तथा संसार की अम्लारस चिन्तन।

शुक्लध्यान—संसार, पुद्गल, अर्थ और जीवों के  
स्वरूप स्वभाव का विशुद्ध रीति से चिन्तन।

१. द्रव्य किसको कहते हैं ? जिसमें गुण हैं  
पर्याय उत्पन्न हों, ठहरे और नष्ट होना  
द्रव्य कहते हैं।

अपमर्शस्त्रिकाय का पाँच शोको से ज्ञानम् ।

१ द्रव्य बन्धी—एक द्रव्य, २ क्षेत्र बन्धी—साठ शोक प्रमाणों, ३ काल बन्धी—आदिअन्तरहित, ४ भाव बन्धी—बर्ण नहीं गन्ध नहीं, रस नहीं, स्पर्श नहीं, अहंसी, अमीष, शयनवत्, सर्वभ्यापी और अहं कथित प्रदशी है । ५ गुण बन्धी—वक्त्रण, गुण, पानी में मच्छली का दृष्टान्त जैसे पानी के आधार (सहायक) से मच्छली चले, इसी तरह जीव भीर पुद्गल दोनों अपमर्शस्त्रिकाय के आधार (सहायक) से चले ।

अपमर्शस्त्रिकाय का पाँच शोको से ज्ञानम् ।

१ द्रव्य बन्धी—एक द्रव्य, २ क्षेत्र बन्धी—साठ शोक प्रमाणों ३ काल बन्धी—आदि अन्तरहित ४ भाव बन्धी—बर्ण नहीं गन्ध नहीं, रस नहीं, स्पर्श नहीं, अहंसी, अमीष, शयनवत्, सर्वभ्यापी

( १८७ )

और असख्यात प्रदेश हैं । ५ गुण थी—स्थिर गुण, थके पन्यी ने छाया का दृष्टान्त, जैसे थका पन्यी ने छाया को आधार ( सहायता ) उसी माफिक ठहरे हुए जीव और पुद्गल के ठहरने में अधर्मास्तिकाय का आधार ( सहायता ) ।

आकाशास्तिकाय का पाच बोलों से जानना

१. द्रव्य थी—एक द्रव्य, २ क्षेत्र थी—लोकालोक प्रमाणे, ३ काल थी—आदि अन्तरहित, ४ भाव थी—वर्ण नहीं, गन्ध नहीं, रस नहीं, स्पर्श नहीं, अरूपी, अजीव, शाश्वत, सर्वव्यापी और अनन्त प्रदेशी हैं । ५ गुण थी—पोलाड़ गुण जगह देने का गुण । आकाश में विकास भीत में कीली का दृष्टांत, दूध में घटासा को दृष्टांत ।

काल द्रव्य को पाच बोलों से जाने ।

१ द्रव्य बन्धी—अनन्त द्रव्यों पर प्रबर्ते २ क्षेत्र  
 बन्धी—अर्थात् क्षेत्र प्रमाणात्, ३ काव्य बन्धी—आदि—  
 अनन्तरहित ४ भाव बन्धी—बर्ण्य नहीं, गन्ध नहीं रस  
 नहीं स्पर्श नहीं अस्पर्श, शारवत और अपरेणी है ।  
 ५ गुण बन्धी—वर्तन गुण सबाने पुराण करे, पुराण  
 को लपाने कपदे को केंचीक दृष्टांत ।

बीजवस्तुकाय का पांच बोझों से व्यापना,

१ द्रव्य बन्धी—अनन्त जोव द्रव्य, २ क्षेत्र बन्धी—  
 क्षेत्र लोक प्रमाणात् ३ काव्य बन्धी—आदिअनन्तरहित  
 ४ भाव बन्धी—बर्ण्य नहीं, गन्ध नहीं रस नहीं  
 स्पर्श नहीं ।

अस्पर्श शारवत, सर्वव्यापी और असन्त प्रदेरी  
 है एक बीज आसरी असंशयत प्रदेरी है । ५ गुण  
 बन्धी—वपयोग गुण, चन्द्रमाभी कथ्यक दृष्टांत ।

( १०६ )

इकीसवें बोले राशि दो—जीवराशि<sup>१</sup>,  
अजीव राशि । जीवराशि<sup>२</sup> के ५६३ और

---

पुद्गलास्तिकाय को पाच बोलों से जानना

१ द्रव्य थी—अनन्ताद्रव्य, २ क्षेत्र थी—  
सारा लोक प्रमाणे, ३ काल थी—आदिअन्तरहित,  
४ भाव थी—रूपी, वर्ण है, गन्ध है, रस है, स्पर्श  
है, अजीव शाश्वत और अनन्त प्रदेशी है । ५ गुण  
थी—पूरण गलन, सङ्गन, विध्वंसन, गुण, वादल  
का दृष्टात जैसे मिले और बिखरे ।

१. राशि किसको कहते हैं ? वस्तु के समूह को  
राशि कहते हैं ।

२. संसारी जीव के ५६३ भेद इस प्रकार—  
नारकी के १४ भेद । तिर्यक् के ४८ भेद । मनुष्य के



अग्नीवराणि के ५६० भेद होते हैं ।

१०३ भेद । देवता के ११८ भेद । यह पांच सौ ब्रह्मभेद भेद हुये ।

१. अग्नीवराणि के २१ भेद, जिसमें अग्नीव अरूपी के १० और अग्नीव रूपी के ११ । यह कुल २१० भेद ।

अग्नीव अरूपी के १० भेद इस प्रकार—धर्मास्तिष्काय के तीन भेद—लंब ( सम्पूर्ण वस्तु ) देश ( दो-तीन आदि भाग ), प्रदेश ( जिसका दूसरा भाग खी हो सके ) ये तीन । अधर्मास्तिष्काय के तीन भेद—लंब, देश, प्रदेश । अकारणास्तिष्काय के ३ भेद—लंब देश, प्रदेश, अकारण इत्येव ये १० भेद = १० । धर्मास्तिष्काय के ३ भेद—१ इत्येव १ क्षेत्र,

( १११ )

३ काल, ४ भाव, ५ गुण । अधर्मास्तिकाय के पाच भेद—१ द्रव्य, २ क्षेत्र, ३ काल, ४ भाव, ५ गुण ।  
 आकाशास्तिकाय - के ५ भेद—१ द्रव्य, २ क्षेत्र, ३ काल, ४ भाव, ५ गुण । काल द्रव्य के पाच भेद—  
 १ द्रव्य, २ क्षेत्र, ३ काल, ४ भाव, ५ गुण । कुल १० भेद ।

अजीव रूपी के ५३० भेद इस प्रकार—

१०० सठाण ५—परिमहल, वट्ट, तंम, चवरंस, आयत । एक एक के भेद  $२० \times ५ = १००$

१०० वर्ण ५—काला, नीला, राक, पीला, घोला । एक एक के भेद  $२० \times ५ = १००$

१०० रस ५—तीखो, कड़वा, कपायला, खटा, मीठा । एक एक के भेद  $२० \times ५ = १००$

४६ गन्ध २—सुगन्ध, दुर्गन्ध । एक एक के

वर्षसर्वे बोले भावकजी के पारह बूट।

१ पहले बूट में भावकजी प्रसन्न होकर  
 का त्याग करे ( इच्छा प्रसन्न होकर बिना  
 अपराधे मारे नहीं ) और त्याग की मर्यादा  
 करे ।

२ दूसरे बूट में भावकजी मोटक मूठ नहीं  
 बोले ।

मेर २३ × ५ = ११५ ।

११५ स्वर्ग ८—करदण, सु हावा, मारी, इत्यादि  
 रीति बच्चों कीकथा सुना । एक एक के मेर  
 २३ × ८ = १८४ । कुल २३० मेर ।

१ प्रत्येक किस्म के कहते हैं ? मर्यादा में प्रसन्न  
 बसको कहते हैं ।

( ११३ )

३ तीसरे व्रत में श्रावकजी मोटकी चोरी नहीं करते ।

४ चौथे व्रत में श्रावकजी परस्त्रीसेवन का त्याग करे और अपनी स्त्री की मर्यादा करे ।

५ पांचवें व्रत में श्रावकजी परिग्रह की मर्यादा करे ।

६ छठे व्रत में श्रावकजी छः ( पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण, ऊँची, नीची ) दिशा की मर्यादा करे ।

७ सातवें व्रत में श्रावकजी छब्बीस बोल की मर्यादा करे और पन्द्रह कर्मादान का त्याग करे ।

८ आठवें व्रत में श्रावकजी अनर्थ दण्ड का

त्याग करे ।

६ नौवें वृत्त में भावकभी प्रतिदिन शुद्ध सामायिक करे ( सामायिक का नियम रखे ) ।

१० दशवें वृत्त में भावकभी देसावगाधिक पोषो करे, संवर करे, चौदह नियम भित्तरे ।

११ ग्यारहवें वृत्त में भावकभी प्रतिपूर्व पोषक करे ।

१२ बारहवें वृत्त में भावकभी प्रतिदिन चौदह प्रकारे धन दान देवे ।

तेईसवें वीस साधुभी के पाँच महाभूत<sup>१</sup>

१ महाभूत किसे कहते हैं ? सर्व विद्यति अर्थात् सम्पूर्ण रीति से हिंस्र, असत्य जोरी कुलीन और परित्यक्त का त्याग करना ।

१ पहिले महावृत में साधुजी महाराज सर्वथा प्रकारे जीव की हिंसा करे नहीं, करावे नहीं, करताने भला जाणे नहीं, मन, वचन, काया करी, तीन करण तीन जोग से ।

२ दूसरे महावृत में साधुजी महाराज सर्वथा प्रकारे झूठ बोले नहीं, बोलावे नहीं, बोलताने भला जाणे नहीं, मन, वचन, काया करी, तीन करण तीन जोग से ।

३ तीसरे महावृत में साधुजी महाराज सर्वथा प्रकारे चोरी करे नहीं, करावे नहीं, करताने भला जाणे नहीं, मन, वचन, काया करी, तीन करण तीन जोग से ।

४ चौथे महावृत में साधुजी महाराज सर्वथा

उरे मैथुन सेवे नहीं, सेवाने नहीं, सेवताने मस्ता आखे नहीं, मन, बचन, काया करी, तीन करण तीन भोग से ।

५ पाँचवें महाप्रव में साधु जी महाराज सर्वथा प्रकारे परिग्रह राखे नहीं, रखावे नहीं, राखताने मस्ता आखे नहीं, मन, बचन, काया करी, तीन करण तीन भोग से ।

धौबीसवें बोले भाषा ४६ को खान पखा —

११ अंक एक ग्यारह को—भाषा उपमे नव, एक करख एक भोग से करखा—१ फकू नहीं मनसा, २ फकू नहीं बयसा, ३ फकू नहीं

---

१ भंग किसको करते हैं ? किम्वता हय रचन को भंग करते हैं ।

( ११७ )

कायसा, ४ कराऊँ नहीं मनसा, ५ कराऊँ नहीं  
वयसा, ६ कराऊँ नहीं कायसा, ७ अणुमोदूँ  
नहीं मनसा, ८ अणुमोदूँ नहीं वयसा, - ९  
अणुमोदूँ नहीं कायसा ।

१२ अंक एक बारह को—भांगा उपजे  
नव, एक करण दो जोग से कहणा, १ करूँ  
नहीं मनसा, वयसा, २ करूँ नहीं मनसा,  
कायसा, ३ करूँ नहीं वयसा, कायसा, ४ कराऊँ  
नहीं मनसा, वायसा, ५ कराऊँ नहीं मनसा,  
कायसा, ६ कराऊँ नहीं वयसा, कायसा, ७  
अणुमोदूँ नहीं मनसा, वयसा, ८ अणुमोदूँ  
नहीं मनसा, कायसा, ९ अणुमोदूँ नहीं वयसा,  
कायसा ।



( ११८ )

१३ अंक एक तेरह को—माँमा उपमे तीन,  
एक करण तीन योग से कहाँ, १ करूँ नहीं  
मनसा बयसा, कायसा, २ कराऊँ नहीं मनसा,  
बयसा, कायसा, ३ अणुमोहूँ नहीं मनसा,  
बयसा, कायसा ।

२१ अंक एक २१ को—भाँमा उपमे नव  
दो करण एक योग से कहाँ—१ करूँ  
नहीं, कराऊँ नहीं मनसा, २ करूँ नहीं कराऊँ  
नहीं बयसा, ३ करूँ नहीं कराऊँ नहीं कायसा,  
४ करूँ नहीं, अणुमोहूँ नहीं मनसा, ५ करूँ  
नहीं, अणुमोहूँ नहीं बयसा, ६ करूँ नहीं, अणु-  
मोहूँ नहीं कायसा, ७ कराऊँ नहीं अणुमोहूँ  
नहीं मनसा ८ कराऊँ नहीं, अणुमोहूँ नहीं

( ११६ )

वयसा, ६ कराऊँ नहीं अणुमोदूँ नहीं कायसा ।

२२ अंक एक चाईस को—भांगा उपजे नव,  
 दो करण दो जोग से कहना—१ करूँ नहीं  
 कराऊँ नहीं मनसा वयसा, २ करूँ नहीं  
 कराऊँ नहीं मनसा कायसा, ३ करूँ नहीं  
 कराऊँ नहीं वयसा कायसा, ४ करूँ नहीं  
 अणुमोदूँ नहीं मनसा वयसा, ५ करूँ नहीं  
 अणुमोदूँ नहीं मनसा कायसा, ६ करूँ नहीं  
 अणुमोदूँ नहीं वयसा कायसा, ७ कराऊँ नहीं  
 अणुमोदूँ नहीं मनसा वयसा, ८ कराऊँ नहीं  
 अणुमोदूँ नहीं मनसा कायसा, ९ कराऊँ नहीं  
 अणुमोदूँ नहीं वयसा कायसा ।

२३ अंक एक तेईस को—भागा उपजे

, दो करण तीन बोग से करवा—१  
 करूँ नहीं कराऊँ नहीं मनसा बयसा कायसा,  
 २ करूँ नहीं अयुमोद् नहीं मनसा बयसा  
 कायसा, ३ कराऊँ नहीं अयुमोद् नहीं मनसा  
 बयसा कायसा ।

३१ अंक एक एकतीस को—मांगा उपमे  
 तीन, तीन करण एक बोग से करवा—१  
 करूँ नहीं कराऊँ नहीं अयुमोद् नहीं  
 मनसा, २ करूँ नहीं कराऊँ नहीं अयुमोद्  
 नहीं बयसा, ३ करूँ नहीं कराऊँ नहीं  
 अयुमोद् नहीं कायसा ।

३२ अंक एक बत्तीस को—मांगा उपमे  
 तीन, तीन करण दो बोग से करवा—१

( १२१ )

करूं नहीं कराऊं नहीं अणुमोदूं नहीं  
मनसा वयसा, २ करूं नहीं कराऊं नहीं अणु-  
मोदूं नहीं मनसा कायसा, ३ करूं नहीं कराऊं-  
नहीं अणुमोदूं नहीं वयसा कायसा ।

३३ अंक एक तेन्नीस को—भांगा उपजे  
एक, तीन करण, तीन जोग से कहणा—१  
करूं नहीं कराऊं नहीं अणुमोदूं नहीं मनसा  
वयसा कायसा ।

| आक        | ११ | १२ | १३ | २१ | २२ | २३ | ३१ | ३२ | ३३ |
|-----------|----|----|----|----|----|----|----|----|----|
| भागा      | ६  | ६  | ३  | ६  | ६  | ५  | ३  | ३  | १  |
| करण       | १  | १  | १  | २  | २  | २  | ३  | ३  | ३  |
| जोग       | १  | २  | ३  | १  | २  | ३  | १  | २  | ३  |
| सर्व भागा | ६  | १८ | २१ | ३० | ३६ | ४२ | ४५ | ४८ | ४६ |

बीसवें बोले चारित्र<sup>१</sup> वाच—१ सामायिक चारित्र, २ छेदोपस्थानिक चारित्र, ३ परिहार विरुद्ध चारित्र, ४ सूचमसंपराय चारित्र, ५ यथाकृपण चारित्र ।

॥ इति ॥

**अन्तिम मांगलिक श्लोक—**

मङ्गलं भयवान् बीरो मङ्गलं गौतमः प्रभुः ।  
मङ्गलं स्पृष्टिमद्रादिः नैनर्पमस्तु मङ्गलम् ॥१॥

१ चारित्र किसको कहते हैं ? चारित्र मोहमीच क बच ना प्रयोचराम से उत्पन्न होते हुए विरक्ति-परिहृत्य को तथा संनम अनुष्ठान को तथा को न कर्मों को करे ( भरा करे ) इसको चारित्र कहते हैं ।

# अध्यात्म-गुण-माला

## मनुष्य कौन ?

(१) अग्नि का स्वभाव गरम और बरफ का स्वभाव शीतल स्वाभाविक है किन्तु अग्नि में गरमी न हो और बरफ में शीतलता न हो तो वह अग्नि और वह बरफ नहीं, इसी तरह जिसमें यह चार गुण नहीं वह मनुष्य नहीं ।

(१) स्वाभाविक भद्रिकता (२) स्वाभाविक विनय (३) दयालुता (४) अमात्सर्य (अद्वेष) गुणा-  
नुराग ।

(२) भद्रिक-वक्रता कपट करता नहीं ।

(३) विनीत—महर्षि करता नहीं ।

(४) दयालु—हिंसा ( किसी को कष्ट देता ) करता नहीं ।

(५) गुह्यानुगामी—शेष करता नहीं ।

(६) जैसे बरफ में शीतलता है और अग्नि में दृढता है वैसे मनुष्य के ऊपर के चार गुण होते हैं ।

(७) चार गुण से विपरीत चार बुरे मनुष्यत्व पदित है ।

(८) चार गुणों से विपरीत चार भाव में धारकी और तिर्षेण्य बड़ा है क्योंकि निबन्ध से वह शीघ्र मरक या तिर्षेण में आयेगा ।

(९) उपरोक्त गुण रहित इन्द्रिय से—आहृति में मनुष्य है किन्तु भाव में धारकी और बहुरूप बोधन बिना रहा है ।

( १२५ )

(१०) चार गुणसे विपरीत दशा तीन काल में मनुष्यता में नहीं हो सकती । उपरोक्त पूर्णतया जिसमें गुण हों वही मनुष्य है ।

(११) बड़ा जहाज बनाने पर भी, एक छेद रह जाय तो वह तिर नहीं सकता, इसी प्रकार मनुष्यता के पूर्ण गुण बिना मनुष्य नहीं बनता ।

## दस बोल

(१) मानव भव-मिलना बहुत कठिन है, अनन्त तिर्यञ्च के भव, असंख्य नारकी के भव, असंख्य देव के भव करने पर एक मनुष्य देह प्राप्त हुआ है इसीलिए प्रभु फरमाते हैं कि अनन्त भव भ्रमण रूप ससार समुद्र उलघन करके मनुष्य भव रूप किनारे आकर गाफल मत रह । हे गौतम ! तुम्हारी जहाज किनारे पर आ गई है, बाहर निकलो, समय



( १२१ )

गात्र का प्रमाद मत करो । प्रकृति में (१) यद्विच्छा (२) विनय (३) इच्छुच्छा और (४) अमाश्रय ( अर्हमात्र रहित ) ये ४ गुण होने से मनुष्य भव मित्र सकता है ।

(२) अर्थ क्षेत्र—अर्थ—ज्ञान पात्र, रहम खनन बन्ध, पात्र मध्यम रीति रिवाज बर्मे कर्म अर्थि की तीव्र अनुमोदना से अर्थ पर ( उत्तम आचार विचार ) मित्र सकता है ।

(३) इच्छा कुल—आठ मर रहित—गुणगुण-गता सुशिक्षा और सदाचार की आपधना से मित्र सकता है ।

(४) पूर्ण इन्द्रिय—पौष्ट इन्द्रिय पर ३ कोटि से संयम रखने से प्राप्त हो सकती है ।

(५) तीरोगता—अनंत प्रायः, धृष्ट, जीव सत्त्व,

( १२७ )

को मन वचन और काया से सर्वथा प्रकारे साता पहुँचाने से प्राप्त होता है ।

(६) दीर्घायु—अनंत जीवों को नौ कोटि से अभय दान देने से प्राप्त होता है ।

(७) सद्गुरु—गुरु पधारने की धर्माई में राज्य मुकुट सिवाय दूसरी महान् संपत्ति दे देने से तथा अनन्त जीवों को गुरु समागम कराने की दलाली करने से प्राप्त होते हैं ।

(८) शास्त्र श्रवण—अनंत जीवों को शास्त्र सुनाने से ज्ञान दान के साधनों में उत्कृष्ट दान देने से तन मन धन से ६ कोटि-सम्यक् ज्ञान की आराधना करने पर शास्त्र श्रवण की योगवाँई मिल सकती है ।

(९) भ्रद्धा—आत्मा का अनुभव ज्ञान बढ़ाने से प्राप्त होती है । अभ्रद्धा का कारण—धार्मिक आदि

( १२८ )

जिन्यायें की किन्तु अधिका दासी के बाद  
 वैसी अनुमत्तमान् रहित दशा होने से इदम की  
 मया नहीं हुई । आज वैसी दशा है । यह विचार ।

( १ ) पुरुषार्थ—अनेक उत्तम कार्य बहुत कष्ट  
 सहकर करने से यह सब नीचे पुरुषार्थ मिला है ।  
 किन्तु आज प्रमाद स्त्री विष से बसका नष्ट हो  
 रहा है ।

( ११ ) उत्तम सामग्री का सुव्ययोग न करे यह  
 मिला हुआ चिन्तामणि एत केने बग़र है अम  
 योग का फल में मिली हुई शक्ति बग़ना सो चिन्ता  
 मणि काफ़र मरने बग़र है ।

## आत्मविचार

( १ ) चिन्तामणि एत के बहाल में कंठर मत भरो ।

( १२६ )

(२) यावना चन्दन के जहाज में बिछा जमा मत करो ।

(३) मरना क्या है ? मरने पर शरीर को क्यों जलाते हैं ?

(४) शरीर तो वही है फिर जलाना क्यों ?

(५) शरीर में से कौनसा तत्व चला गया ?

(६) उस तत्वको ढूँढ़ो, उसका विचार करो ।

(७) आत्मतत्व कहाँ है ? क्यों चला जाता है ?

(८) उस तत्व के लिये आपने क्या किया ?

(९) शरीर के लिये आजतक क्या किया ? और क्या कर रहे हो ?

(१०) आत्म तत्व के लिये आजतक क्या किया ? और क्या कर रहे हो ?

(११) आत्मा कीमती है या शरीर ?

( ११० )

(१२) दोनों में से किसकी सेवा करनी चाहिये ?  
किसकी कर रहे हो ? और किसकी ?

(१३) मरने पर कहाँ पधारोगे ?

(१४) साज में क्या धागे दे ? और क्या ले  
जाओगे ?

(१५) पृथ्वी और ऊर्ध्व कहाँ तक है ?

(१६) मरने बाद साहस्यर और कर्मदार का क्या  
होवा है ? ( फिर भी लौकिक कर्म की किछ है लेकिन  
पापकर्म इसी कर्म की किछ बसते 'सौम्य' भविष्य भी  
नहीं है )

(१७) आज ही मृत्यु आयाये तो क्या चोक  
सकते हो ?

(१८) आज ही मृत्यु आयाये तो कुटुम्ब और  
व्यवहार कैसे चलेगा ?

( १३१ )

(१६) प्रसन्न इन्द्र या कोपायमान राक्षस भी साता असाता नहीं दे सकते । जीव को कर्मानुसार सुख दुःख भोगने पड़ते हैं ।

(२०) आयुष्य अल्प है और आशा अनन्त है ।

(२१) ससारी कार्य पूर्ण होने के लिये अनन्त वर्ष चाहियें ।

(२२) संसार में रहते अनन्त वर्ष बीत गये किन्तु कार्य अपूर्ण हैं ।

(२३) मिनटों के आयु में अनन्त आशा के कार्य पूर्ण नहीं हो सकते ।

(२४) भेद ज्ञान के विचार से सब कार्य पूर्ण हो सकते हैं ।

(२५) शरीर, परिवार, भोग सामग्री, वैभव, यशोकीर्ति आदि सकल पचेन्द्रियों से प्राप्य पदार्थ

अस्या से भिन्न है, जुड़े हैं इनका संबोध विबोध  
मुझे कोई सुख दुःख नहीं दे सकता ।

(२६) इन्द्रिय सुख में पांच दोष हैं । १ स्वाधीनता  
२ बहुव कक्ष से मिश्रता ३ अस्थिति ( कभी वृत्ति नहीं  
होती ) ४ विम्वरीय ५ अमन्त सुख ।

(२७) विषय सुख जोकमे में पांच महान् गुण  
हैं । १ स्वाधीनता २ सुख की स्थिति, ३ वृत्तिधर  
४ अविम्वरीय ५ अमन्त सुख ।

## ५ वेदनीय और मोहनीय कर्म ।

(१) वेदनीय कर्म से मोहनीय कर्म अमन्त गुणों  
विरोध कह्यार् है ।

१—वेदनी से कहीं अस्थिति वेदनी की अपेक्षा है ।

मोहनीय से विषय विषय मोहनीय की अपेक्षा है ।

( १३३ )

(२) सब कर्मों का राजा मोहनीय कर्म है ।

(३) मोहनीय कर्म राजा है और कर्म उस की प्रजा हैं ।

(४) राजा प्रजा से भिन्न रहता है ।

(५) मोहनीय कर्म भी दूर रहता है ।

(६) तब बाल जीव उसके वियोग से रुदन कर रहे हैं ।

(७) मोहनीय कर्म महा राक्षस है उस को बाल जीवों ने अन्नदाता, शरणदाता और सुखदाता मान रखा है ।

(८) मोहनीय कर्म जितना दूर रहता है उतना ही बाल जीव पतंग बनकर उसकी ज्वाला में गिरता है ।

(९) मोहनीय कर्म दीपक सरीखा सुन्दर दिखता है और स्पर्श करनेवाले के हाथों को जलाता है ।



( १३४ )

(१०) मनुष्य ने मोहनीय कर्म को सुख की मान मान रखा है ।

(११) और बेहनीय कर्म को दुःख की मान मान रक्खा है ।

(१२) बेहनीय कर्म के नाम से वास्तवीय भूयते हैं ( ज्योते हैं ) और मोहनीय कर्म को प्रेम से भेदते हैं ।

(१३) बेहनीय कर्म मनुष्य के पास आता है तब मनुष्य उससे दूर भागता है ।

(१४) मोहनीय कर्म मनुष्य से दूर रहता है तब मनुष्य उससे समीप आता है ।

(१५) बेहनीय कर्म का विष मिच्छू के चहर के बराबर है ।

(१६) सूर्य के चहर समान मोहनीय कर्म है ।

( १३५ )

(१७) विच्छू के जहर वाला चिह्नाता है और सर्प के जहर वाला नींद की लहरें लेता है, जगाने से नहीं जागता है वैसे मोह के नशे वाले को समझाने से भी नहीं समझता ।

(१८) सर्प के विषवाला नीम के पत्तों को मीठे समझ कर खा जाता है, वास्तव में उसे वे पत्ते कढ़वे के स्थान पर मीठे मालूम होते हैं, विष को भी शक्कर मान खा जाता है ।

(१९) मोहनीय कर्म के नशे वाला भी वास्तव में दुःखदायी विषय भोग के संयोगों को सुख का स्वप्न मानकर अपनाता है । गन्दे मल मूत्र के स्थान में सुख का सागर मानता है झूठा याद्व सुख सदा मान मोहित बनता है ।

(२०) वेदनीय कर्म वाला विच्छू के जहर

समाप्त जागह है और उसके द्विजे वषय हूँ द प्य है ।

(२१) जब मोहनीय कर्म बाध्य बेहोरा हो जात्य है वषय करने की तो क्या वषाय करे उसे स्वीकार करने की इच्छा मही होती ।

(२२) बेहनीय कर्म के मय से बचने के द्विजे बह पूर्व हैवारी करता है और उसके संभोग से हुन्याहुमय करता है जब मोहनीय कर्म का भय करमे के स्थान पर वसको अस्तु समझकर बेहो संभोग बढ़ाने की कोशिश करता है ।

(२३) बेहनीय कर्म मित्राने वाले का उपकार मायता है और वसकी सुरात्मर करता है, वसको मेह स्वरूप बचीस देता है ।

(२४) जब मोहनीय कर्म के स्वरूप को समझने

( १३७ )

वाले तथा उसके भय के उपाय बताने वाले सद्गुरु से विमुख रहता है ।

(२५) मोहनीय कर्म कैसे बढ़े इसका इलाज मोहनीय कर्म के मिटाने वाले सद्गुरु वैद्य से पूछता है और वैद्यराज के नुस्खा न बताने से वैद्यराज से नाराज होकर उनका विरोधी बनता है ।

(२६) स्त्री ( पति ) पुत्र धनादि ये मोहनीय कर्म बढ़ाने के साधन हैं, ये आत्मा से दूर रहते हैं तब पामर वियोग दुःख से तथा मिलने पर उनके संयोग में मोहाव होकर मानव जन्म की राशि को नष्ट भ्रष्ट कर देता है ।

(२७) चोरी हो जाना, घर में आग लगना, व्यापार में नुकसान होना, पति-स्त्री पुत्रादि का वियोग होना यह सब मोहनीय कर्म की मात्रा घटने के

साधन हैं, यदि बल्ल जीव इन के घटने से दुःखा  
मुक्त करता है और संयोग में स्वर्गीय सुख प्राप्त  
है ।

(२८) मोहनीय कर्म के घटने से रोता है और  
बेदनीय कर्म के घटने से ईर्ष्या है ।

(२९) मोहनीय कर्म का हृदय बढ़ने से अमृत  
जीव नरक में गये ।

(३०) बेदनीय कर्म के हृदय के बढ़ने से वैराग्य  
पात्र अमृत जीव मोक्ष में पवारे ।

(३१) मोहनीय कर्म के बढ़ने से ईर्ष्या है और  
बेदनीय कर्म बढ़ने से रोता है ।

(३२) मोहनीय कर्म मोक्ष मार्ग के त्रिषु त्रिविध्य  
बाधक है बलना ही बेदनीय कर्म मोक्ष मार्ग के त्रिषु  
बाधक है ।

( १३६ )

(३३) श्री नमीराज ऋषीश्वर, श्री अनायी मुनि महाराज, श्री सनन्तकुमार चक्रवर्ती, श्री शालीमद्रजी और श्री धन्नाजी, श्री लक्ष्मी पति शेठ, श्री कीर्तिध्वज राजा, श्री भरत महाराज और अनन्त जीव वेदनीय के उदय से चेत गये और मोक्ष मार्ग में प्रवृत्त हुए ।

(३४) वेदनीय कर्म उपरोक्त महापुरुष जैसे अनन्त महा पुरुषों को मोक्ष मार्ग में साधक बना ।

(३५) वेदनीय कर्म आत्म जागृति कराने वाला है ।

(३६) मोहनीय कर्म आत्म-भाव भुलाने वाला

(३७) वेदनीय कर्म आत्मा और शरीर को भिन्न समझाता है ।

है ।

(३८) मोहनीय कर्म आत्मा और शरीर का एक-

अनुभव करता है ।

(३६) बेदनीय कर्म की पुत्र बन्धन को अशरण्य समझना है तब मोहनीय कर्म शरण्यमूढ मन्थ्य है ।

(४ ) दोहा—सुख माये श्रिष्टा पवे,  
कर्म सचि बट बाप ।

बन्धनारी इस दुःख की,  
पक्ष पक्ष और मन्थ्य ॥१॥

(४१) मोहनीय कर्म स्वर्ग, नरक, पुत्रव और पाप के बिचार को मुक्ताय है तब बेदनीय प्रति समय याद करता है ।

(४२) बेदनीय कर्म भूतकाष्ठ के अमन्त बंधे हुए कर्मों को तोड़ने का और मोहनीय नवीन अमन्त कर्म जोड़ने का साधन है ।

(४३) बेदनीय कर्म आत्मा को शरण्य बनाय है

( १४१ )

जब मोहनीय कर्म आत्मा को घट बनाता है ।

(४४) वेदनीय के उदय से अनन्त जीव चेतकर मोक्ष में पधारे तब मोहनीय के उदय में अनन्त जीवों ने मानव भव जो मोक्ष का द्वार था उसको नरक द्वार बनाया ।

(४५) ऐसा होते हुए भी बाल जीव वेदनीय कर्म का तिरस्कार करता है और मोहनीय कर्म को प्रेम से भेटता है ।

(४६) वेदनीय कर्म आत्म जागृति के लिये प्रकाश है तब मोहनीय कर्म आत्म जागृति के लिए अन्धकार है ।

(४७) वेदनीय कर्म स्व और परका ज्ञान देने वाला है तब मोहनीय स्व और परका भान भुलाने वाला है ।



(४८) मोहनीय को दूर करने के लिये हजारों साधनों रुपये खर्च किये और स्वासोरम्भवास है वहाँ तक खर्च करोगे किन्तु मोहनीय का रोग बढ़ाने के लिये लाखों करोड़ों खर्च किये,। अरे ! मोह के दरवाजे को नरकद्वार बना रहे हो । अब तो बेवो और मोह फटाघो ।

(४९) प्रभु महावीर मोहनीय कर्म फटाने को पटमा रहे हैं तब उनके मछ पुत्र मोहनीय कर्म बढ़ा रहे हैं ? का बढ़ा रहे हैं ?

(५०) मोहनीय कर्म को प्रभु बचन से विच्छेद बन कर बढ़ाये वह प्रभु के सुपुत्र हैं कि कुपुत्र ? शासन को दिखाने कि कर्षक हग्ये ? शासन में चन्द्र कि शासन में राहू ? प्रभु शासन के ईश कि अंग ।

(५१) जिसको प्रभु के बचन पर विश्वास होगा

( १४३ )

वह जितना उपाय वेदनीय कर्म घटाने को करता है उतना ही मोहनीय कर्म के संयोगों को घटाने के लिये करेगा ।

आस्तिक के लिये इशारा काफी है और नास्तिक के लिए पूर्वों का ज्ञान भी निरर्थक है ।

## समकित दर्पण

१. आत्मा और शरीर का ज्ञान होना वह समकित ।
२. समकित होते ही आत्मा की चिन्ता रहती है ।
३. जैसे मिथ्यात्वी शरीर के लिए रात्रि दिन चिन्ता करता है उससे समदृष्टि आत्मा की चिन्ता अनन्त गुणी करता है क्योंकि मिथ्यात्वी को तो एक भव का ज्ञान है, तब समकित की को अनन्त भव का ज्ञान है, जितना ज्ञान उतनी चिन्ता जितना ज्ञान उतना पुरुषार्थ यह स्वाभाविक है ।

४ ज्ञान छवनी चिन्ता अज्ञान छवनी निरिचरता ।

५ समझिती को आस्था की चिन्ता ।

६ मिथ्यात्वी को शरीर की चिन्ता ।

७ मिथ्यात्वी से समझिती को अनन्त सुखी पिया होती है ।

८ समझिठ जाने के बाद त्वज्ज में भी की पुत्र और वध की तरह वध नहीं जाता ।

९ सूर्य बरस होने के बाद सब जगह प्रभरा है हूँ होने पर भी अन्धकार नहीं रिकता ।

१० समझिठ जाने के बाद ज्ञानरूपवत्सूर्य वरता है जिसके खमने श्री-पुत्र और वध का मोहरूप अन्धकार बहकर भस्मे होता है ।

११ सूर्य वहाँ अन्धकार नहीं, अन्धकार वहाँ सूर्य नहीं ।

( १४५ )

१२. समकित वहाँ मोह नहीं मोह वहाँ समकित नहीं ।

१३. सूर्य का उदय होने से अन्धेरा होवे वह सूर्य नहीं ।

१४. समकित होते हुए भी पुत्र और धन का मोह होवे वह समकित नहीं वह तो अनादि का मिथ्यात्व रूप राहु है ।

१५. समकित जीव दुनियाँ से अलग रहता है ।

१६. मिथ्यात्वी के और समकित के बीच में आकाश जमीन जितना अन्तर है ।

१७ मिथ्यात्वी जमीन पर पैर धीसकर चलने वाला पामर कीड़ा है ( भोग रूप कीचड़ का भस्मी )

१८ तब समदृष्टि जीव आकाश में स्वतन्त्र रूप से विचरने वाला मुक्ताफलाहारी राजहंस है ।

११. सम्पत्ति होने के बाद स्वप्न में भी संसार के भोग की तरह उषि मही होती, सम्पत्ति की उषि में भी भोग का स्वप्न मही आता, कभी पापद्वय से भोग का स्वप्न में क्षाप्तमात्र का स्वप्न आने से जैसे मिथ्याही स्वप्न को देखकर चमत्कार है जैसे समष्टि अनंत धैर्यवत् से उसका परिहार करता है ।

२०. समष्टि होने के बाद उसकी उषि में, माया में, मन में और काय में से निष्पत्ति नहीं सुना हुआ सम्पत्ति कर भग जाता है ।

११. जैसे हरिश्चन्द्र को राज के बूझते हैं जैसे सम्पत्ति का प्रवेश होने के बाद मोक्ष रूप हरिश्चन्द्र भागने का रास्ता बूझ रहे हैं ।

२२. समष्टि हीरे मोती को सबसे बड़कर से

( -१४७ )

विशेष नहीं मानता ।

२३. समष्टि स्त्री और पुत्र को पाड़ौसी मानता है ।

२४. शरीर को हाड़ मांस लोही का जेलखाना मानता है और उससे छुटने के लिये उत्कृष्ट पुरुषार्थ करता है ।

२५. देवागना और सड़ी कुत्ती को बराबर मानता है ( एक उज्ज्वल कोठड़ी और दूसरी गंदी कोठड़ी का कैदी जीव है )

२६. देवागना के हाव भाव सड़ी कुत्ती के पूंछ को हिलाने बराबर समझता है ।

२७. देवागना के गायन को और कुत्ती के भोंकने को बराबर समझता है ।

२८. समकृति को असंख्य देवता के मानिक

( १४८ )

इन्द्र का लंड के त्वाच चक्रवर्ती, तीन-लंड के माच बाहुदेव को चक्रवर्त हुआ है चक्रको हुआ है देवकर समष्टि के बाँध में से चक्रवर्त से चक्र गिर रहे हैं ।

२८. समष्टि समुद्र से अथवा विशेष गम्भीर होता है ।

३०. सभी अपनी सम्पत्ति को सम्पत्ति नहीं मानता है ।

३१. सभी और तत्त्व दोनों स्वयं को चक्रवर्त मानता है ।

३२. चक्र के बीच और देवता को समान मानता है ।

३३. देव तत्त्व को सभी की शक्ति से व्यापक नहीं मानता ।

( १५१ )

४३. समदृष्टि नरक को स्वर्ग बनाता है ।

४४. विषमदृष्टि मोक्ष भूमि को नरक भूमि बनाता है ।

४५. समदृष्टि समवाचा, सम मन, सम काया ।

यही मानव जीवन का मूल्य है । यही सुख का ज्ञान है ज्ञान व चारित्र्य का सार है ।

चार सुख शय्या ( श्रीठाणगजी के चौथे ठाणे )

मृष्टी समझ ( समकित ) २ प्राप्त सयोग में  
वि ।

( भोगों की अरुवि ) ४ दुःख, कष्ट,

ते समता, धैर्य ।

से अतिशय ज्ञान होवे ।

१. विषय-ममता रहित पथ्य प्रमाण  
नी करे ।



( १२० )

ऐक की सवारी में मेथिक के पोढ़े बोधे दबकर  
: गया वह रेशकोच में जाकर प्रभु दरौनार्थ मेथिक  
की सवारी से बल्ली पहुँच गया ।

१८. समन्वित आने क बाद पापी परदेसी मिट  
कर परम पवित्र पुरकारका परदेसी महा भावक  
करदाय ।

१९. जो ५ • जोर साब बोरी करते थे बन्होंने  
बोरी का बन्धा लसी इस जोड़ के भी जम्मुकुमार  
का शरण किया ।

४०. तीर्थंकर को भी समन्वित का शरण दे ।

४१. समन्वित रत्न की चाल से भी ब्यादा रचा  
करे वह समन्वित ।

४२. प्राण जाने की विन्ता थी किन्तु समन्वित  
विषम म हाथ ।

( १५१ )

४३. समदृष्टि नरक को स्वर्ग बनाता है ।

४४. विषमदृष्टि मोक्ष भूमि को नरक भूमि बनाता है ।

४५. समदृष्टि समवाचा, सम मन, सम काया ।

यही मानव जीवन का मूल्य है । यही सुख का स्रज्जाना है ज्ञान व चारित्र्य का सार है ।

चार सुख शब्द ( श्रीठाण्णागजी के चौथे ठाणे )

१ सखी समझ ( समकित ) २ प्राप्त संयोग में संतोष-समभाव ।

३ वैराग्य ( भोगों की अरुचि ) ४ दुःख, कष्ट, उपसर्ग में शांति समता, धैर्य ।

चार कारण मे अतिशय ज्ञान होवे ।

१ शुद्ध हिंसा विषय-ममता रहित पण्य प्रमाण सहित आहार पानी करे ।

( १५१ )

२ आमाही पाइकी छत को कम बागरण्य करे ।

३ कछो कछ स्थाप्याप—बाँधम मनम करे ।

४ दिव्या—अनुपयोगी बातें न करे ।

( इस चार मोड़ों को कसटे करने से दुःख शम्य  
न ज्ञान पारा होय है अतः सदा सावधि रक्खो )



# आत्महित शिक्षा

## “गुणग्राहकता”

(१) गुण ग्रहण करने वाला सद्गुण का खजाना है।

(२) जिस गुण की अनुमोदना की जाय वह खुद में प्रवेश होता है।

(३) जिसकी निंदा की जाय उसका दोष खुद में प्रवेश होता है।

(४) हजार अवगुणों में से एक भी गुण ढूँढ़े वह समकृती।

(५) एक भी दोष ढूँढ़े वह मिथ्यावादी।



( १४४ )

(१४) दोषप्रादी समिपूगी है, गुणप्रादी मरय-  
युगी है ।

(१५) दोषप्रादी मिथ्यात्वी है गुणप्रादी समकित्ती  
है ।

(१६) दोष देखने वाला नरक की नाय बनाकर  
अपने मायियों को नरक में ले जाता है ।

(१७) मान की मात्रा विशेष घटौं दोष दृष्टि  
विशेष ।

(१८) दोषों का गुलाम दोष देखने की मुफ्त  
गुलामी करता है ।

(१९) गुणी भूल से भी दोष नहीं देखता है ।

---

१ कलि कलह, भगदे कुसंग दो यहाँ कलिमुग ।  
दोष देखने से ही भगदे होते हैं ।

( १५६ )

(२०) सर्वोत्तम-व्यास्य भास्य में होते हैं ।

(२१) कृष्ण—सबके गुण होता है ।

(२२) मध्यम—गुणी का भास्य होता है ।

(२३) अप्रम—दोषी का दोष देखो ।

(२४) अप्रमादम—निर्दोषी का भी दोष देखना है ।

(२५) बिना पाप किये सरलता से बूझने का कष्टाव दोष देखना है ।

(२६) बिना कष्ट के विरने का जवाब सबके गुण महय करना है ।

(२७) समदृष्टि ( बिबेकी ) गुण दोष को बराबर समझे किन्तु दोष कभी बिना को सुँह में महय कर दगा होव लसी बठछगिन में पचकर अस्मिन् मुक्त का नारा न करे ।

( १५७ )

(२८) समदृष्टि रूपी हंस गुणरूप दूध को ही पीवे, दोषरूप पानी को छोड़ देवे ।

(२९) जैसे विचार वैसा आचार जैसा आचार वैसा जीवन बनता है ।

## “समकित बत्तीसी”

१. भोग के समय में भी उसे त्याग का स्मरण रहता है ।
- २ श्री महावीर के समान अन्तःकरण और विचार रखे ।
३. विश्व मात्र का जो शिष्य है वही समदृष्टि है ।
४. स्वतः को सबसे बड़ा मानने वाला मिथ्यादृष्टि है ।
५. सब गुणों का अंश सो ही समकित ।
६. समकित की प्राप्ति अनंत पुरुषार्थ से होती है ।



( १५८ )

- ७ जो दोषों में से गुण बूढ़े वह समदृष्टि ।
- ८ आत्मा का विश्वास यही निश्चय समकिय है ।
९. समकिय केवल ज्ञान का बीज है ।
- १० देह गुण के समान अस्मगुण समझने में आवे  
यही समकिय ।
- ११ समदृष्टि की वीतराग दृष्टि होनी है ।
- १२ समदृष्टि को प्रत्येक समय में 'देह मेरा नहीं है'  
ऐसी आवाज आती है ।
१३. मिथ्यास्त्री बहिर है वह वस्तु आवाज को नहीं  
सुन सकता ।
- १४ मिथ्यादृष्टि बेहमय है और समदृष्टि अस्ममय  
है ।
- १५ मिथ्यादृष्टि देह की चिन्ता करता है और सम  
दृष्टि अस्मा की चिन्ता तथा मनन करता है ।

( १५६ )

१६. शरीर से आत्मा को भिन्न समझने के लिये ही सकल शास्त्रों की रचना है ।

१७. आत्मा की परम शांतिमय दशा ही समकित है ।

१८. आत्मा की अशांत दशा ही परम मिथ्यात्व है ।

१९. समदृष्टि कर्म का कर्ज चुकाने के लिये सदा तैयार रहता है ।

२०. स्व स्वरूप में निमग्नता समकित तथा पुद्गल में निमग्न रहना मिथ्यात्व है ।

२१. समकित का अनुभव वचन गोचर नहीं है ।

२२. कषाय को छेड़ने से समकित की प्राप्ति होती है ।

२३. समदृष्टि को शरीर घघनरूप प्रतीत होता है ।

२४. सम्यक्त्वही अपने खुद के दोष प्रकट करता है ।

तहाँ मिथ्यादृष्टि दूसरों के दोष प्रकट करता है ।

२४ समदृष्टि की प्रत्येक क्रिया अस्मत् साधक होती है ।

२५ शरीर की शौचादि क्रियाओं में भी अस्मत्ति रहनी चाहिये ।

२६ जितने अंश में क्षी-गुण-धर्म तथा शरीर से अस्मत्-क्षीयत्व करने अंश में समकित और तीव्रता में मिथ्यात्व ।

२७ अपूर्व को समकित तथा पूर्वागुपूर्व को मिथ्यात्व ।

२८ पहले समकित और पीछे केवलज्ञान ।

३ समदृष्टि को अपसी देख पर भी ममत्व नहीं होता है तो फिर वह अल्प किन्तु शरीर पर ममत्व रहे ।

३१ गुणकारी इच्छा य करने तथा वह समकित दूर है ।

३२ समदृष्टि हीरे मोठियों को बँकर मानता है ।

( १६१ )

## “कर्म स्वरूप ।”

१. आत्म स्वरूप पर आवरण वही कर्म ।
२. कर्म से आत्मा अनंत बलवान् है । इसलिये अनंत काल के कर्मों को क्षण में क्षय कर सकता है ।
३. कर्मरूपी गिलेरे में आत्मरूपी सिद्ध कैव है ।
४. मोहनीय कर्म भावना से क्षय हो सकता है ।
५. वेदनीय कर्म भोगना ही पड़ता है ।
६. प्रकृति और प्रदेश बंध योग से बंधते हैं ।
७. स्थिति और अनुभाग बंध कषाय से बंधते हैं ।
८. वेदनीय कर्म तीर्थंकर को भी भोगने पड़ते हैं ।
९. आयु कर्म पृथ्वी के समान है और शेष कर्म वृक्ष के समान हैं ।

( १६२ )

१० कर्म को अपनी आत्मा के सिवाय अन्य कोई भी शेषता तथा इन्द्र भी नहीं पकड़ सकता ।

११ बहुकाम कर्म को बेदने में हर्ष और शोक क्यों ?

१२ असत्ता भविष्य में आये जाने दुःख को पकड़ी है ।

१३. सत्ता भविष्य के सुख का नाश करती है ।

१४. मोहसीध कर्म की प्रकृति से शेष कर्म प्रकट करते हैं ।

१५. मोहसीध कर्म की शिथिलता से सब कर्म शिथिल पड़ते हैं ।

१६. राग सहित परिग्रह बड़ी कर्म ।

१७ क्यों क्यों कर्म विरोध महसूस किये जाते हैं एवं त्यों शरीर छोटा बनता जाता है पञ्ची पार्थी आदि त्वावर जीव प्लेन में सम्म होता है ।

( १६३ )

१८. चारों कपायों में प्रथम मोक्ष है और शेष तीन दगायाज हैं ।

१९. मोहनीय कर्म जल्दी आता है और जल्दी ही भाग जाता है ।

२०. मोहनीय कर्म बिना छुलाये आता है और बिना निकासे ही मृदु भूत की तरह भाग जाता है ।

### “कपाय”

१. जगत् में मान न होता तो क्षमी भय में मोक्ष प्राप्त हो जाता ।

२. संक्षपाय वाले को ही यत्नसंग का लाभ मिल सकता है ।

३. जहाँ ज्ञान है वहाँ कपाय नहीं है और जहाँ कपाय है वहाँ ज्ञान नहीं है ।

( ११४ )

४. ज्ञान का आधार एक ही है ।
५. एक ही के आधार से सम्पूर्ण ज्ञान की प्राप्ति होती है ।
६. विषय-कथन को छोड़ने के द्वारा आत्मा को ही छोड़ दिया । विषय-कथन छोड़ने से मोक्ष होया है ।
७. ज्ञानी के चेहरे पर भी दिखादित का बोध प होने से ही कथन । कथनी शरणी के समान लगेबाध है ।
८. महापुरुष काहुवहीनी म्यान को भी नहीं समझ सके ।
९. महापुरुष कईकही कोष को भी नहीं समझ सके ।
१०. मन्त्रीधनुष जीव माया स्वान को नहीं जान सके ।

( १६४ )

११. राजर्षि प्रमन्नचन्द्र लोभ को नदी पदनाम सके ।
१२. श्री क्षालिगद्वजी राग को नदी संगम सके ।
१३. श्री हरिकेशी का जीव डोय को नदी संगम सथा ।

१४. सूक्ष्म कषाय सूक्ष्म शल्य के समान भयकर है ।

“भावना ।”

१. सारे जगत् के जीवों के साथ निर्धैर बुद्धि से ही मैत्री ।
२. किसी में अंशमात्र भी गुण देखकर खुश होना प्रमोद ।
३. दुःखी को देखकर अनुसम्पा लाना सो वरुणा ।
४. शुद्ध समकित के योग्य होना सो मध्यम भावना ।
५. क्रोधादि वषार्यों का शांत होना सो सम ।



( १६६ )

६. मुक्ति के सिवाय अन्य अभिलाषा न करना वह सचिवा ।
७. संसार के भव-भ्रमण से कोदित होकर ज्ञान में रमण करना सो विवेक ।
८. महापुरुषों के वचनों में श्रित्ता सो आस्था ।
९. सब जीवों को स्वार्थ दृष्टि समझना यही अनुकंपा ।
१०. सब को सत्य समझना यह विवेक ।
११. सब पर समभाव रखना यह सम ।
१२. वृत्तियों को बाहिर नही जाने देना यह कष्टनाश ।

## “वचनामृत”

१. जिस अर्घ्य से अर्पण-छात्री बरत हैं वैसे एक अछात्री सहर्ष करना है ।
२. मुक्ति ब्रह्म से अनुभव वह अमृत मुख्यार्थ है ।

( १६७ )

३. जड़ को अपना ज्ञान नहीं है। वैसे ही अज्ञानों को अपना ज्ञान नहीं है। अतएव जड़ और अज्ञानी में क्या भिन्नता है ?
४. आत्मा का निश्चय हो जाय तो विषय-कषाय छूट जाय। आत्मा के अनिश्चय से ही राग-द्वेष हो रहे हैं।
५. अपनी आत्मा का बुरा करने में कुछ भी कसर नहीं रखी गई है।
६. विषय-कषाय का विरेचन करावे वही जिनवाणी।
७. 'हम ज्ञानी हैं' ऐसा कहने वाले खुद को ठग रहे हैं।
८. अज्ञाता का उदय होने पर ज्ञानी तथा अज्ञानी की परीक्षा होती है। कसौटी के बिना पीतल और सोना समान दीखते हैं।

( १९८ )

६. आरम्भ, परिमह, विचय और कथाय में रह हो  
उसे बोध देना मुर्ते को दया देने के बराबर है ।

१०. अन्तर्धी को अन्तर्मुख में बोध दगना है तहाँ  
अन्तर्धी को अन्तर्मुख काल तक भी बोध  
नहीं होता ।

११. अन्तर्धी को प्रभु ने भी संसार का त्याग किया था ।

१२. आन्धी के बचनों को अज्ञानी बच्चाएँ से पता  
है ।

१३. प्रभु की आज्ञा के बाहर विचरना यह स्वप्न  
रहता है ।

१४. प्रभु के बचनों को नहीं मानना यह प्रभु का  
विरोध या अशासन करने के बराबर है ।

१५. अज्ञान उपयोग से विरहित विचरना नहीं आत्म  
बाध है ।

( १६६ )

१६. मोक्षभाव यही मिथ्यात्व है ।

१७. विषय-कषायी ज्ञानी के वचनों पर पैर रखकर चलता है ।

१८. प्रमाद के स्वरूप का ज्ञाता अप्रमत्त रहता है ।

१९. आत्मघर्म आत्मा में ही है ।

२०. देह में विराजमान आत्मा सुखी है अथवा दुःखी ?

२१. ज्ञानी देह से आत्मा की चिन्ता अनन्त रखता है ।

२२. आत्मा अपने स्वरूप को भूलकर भ्रमण करता है ।

२३. आत्म ज्ञान के बिना अन्य कोई उपाय नहीं है ।

२४. सिद्ध के समान मयका सामर्थ्य है ।

२५. आरम्भ परिग्रह की इच्छा यही आत्म घात है ।

२६. पुद्गलानन्दी को आत्मज्ञान क्योंकर हो सकता है ?

२७. मोक्ष मार्ग के सिवाय शेष सब वन्मार्ग हैं ।

( १७० )

२८. देह के प्रति बल या मीन के समान आरव्य का सम्बन्ध है।

२९. देह बल है, आत्मा मुख्यतरि है।

३०. आत्मा को नहीं पहिचाने वह अनन्त संसारी।

३१. जब आत्मा का कोई नाम ही नहीं तो फिर मात्त अपमान किसका ?

३२. व्याकरण रहित ज्ञान की बातें करने वाला ज्ञान तथा अर्थत ज्ञानी की अपहंसना करना है।

३३. स्वप्न में भी शरीर और आत्मा की भिन्नता का ज्ञान होना चाहिये। ऐसे ज्ञान वाला ही समदृष्टि है।

३४. विचक-कथाय की इच्छा सात्वर्षे नरक में भी अर्पकर है। यह बात समदृष्टि ही समझ सकता है।

( १७१ )

३५. मर्ष और अग्नि से भी विषयकषाय मध्यकर हैं ।  
३६. आरभ और परिमद दृष्टिविषय मर्ष हैं ।  
३७. द्वेष करना नहीं, और तजना आरभ और परिमद ।  
३८. राग करना नहीं और दित करना आत्म ज्ञान से ।  
३९. स्त्री, पुत्र और धन के आवीन सो विषयाधीन ।  
४०. विषय को जिम्ने वश में किया उसने सारे विश्व को वश में किया ।  
४१. एकान्त में विचारे कि-ये स्त्री, पुत्र तथा धन सुख वर्धक हैं या दुःखवर्धक ?  
४२. विषय कषाय मय प्रवृत्ति से आत्मा का नाश होता है ।  
४३. आरभ और परिमद महारोग हैं ।  
४४. जिसे सुद का ज्ञान नहीं है उससे बढ़कर

( १५२ )

अध्यामी तथा मिथ्याहि ब्रह्मण कीम हो सकता है ?

४५. आरंभ और परिणत से मेम वह मिथ्यास्त्री एवं अमर्त-संसारी का ब्रह्मण है । समग्रहि ब्रह्मस्तीन एता है ।

४६. आरिज-रहित काम मररूप है ।

४७. आत्मा को आत्म के समान निर्मल रखो ।

४८. आत्म में जीने रजकण्ट एतकता है बसी मकार समग्रहि को आरंभ और परिणत ब्रह्मण है, दुत्त का अनुभव होता है ।

---

‘वचनीयता धनाम मौन’

१. वचन शान्त मधुर साध, तथा कीमल होने चाहिये ।

( १७३. )

२. अल्प बोलने वाले को अल्प पश्चात्ताप होता है ।
३. एक एक शब्द को मोती से भी मूल्यवान समझो ।
४. अप्रिय वचन विष से भी विशेष भयंकर हैं ।
- ५ जो आनन्द मौन में है वह बोलने में नहीं है ।
- ६ मौन मोक्ष का अनुत्तर मार्ग है ।
- ७ मौन वीतरागपद का अनुभव कराने वाला है ।
८. मौन विषय कषाय को रोकने का केन्द्रस्थान है ।
९. मौन समुद्र के समान गंभीर है ।
१०. मौन ही प्रभु महावीर का मुनिपन था ।
११. मौन आत्म-समाधि का गुप्त मंत्र है ।
- १२ मौन का उलटा नमो, याने नमस्कार करने योग्य ।
१३. मौन ही आत्मव्योति, ध्यान तथा निर्जरा है ।
१४. अनंत भूत और भविष्य के तीर्थंकर मौन धारण कर अपूर्ण से पूर्ण हुए हैं और, होंगे ।



( १०४ )

## “शरीर”

- १ यह शरीर सिर्फ साढ़े तीन हज़ार बर्षों में बनेगा ।
- २ कष्ट मज़ मूत्र व भाज्य है इसकी चिन्ता क्यों ?
- ३ अन्तिम अवस्था का प्रत्येक समय में स्मरण कर ।
- ४ चौदह राजसूय में सब का कारण यह शरीर ही है ।
- ५ शरीर हाथ मांस का पिंड है, इसपर मोह क्यों ?
- ६ मोह साधन के बिना यह कामी की नाश है ।
- ७ शरीर बर्द्ध की भयंकर मूर्ति है ।
- ८ चौदह राजसूय की संरक्षि से मायव भव की एक बड़ी अमृत मूर्त्यवान है ।
- ९ चित्त जिससे प्राप्त होवे वह चित्तमयी नरमप ।
- १ तीर्थंकर भी गुह्य से चेतकर साधन बनने ।

११ अनंत बार मानवभव निष्फल गया है । इस बार संपूर्ण सावधानी रख, अन्यथा यह भी निष्फल चला जायगा ।

१२. ज्ञानी का देह कर्म क्षय करने के लिए है ।

## “मृषावाद बत्तीसी”

(१) असत्य वचन बोलने वालों का मुंह गंदी नाली के समान है ।

(२) असत्य वचन बोलने से नरक में जाना श्रेय है ।

(३) सत्यभाषी चन्द्र से भी विशेष शीतल है ।

(४) मिथ्याभाषी अग्नि से भी विशेष भयंकर है ।

(५) सत्यवादी के स्पर्श से भूमि पवित्र होती है ।

(६) मिथ्याभाषी के स्पर्श से भूमि कलंकित होती है ।

(७) सत्यवादी संसार-समुद्र तिरता है और मिथ्या-

( १५६ )

भापी संसार में अमृतप्राप्त वह हुआ है ।

(८) मिथ्यावचन बिप और शस्त्र से भी बर्धकर है ।

(९) सत्य में ज्ञान, ब्रह्म और चरित्र हैं ।

(१०) असत्य में द्विष्टा, बिपव और कृपाप हैं ।

(११) सत्य देवताओं को भी प्रिय है ।

(१२) असत्य नरक को वेदियों को भी अप्रिय है ।

(१३) सत्यभापी ईश्वर है, मिथ्याभापी महाकायक ।

(१४) शस्त्र देकर भी सत्य की रक्षा करो ।

(१५) सब जनों का मूल अक्षय्य है ।

(१६) असत्य १३ और ५२ को मरक में ले जाया है ।

(१७) असत्य भापी की जाया भी अनंत हुई है ।

(१८) मृषावादी क बिप नरक की सजा भी अपूर्य है ।

(१९) मृषावादी जोर क समाप्त संसार समुद्र में प्रपश्य करता है ।

( १७७ )

(२०) मृषावादी प्रत्येक समय नरक निगोद में प्रवेश करता है ।

(२१) सत्य चैतन्य है और मृषावाद जड़ता है ।

(२२) मृषावादी पग पग पर पतित होता है ।

(२३) मृषावाद हलाहिल विष है ।

(२४) मृषावाद निर्दयी दावानल है ।

(२५) मृषावादी का स्पर्श अग्नि से भी भयंकर है ।

(२६) सब विषों से मृषावाद का विष भयंकर है ।

(२७) मृषावादी अग्नि में शीतलता ढूँढता है ।

(२८) मृषावाद पिशाच से भी अनंत गुणा भयंकर है ।

(२९) सब रोगों में मृषावाद का रोग महा भयंकर है ।

(३०) मृषावादी में अनन्त दोष हैं ।

( १५८ )

(३१) सुषाबाह्द धर्म कुछ का मारा करता है ।

(३२) सुषाबाह्द रत्नत्रय का मारा करता है ।

अग्निप्रवेश से भी सुषाबाह्द धर्मव भर्षकर है ।

सत्य शर्वत सरोवर है धर्मों स्थान करो ।

## “इन्द्रियो”

(१) इन्द्रियां बंदर के समान हैं । उन्हें ज्ञान के पित्रने में बंद करिये ।

(२) इन्द्रिय-विषय होने से आत्मज्ञान होता है ।

(३) इन्द्रियों के समान आत्म में कीमती ज्ञान हो जाय तो आत्म ही मोक्ष हो जाय ।

(४) इन्द्रियां मरक और निगोद में जाने की सीढ़ियां हैं ।

(५) बिब राह जितना है और बिबय मेह जितना है ।

( १७६ )

- (६) अग्नि को लुधा में इन्द्रियों को लुधा अनन्तगुणी भयकर है ।
- (७) इन्द्रिय विजय बिना स्वर्ग या मोक्ष की इच्छा मस्तक से पर्वत तोड़ने के समान है ।
- (८) इन्द्रियों का भोग भोगता यह सर्प को पकड़ कर उसका दात चखाड़ कर उससे अपनी ग्वाज खूजलाने से भी अनन्त भयंकर है ।
- (९) क्षात्री चिन्ता करते हैं कि 'अल्पकाल के इन्द्रियों के सुख भोगकर अनन्त काल के नरक और निगोद की वेदना कैसे सहन कर सकेगा ( माल जीव ) ।

“हितोपदेश”

- (१) संसाररूपी नाट्यशाला में मनुष्य नृत्य कर रहा है ।

(११) मृषावाद धर्म-वृक्ष का नारा करता है ।

(१२) मृषावाद रत्नत्रय का नारा करता है ।

अग्निप्रवेश से भी मृषावाद धर्मवध धर्यकर है ।

सत्य शक्ति सरोवर है हममें स्थान करो ।

## “इन्द्रियो”

(१) इन्द्रियो बंदर के समान हैं । उन्हें ज्ञान के पित्रों में कैद करिये ।

(२) इन्द्रिय-विषय होने से आत्मज्ञान होता है ।

(३) इन्द्रियों के जमान अस्थ में लीकवा जाय हो जाय तो आत्म ही मोक्ष हो जाय ।

(४) इन्द्रियों मरक और निगोह में जाने की सीढ़ियां हैं ।

(५) बिज राई जितना है और बिजरा मेह जितना है ।

## नंदन वन के मुक्ताफल

१. अनतानंतावश्यक; स्वस्वरूपमेतीनता
२. विशेषावश्यक; ध्यान, अखंड जागृति में लीनता
३. मध्यमावश्यक, पठन, मनन, लेखन, उपदेश
४. अनिवार्य, आहार, विहार, निहार, व्यायाम आदि
५. अनावश्यक; विकथा, निंदा, प्रमाद, मदादि
६. अनंत घातक; हिंसा, विषय, कषाय ॥ १ ॥
१. मोक्ष मेरा अनादि का जन्मसिद्ध हक है ॥
२. भव्य ! विचार कि अनंत बली आत्मा के पास कर्म कौन चीज है ?
३. पर अनंत बली हैं और मार्ग अनंत अल्प है ।  
उस अनंत दिशा की ओर अनंत बल से जाने के लिये हृद निश्चय होना चाहिए ॥ २ ॥



- (२) बिषय कीर कथाय आत्मा के बिये कुपज्य है ।
- (३) बिषय कथाय स्त्री पत्नर से अफना सिर क्यों  
छोड़ते हो ?
- (४) सर्व पदकने पाषा मूल है वो फिर स्त्री-पुष्-  
पन ध्यारम और परिमह से प्रेम करने वाला  
कैसा है ?
- (५) पापमय जीवन को पवित्र मत मानो ।
- (६) मय भ्रमय का कारण एक मात्र शरीर ही है ।
- (७) इस शरीर पर चमकी न होती वो मक्की  
मक्कर, और बड़ी इसे का बाते ।
- (८) धर्म मित्र-देव-गुरु-स्थानी और बंधु है ।
- (९) निग्रेह में गिरते हुए बंधन बंदी धर्म ।
- (१०) अज्ञान का राम्रहीनो कोह से है ।
- (११) मोहस्थी ध्यनि से साध संसार बंध रहा है ।

( १८३ )

१. एकोहो, एमाणे, एमाये, एलोहो,  
सो-हँ।
२. एोसहे, एोरुवे, एो गधे, रसे, फासे ॥६॥
१. भद्रता, चिन्तय, अनुकंपा और निराभिमानता यह  
मूल पूंजी है। नहीं तो नरक, तिर्यच, गति  
निश्चय ही है ॥७॥
१. उपादान का विचार करता है वह समदृष्टि,  
निमित्त को दोष दे वह मिथ्यादृष्टि ॥८॥
१. ८४,००,००० जीव योनि में इस आत्मा से भी  
कोई अधम प्राणी है ? ॥९॥
१. ८४,००,००० जीवयोनि में इस आत्मा से भी  
कोई विशेष पुण्यशील है ?
१. द्रव्य से मैं एक हूँ, असग हूँ, शरीर से रहित हूँ,  
क्षेत्र से असख्य लोकाकाश प्रमाण हूँ। काल से

१ इस हाथ, मांस, कोड़ी, घृष्ट, पित्त, कफ और  
मलमूत्र की जमके की बौली में<sup>१</sup> वह जीव इच्छा  
पूर्वक झेंद है कछके मोह से अमृत अथ प्रमथ  
हुये हैं अथ तो बिनाम सेवा चाहिये ॥१॥

२ असंख्य वेदियों का परिचय काली अग्नि से  
अमृत मयकर प्रतीत हो ऐसी वैराग्य दूरत और  
वह स्थिति तो अमृत वरुण नाम हुई सिर्फ सम्बन्ध  
भाव के अभाव से अथ भ्रमरु न मिष्टा ॥२॥

३ अत्येक समय पर अपने को महावीर मान ।

बीतरागी बन ।

४ बीतरागी बचन बिचार बर्तन व विशेष रख ।

५ सदागता से अमृत अस्वर ।

६ अत्येक वसन्त पर अत्येक आर्तुत रुख ।

७ अमृत गोपन नाकबाध ॥३॥ ४ ।

( १८४ )

अग्नि से अनंत भयकर समझ ॥१४॥

१. वीतराग दशा से चरम शरीरी और सराग दशा से अनंत ससारी ॥१५॥

१. प्रभव, विलायती, रोहाचोर, संयति, परदेशी राजा, चंडकोशिक सर्प और सो इन्हीं को मेरे अनंत नमस्कार ॥१६॥

१. सम्यक्त्वी अरिहंत, सिद्ध, जिन केवली, वीतरागी, अयोगी, अशरीरी, दशा का अनुभव करता है ॥१७॥

## अपनी डायरी

- १ इस साल कितने गुण बढ़ाये ?
- २ विषय, कषाय पर कितना विजय किया ?
- ३ प्रमाद का कितना विजय किया ?

- ४ आत्म कल्याण के लिए कितना समय निकाला ?
- ५ पाप कर्म में कितना समय निकाला ?
- ६ आर्य समाज में मोह चटाया या बढ़ाया ?
- ७ क्रोध को कितनी मात्रा में चटाया ?
- ८ मान का कितना दर्शन किया ?
- ९ माया को त्याग कर कितनी सरलता प्राप्त की ?
- १ काम बर्या दुष्प्राप्य पटी या बढ़ी ?
- ११ वैद्विष के विषय विचार कितने पड़े ?
- १२ विषय कथम का विषय कितना बढ़ी है ?
- १३ यह सर्व सफल गया या निष्फल ?
- १४ जीवन का सदुपयोग किया या दुर्बुधयोग ?
- १५ इस सर्व क्या करना चाहते हो ?
- १६ ऐसा वास्तव्य जीवन क्या चढाओगे ?
- १७ क्या अर्थार्थ का भरोसा है ?

( १८७ )

१८. आज-मृत्यु हो जाय तो कौन सी गति मिले ?
१९. आज नहीं तो कल निश्चित ही मरण है ?
२०. विषय कषाय मय जीवन वाले की एक क्षण अनन्त भयकर है; तीन दिन की विषयाशा से कुठरिक्ली सातवीं नरक में गये, तो पाठक ! अपने पाप का या पाप के फल स्वरूप गति का विचार कीजियेगा ।

## अपूर्व वचनामृत ।

१. वीतरागी भाव बिना सब हेय ।
२. केवल प्रभु का परोक्ष आनन्द ले वह ज्ञानी ।
३. वीतरागी का परोक्ष आनन्द ले वह समदृष्टि ।
४. राग, द्वेष और लोभ यह अज्ञानी के सन्तान हैं ।
५. ज्ञान, परित्यक्त यह ज्ञानी के सन्तान हैं ।

( १८८ )

६. समदृष्टि कायूत दरा में और स्वप्ने में विषय,  
विषय, कथाय को सिंह सर्प और अग्निवह  
समझता है ।
७. जहाँ ज्ञान है वहाँ विषय कथाय का अपार  
होता है ।
८. आसन्न ने शीम डोकेछो बरा किया ।
९. अतीव्रिय सुखानुभव करे वह समदृष्टि ।
१०. दृष्टान्त वही सिद्धान्त है ।
११. देह में रहने के और आसन्न देव है ।
१२. निज रूप में समस्त करे वही शान्ति ।
१३. अपने को देह रहित अनुभव करने वाला ज्ञानी ।
१४. सब जसलों में सम्पन्न रहे वही समदृष्टि ।
१५. मन बचन कथा और इन्द्रियों का विरोध  
करना । वह इन्द्र संवर ।

( १८६ )

१६. राग, द्वेष और मोह का अभाव भाव संवर है ।
१७. राग, द्वेष, मोह का नाश यही सामायिक है ।
१८. पुद्गल सग से जीव असुन्दर है ।
१९. ज्ञान सग से ही जीव सुन्दर है ।
२०. ज्ञान व्योति से विषय कषाय का नाश होता है ।
२१. देह और इन्द्रियों के आधीन न रहे यही मुनि ।

## आस्तिक यंत्र—

१. राजमतिजी ने रहनेमिजी को विषय भोग भोगने की अपेक्षा मृत्यु का आलिङ्गन करना श्रेष्ठ कहा ।

२. अरण्यक को संसार में फसा देखकर माता ने ( अपने प्रिय पुत्र को ) गरम शिला पर सथारा करने की पुत्र ने सहर्ष स्वीकारी ।



( १८८ )

- ६ समदृष्टि आगूत दरा में और स्वयं में ईश्वर  
विषय, कषाव को छिड़, छर्ने और अन्विष्ट  
समझता है ।
- ७ कहाँ काम है वहाँ विषय कषाव का समाप  
होता है ।
- ८ आत्मन ने तीन झोकझा करत किया ।
- ९ अतीव्रिय मुक्ताशुभव करे वह समदृष्टि ।
- १० वेदज्ञान वही सिद्धांत है ।
- ११ वेद रक्षित है और आत्मा देव है ।
- १२ मित्र रूप में रमण करे वही शास्त्री ।
- १३ अरने को वेद रक्षित अनुभव करने वाला जानी ।
- १४ सब प्रसंगों में सम्बन्ध रहे वही समदृष्टि ।
- १५ मन बचन वाक्य और शब्दों का निरोध  
करता । वह इन्द्र संहर ।

( १८६ )

१६. राग, द्वेष और मोह का अभाव भाव संवर है ।  
 १७. राग, द्वेष, मोह का नाश यही सामायिक है ।  
 १८. पुद्गल सग से जीव असुन्दर है ।  
 १९. ज्ञान संग से ही जीव सुन्दर है ।  
 २०. ज्ञान ज्योति से विषय कषाय का नाश होता है ।  
 २१. देह और इन्द्रियों के आधीन न रहे वही मुनि ।

## आस्तिक यंत्र—

१. राजमतिजी ने रहनेमिजी को विषय भोग भोगने की अपेक्षा मृत्यु का आलिङ्गन करना श्रेष्ठ कहा ।

२. अरण्यक को संसार में फसा देखकर माता ने ( अपने प्रिय पुत्र को ) गरम शिला पर सपारा करने की धी और पुत्र ने सहर्ष स्वीकारी ।

( १६० )

३. ब्याई राजा ने अपने प्रिय पुत्र को राज्य में  
दिखा ।

४. कीर्तिष्णक मुनि ने अपने शिष्य ( पुत्र ) को  
अर्ध आराधनार्थ विहस्री का मठ होते-देख समझा  
रखा ।

५. लक्ष्मणजी ने अपने ४२२ शिष्यों को अर्ध  
आराधनार्थ पाण्डी में पित्रात देख समझा रखा ।

६. अक्षयजी ने अक्षीर्यमठ की रक्षा के लिये  
५० शिष्यों को उत्पल रती में संन्यास करने की  
आज्ञा दी ।

७. गुरुरीम मठ ने राजी के स्वयं भोग में भोग  
राजी पर ज्ञान्य भेद समझा । अन्त में राजा का  
सिंहासन दृश्य ।

८. गुरुरीम भगवत की जन्म दि

( १६१ )

भय होते हुए भी प्रभु दर्शन की आशा की ।

६ पोटीला (देव) ने अपने रतेही तेतली प्रभान को उपसर्ग देकर संयम दिलाया ।

१०. घन्नाजी ने शालिभद्रजी को कायर कहा और बत्तीस स्त्रियों को एक साथ छुड़ाना चाहा ।

११. चूलनी पिता आदि श्रावकों को ध्यान में डिगायमान देखकर उनकी माता व स्त्रियों ने उनको उपालंभ दिया ।

**मैं कौन और कैसा ?**

१. महावीर जैसा समभावी ।

२. मेघरथ राजा जैसा अहिंसक ।

३. अरण्यक श्रावक जैसा सत्यवादी ।

४. निन्दित श्रावक जैसा अदत्त व्रत का आराधक ।

३. ज्योतिष राजा ने अपने प्रिय पुत्र को एकाग्र  
दिया ।

४. कीर्तिष्दत्त मुनि ने अपने शिष्य ( पुत्र ) को  
अपने आराधनाार्थ सिद्धि की अथवा होते देकर समभाव  
रखा ।

५. लक्ष्मणजी ने अपने ४३६ शिष्यों को धर्म  
आराधनाार्थ बाण्डों में विभाजित देकर समभाव रखा ।

६. ज्योतिषजी ने अश्वमेधव्रत की रक्षा के लिये  
७० शिष्यों को बच्छा रेती में संवार करने की  
आज्ञा दी ।

७. सुरसेन सेठ के लक्ष्मी के अथवा भोग व भोग  
राष्ट्री पर बाण्डों में समभाव । अथवा भोग व भोग  
सिद्धान्त इत्यादि ।

८. सुरसेन अथवा की भाषा है ।

( १३३ )

६. चमड़ी उतारने वाले लालच जी लैला समताधाम ।
७. प्रभव खोर चैला धर्म में भ्रष्टाचार ।
८. गौतम गणधर लैला तद्वत्प्राप्तक ।

## विषय कपाय रक्त.

- रक्त क्रोध से—लालचजी को भगवत्प्राप्त करना पड़ा ।  
 रक्त मान से—बादलजी की तन केवलज्ञान रुक गया ।  
 रक्त माया से—भालीप्रभु के जीवको स्त्री होना पड़ा ।  
 रक्त लोभ से—लंडलजी को आहार में अतराय रही ।  
 रक्त राग से—शाहीभद्रजी को मोक्ष न मिला ।  
 रक्त द्वेष से—हरिकेशीमुनि चाटालकुल में उत्पन्न हुए ।

- रक्त से—  
 —प्रसन्नचन्द्र राजर्षि ध्यानमें डूब गये ।  
 —ब्रह्मदत्त के जीवने नियाणा किया ।

( ११९ )

- ४ सुदर्शन घेठ बीछा सीकबंठ ।
- ५ पुष्पीय भाबक बीछा संतोषी ।
- ७ लंकुमार बीछा बैरामबंठ ।
- ८ गङ्गसुकुमार बीछा रामाबंठ ।
- ९ बाहुबलजी बीछा पथमी ।
- १० अंबिकाजी के ७०० शिष्यों बीछा अठ में दह ।
- ११ अरण्यक मुनि बीछा निमबंठ ।
- १२ परदेशी राजा बीछा मरक ।
- १३ सुदर्शन भाबक बीछा बर्म में दह ।
- १४ लक्ष्मणजी के ४१६ शिष्यों बीछा बैरवनाम ।
- १५ बदमबाबा बीछा पुष्पपादक ।
- १६ अजु नमाजी बीछा स्वरोर दरोर ।
- १७ संवति पद्म बीछा बर्म में नयाबंठ ।
- १८ रोहाभोर बीछा भिबवायी सुनने बाबा ।

( १६५ )

## संसार चक्र.

१

नाम अंतर्मुहूर्त में जन्ममरण कायस्थिति २

|                     |       |             |
|---------------------|-------|-------------|
| पृथ्वीकाय           | १२८२४ | असंख्यातकाल |
| अपकाय               | १२८२४ | "           |
| तेजकाय              | १२८२४ | "           |
| वायुकाय             | १२८२४ | "           |
| प्रत्येक धनस्पतिकाय | ३२००० | "           |
| साधारण धनस्पतिकाय   | ६५५३६ | अनंतकाल     |

१. १२८२४, ६५५३६, ८०, ६०, ४०, २४, इतने जन्म मरण उपरोक्त जीव सिर्फ एक अंतर्मुहूर्त में ही करते हैं। २ असंख्य काल का अर्थ असंख्य अवसर्पिणी और उत्सर्पिणी और अनंतकाल का अर्थ २॥ पुद्गल परावर्तन।



मादक द्रव्य से—शेखर राजर्षिको प्रमत्तावस्था प्राप्त हुई ।

रससे— मंगु व्याचारिको बन्ध होमा पड़ा ।

स्पर्श से— झुरझरीकमी को भी सावनी मरक में बाना पड़ा ।

अष्टम मम से—विदुषमण्य सावनी मरक में बंधा है ।

उपरोक्त विषय सधन्य में न आये तो छानी पुरुषों से समझियेगा । इस चक्र में अल्प क्रोध, माम माया क्रोध व शब्द, रूप गंध, रस, स्पर्श का विषय कितना मरक है इसका संक्षेप में चित्र लीया है ।

( १६५ )

## संसार चक्र.

१

| नाम                 | अंतर्मुहूर्त में जन्ममरण कायस्थिति | २           |
|---------------------|------------------------------------|-------------|
| पृथ्वीकाय           | १२८२४                              | असंख्यातकाल |
| अपकाय               | १२८२४                              | "           |
| तेजकाय              | १२८२४                              | "           |
| वायुकाय             | १२८२४                              | "           |
| प्रत्येक धनस्पतिकाय | ३२०००                              | "           |
| साधारण धनस्पतिकाय   | ६५५३६                              | अनंतकाल     |

१. १२८२४, ६५५३६, ८०, ६०, ४०, २४, इतने जन्म मरण उपरोक्त जीव सिर्फ एक अंतर्मुहूर्त में ही करते हैं । २ असंख्य काल का अर्थ असंख्य अवसर्पिणी और उत्सर्पिणी और अनंतकाल का अर्थ २॥ पुद्गल परावर्तन ।

( १६६ )

|                   |           |
|-------------------|-----------|
| बेइन्ड्रिय        | ८०        |
| तेइन्ड्रिय        | ६०        |
| बोरिन्ड्रिय       | ५०        |
| असंखी पंचेन्ड्रिय | १४        |
| संखी पंचेन्ड्रिय  | अवमु इतै  |
| नारकी             | १ • वर्ष  |
| देवता             | १ ०० वर्ष |

२० • सागर

## शरीर

१ यह शरीर एक बीर्य कुटी है इसका मोह  
कीन रहने ?

२ दूसरों के यह शरीर अपनी आँखों से अकते  
हुए देखकर अपने शरीर का मोह नहीं छुड़ता है ।

३ जिस बीच २ सागर में धर्म का आराधन  
करके मोह में न जाय तो वह निरन्धय से सागर में  
जाता है ।

( १६७ )

३ मनुष्य अगर शरीर के समान ही आत्मा की चिन्ता न करे तो इसी भव में वह मोक्ष मार्ग के अत्यन्त नजदीक पहुँच जाता है ।

४. शारीरिक सुख पराधीन है परन्तु आत्मिक सुख स्वाधीन है ।

५. शारीरिक सुख क्षणिक है परन्तु आत्मिक सुख शाश्वत है ।

६ शरीर यह मिट्टी का एक पिण्ड मात्र है परन्तु आत्मा यह सूर्य के समान प्रकाशित है ।

**आप कैसे हैं ?**

१ समदृष्टि विश्वमात्र से प्रेम करता है ।

२ समदृष्टि विश्व के हित में अपना हित सम-  
कता है ।

३ गुप्त व गुप्त विचारों को भी पवित्र रखियेगा ।

४ विचारों का शब्द से दूरानो या मन में ज़िपाओ तबपि विचारों का असर तो दूसरे पर होता ही है ।

५ अगर आपको सम्बन्ध से प्रेम है तो दूसरे के दोष के ज्ञान पर गुण ग्रहण कीजियेगा ।

६ अगर आपको मिथ्यात्व से प्रेम हो तो दूसरे के गणों की ओर लक्ष्य न कर केवल दोष देखियेगा ।

७ सम्बन्धदर्शन और मिथ्यादर्शन इन दोनों में से जिनका व्यापार आपको पसंद और हितकर हो वही कीजियेगा । सुझेय कि बहुत —

८ भंगी बिछा दूँ दया है और भयान इतर ।  
बैस ही दोपी दाव दूँ दया है और गयी गुण ।

९ इस मोठी और बीभा सदा माँस लोडवा

हे वैसे ही गुणी गुण और दोषी दोष ।

१०. जैसे विचार वैसे आचार और जैसे आचार वैसे गति तथा मोक्ष भी मिल सकता है ।

११. गुणप्राप्तक द्वेषी को मित्र और दोषप्राप्तक मित्र को भी द्वेषी बनाता है ।

१२. आर्य की गुणदृष्टि और अनार्य की दोष-दृष्टि होती है ।

१३. गुणदृष्टि स्वर्गीय और दोषदृष्टि नारकीय होती है ।

१४. गुणप्राप्तक विश्व का मित्र है, और दोषप्राप्तक विश्व को अपना शत्रु बनाता है ।

१५. गुणप्राप्तकता वशीकरण मंत्र से विश्व वशीभूत होजाता है ।

१६. गुणप्राप्तकता सद्गुण का निधि और दोष-

दृष्टि तुराचार का मंडार है ।

१७ गुणदृष्टि सदाचार और दोषदृष्टि तुराचार है ।

१८ गुणी शीघ्रवान है दोषी श्रमविधायी है ।

१९ गुणदृष्टि धर्म सम्मुख है और दोषदृष्टि विमुख है ।

## अमृत्य विचार ।

१ पाप करके प्रायश्चित्त करना वह कीचड़ में पैर धाँसकर न धोने के बराबर है ।

२ जितने धर्म में महत्त्वपूर्ण की रक्षा विरोध की जाय तबने ही धर्म में महत्त्वपूर्ण कार्य करने की शक्ति प्रवृत्त होती है । जीवन का यही सार है ।

३ नीच रक्षा करता वह आत्मरक्षा करने के बराबर है । अत्य रक्षा वह विरह रक्षा है ।

४. वीर्य रक्षा करनी, यह एक प्रजावत्सल, नीति-परायण राजा की रक्षा करने के बराबर है, क्योंकि वीर्य यह शरीर का सच्चा राजा है।

५. इच्छु में से रस निकल जाने पर जैसे छिलके मात्र रहते हैं, वैसे ही वीर्य के नाश में शरीर सत्व-हीन हाड पिंजर मात्र रहता है।

६. सर्वथा ब्रह्मचारी रहने वाले पुरुषों ने ऐसे सयोगों में कभी नहीं आना चाहिये, कि जिससे ब्रह्मचर्य के भग का प्रसंग आपड़े।

७. नींव ( बुनियाद ) की दृढ़ता पर ही जैसे सारे मकान की दृढ़ता का आधार है वैसे ही वीर्य की रक्षा पर ही जीवन की दृढ़ता का आधार है।

८ विशेष पुत्रोत्पत्ति करना, यह आर्थिक दृष्टि से देश की दुर्दशा करने के बराबर है।



६ जो मनुष्य अपनी जी को छोड़कर अन्य की  
के पास जाता है वह जानबूझकर अपनी जी को  
पुराधारिणी बनाता है और गुरु भुग्यायी बनाता है ।

७ संसार में मिलता भले ही रहे परन्तु  
बिछड़ता मत करो । स्पर्श मसे ही करो किन्तु ईर्ष्या  
मत करो ।

८१ एही मनुष्य के उपदेशमें स्वार्थ का जरा  
अवश्य रहना है बीठराग का उपदेश दक्षय्य पर  
मार्जोवदरा है ।

८२ एक बाह और एक ठोका वह व्यापारिक  
वृत्ति के द्विय सखा करत है ।

८३ साहे की बंजीर शरीर के कल में ठोड़ी का  
सकती है परन्तु माह की बंजीर अन्य किसी शक्ति  
से नहीं ठोड़ी का सकती है सिवाय एक दैत्य के ।

१४. निंदा करने से अपनी शुद्ध क्रिया भी दूसरे की अशुद्ध क्रिया के परायण हो जाती है ।

१५. जहाँ कदाग्रह होता है पक्षों दिन नहीं हो सकता ।

१६. जो मनुष्य लोभ को अपने आधीन करता है वही संसार में मया स्वामी योगी और ससार से सर्वथा वियोगी है ।

१७. क्षमा गुण के अभाव में अन्य गुण उतने ही निरर्थक हैं, जितने किसी अंक के रहित विधियों ।

१८ जिस देश, जाति, क्रिया समुदाय में प्रेम का अभाव होता है, वह देश, जाति किंवा समुदाय अज्ञान से पूर्ण है अर्थात् मिथ्यात्वी है ।

१९. परदोष को प्रकट करने का स्वभाव, यह स्वदोष की वृद्धि करने वाला है, और यह दुर्गति

( २०९ )

६ जो मनुष्य अपनी स्त्री को छोड़कर अन्य स्त्री के पास जाता है वह जानबूझकर अपनी स्त्री को दुराचारिणी बनाता है और लुप्तप्रायी बनता है ।

७ संसार में भिन्नता भले ही रहे परन्तु विद्वत्ता मत करो । स्वार्थ भले ही करो किन्तु ईर्ष्या मत करो ।

८ सभी मनुष्य के कपड़ोंमें स्वार्थ का धरा भरपूर रहता है बीतराग का कपड़ा यक्षान्त पर मार्कोपवेश है ।

९ एक बात और एक तोहफ़ा व्यापारिक विलासि के लिये सदा कारण है ।

१० लोहे की जंजीर शरीर के बल से तोड़ी जा सकती है परन्तु मोह की जंजीर अन्य किसी शक्ति से नहीं तोड़ी जा सकती है सिवाय एक बैराग्य के ।

( २०३ )


१४ निंदा करने से अपनी शुद्ध क्रिया भी दूसरे की अशुद्ध क्रिया के घरावर हो जाती है ।

१५ जहाँ कदाग्रह होता है वहाँ हित नहीं हो सकता ।

१६. जो मनुष्य लोभ को अपने आधीन करता है वही संसार में सच्चा स्वामी योगी और संसार से सर्वथा वियोगी है ।

१७. क्षमा गुण के अभाव में अन्य गुण उतने ही निरर्थक हैं, जितने किसी अंक के रहित विदियों ।

१८ जिस देश, जाति, किंवा समुदाय में प्रेम का अभाव होता है, वह देश, जाति किंवा समुदाय अज्ञान से पूर्ण है अर्थात् मिथ्यात्वी है ।

१९. परदोष को प्रकट करने का स्वभाव, यह स्वदोष की  करने वाला है, और यह दुर्गति

अपसाधारण कारण है, और यही मिथ्यात्वी का प्रचल है।

२०. आर्य कहा है जो स्वाग करने योग्य व्यक्तों से दूर रहता है। अनार्य वस्तु विपरीत है।

१ किसी के शरीर का न्यस्य करना वसी का नाम हिंसा तो है ही किन्तु द्वेष बुद्धि से किसी को मानसिक दुःख दण्ड बह भी हिंसा है।

२२. यदि सर्प के मुख से अमृत की वृष्टि होती हो तो बौध्दहिंसावादी समदृष्टि बन सके।

## ज्ञान शतक

(१) माह निद्रा से ज्ञान-वृत्तना का मारा होता है।

(२) भ्रमण करने से बकाबट आती है और बकाबट से भीड़ आती है वसी प्रभर नीयसी स्थल

जीवा योनि में भ्रमण करने से जीव को थका-वट लगी है और इसको उतारने के लिये मोह निद्रा में यह पामर सोया है। ज्ञानी पुरुष जगते हैं किन्तु यह पामर नहीं जगता।

- (३) मोह निद्रा से विचार शून्य हृदय बन जाता है।
- (४) मोह पिशाच ज्ञानी के तत्वों पर विचार नहीं करने देता।
- (५) जीवों के गले में काल की फाँसी लगी है डोरी खींचते ही प्राण पछी चढ़ जायेंगे।
- (६) दूसरे के मृत्यु की चिन्ता होती है किन्तु खुद की मृत्यु की चिन्ता नहीं होती।
- (७) गर्भ में आते ही आयु घटने लगती है किन्तु आयु घटने का न गर्भ में भान था और न वर्तमान में है।

- (८) कुत्ता मरकर बेब और बेब मरकर कुत्ता जाऊँस मरकर भंगी और भंगी मरकर जाऊँस होना है यह कर्म की विविधता है ।
- (९) मैं अवेक्षा थाक हूँ और अवेक्षा जाने जाऊँ हूँ इतना ही काम हो तो काफी है ।
- (१०) जैसे पिता पुत्र के मुँह को बँधकर हमराय में से काठा है वसी प्रकार आत्मा शारीरिक मुँह को बँधा कर संसार में परिभ्रमण कर रहा है ।
- (११) जन्म हुआ तब शरीर साब म था और मरने पर भी शरीर साब सही बक सहेगा शरीर तो यही पड़ा रहने वाला है जिसे बंधाकर विषय व स्नेही प्रसन्न होंगे । यह अन्नादि का विचार है ।
- (१२) श्री पुत्रादि का सम्बन्ध तो जोड़े ही दिनों में

हुवा है और वह भी छूट जायगा ।

(१३) इस शरीर में प्रशमा के योग्य कौनसा पदार्थ है ?

(१४) स्त्री और पुरुष का शरीर गन्दी नाली है पुरुष के गन्दे नाले में नौ नाले हैं और स्त्री के गन्दे नाले में ग्यारह नाले हैं ।

(१५) शरीर रूपी गन्दे खाले में कृमि-कीड़े-अलसिये कलथला रहे हैं ।

(१६) असंख्य समुद्र के जलसे स्नान करने पर भी यह शरीर शुद्ध नहीं होगा । किन्तु असंख्य समुद्र के जल को यह शरीर गंदा बनायगा ।

(१७) मनुष्य शरीर मिलना अत्यन्त मुश्किल है उससे भी मनुष्यत्व मिलना अत्यन्त कठिन है ।

(१८) मनुष्यत्व मोक्ष जैसा पवित्र व महंगा है ।





( २०६ )

- (२४) मोह निद्रा का साम्राज्य तीन लोक में है ।
- (२५) एक म्यान में दो तलवार का समावेश नहीं हो सकता उसी प्रकार देह ममत्व व आत्म ज्ञान दोनों नहीं रह सकते ।
- (२६) देह भान भूल जाने से ही आत्म ज्ञान होता है ।
- (२७) देह भान भूलने से निद्रा आती है और शरीर को थकावट दूर होती है वैसे ही देह भान भूलने से ज्ञान दशा जागृत होती है और अनंत काल का कर्म बोझ दूर होता है और आत्मा शुद्ध होता है ।
- (२८) मोह रूप अग्नि से विश्व जल रहा है ।
- (२९) विषय वासना से विश्व अन्धा बना है ।
- (३०) सुखी होने के लिये रेशम के कीड़े अपने शरीर

( २१० )

पर रेशम पखोवते हैं किन्तु बसते वे हुन्की होमे  
हैं जैसे ही पुत्र पत्न्यादि के बन्धन से मनुष्य  
हुन्की होजा है ।

(३१) वन में बाबानुज अग्रा अन्धा सुन्की होमे के  
किये शौक किन्तु बाबानुज में गिरकर मर गय  
इसी प्रकार अज्ञानी संसार बाबानुज में सुन्की  
होमे के किये शौकत हैं किन्तु हुन् बाबानुज  
में गिरकर भ्रम हो जात हैं ।

(३२) जानवर द्विवाहित का बिचार नहीं कर सकता ।  
वसी मन्त्र अज्ञानी भी बहस जीवन बर्तीत  
करके अस्वस्थ करता है ।

(३३) बिचारों का आचार न समझ भी आस ठग्वर  
है ।

(३४) माह दृष्टि बिष सर्व से भी बिरोध भर्षकर है ।

- (३५) मिथ्यात्व रूप पिशाच आत्मा का नाश करता है ।
- (३६) मोह निद्रा द्रव्य निद्रा से अनन्त भयंकर है ।
- (३७) विषय कषाय प्रवृत्ति पाखण्ड वृत्ति है ।
- (३८) ज्ञान की बातें करने वाले बहुत हैं किन्तु विचार सा आचार रखने वाले विरले हैं ।
- (३९) अज्ञानी ज्ञान गज की सवारी त्यागकर विषय कषाय रूप गधे की सवारी करके अपने आपको दुर्गति में ले जाता है ।
- (४०) तत्वों का ज्ञान यही सम्यक् ज्ञान है ।
- (४१) तत्व की रुचि प्रतीति यह सम्यक् दर्शन ।
- (४२) कषाय से निवृत्ति यह सम्यक् चारित्र ।
- (४३) आत्म शुद्धि यही सम्यक्त्व
- (४४) ज्ञानी शत्रु, मित्र स्व-पर का भेद भूलकर

( २१० )

पर रेशम फोड़ते हैं किन्तु उसने वे कुत्ती हो  
हैं जैसे ही पुत्र बन्धु के बन्धन से मुक्त  
हुन्नी होता है ।

(३१) वन में बाबामन्त्र जग्य अग्न्या सुखी होने के  
लिये रीढ़ा किन्तु बाबामन्त्र में गिरकर भरम  
इसी प्रकार अग्न्यामी संस्कार बाबामन्त्र में सुखी  
होने के लिये रीढ़ते हैं किन्तु कुल बाबामन्त्र  
में गिरकर भरम हो जाते हैं ।

(३२) ज्ञानवर द्वाितादित का विचार नहीं कर सकता ।  
जसी मन्त्र अग्न्यामी भी पशुपत जीवन अवर्ति  
करके आत्मपश्य करता है ।

(३३) विचारों का आचार न रखना भी आत्म ठग्य है ।

(३४) मोह दृष्टि विष सर्व से भी विशेष मर्षकर है ।

(५२) समभाय चन्द्रमा से शीतल है पर विषय  
कषाय के भाव अग्नि से भी भयंकर हैं ।

(५३) विषय कषाय की घातपीत श्रोता य यक्षा  
दोनों को नरक में ले जाती है सो उसका आग-  
रण करने वाले की क्या दशा होगी ?

(५४) संतोषी विश्व को पावन करता है ।

(५५) लोभी विश्व में कलंक रूप है ।

(५६) संतोषी संसार समुद्र तैर जाता है पर लोभी  
संसार समुद्र में डूब जाता है ।

(५७) समभावी समुद्र जैसा गम्भीर है उसमें सब  
गुण रूपी नदिया आकर मिलती हैं ।

(५८) कषाय दावानल है उसमें सब गुण रूपी चंद-  
नादि जलकर भस्म हो जाते हैं ।

(५९) समभायी को देवता नमस्कार करते हैं ।

सबको भाई मित्र सब समझते हैं ।

(४५) जगदीश जीव कुनये रूपी पापाद को माथ में  
बैठकर संसार समुद्र तैल्य चारते हैं ।

(४६) मुक्त रूपी बिह में अप्रिय बचन बोलनेवाली  
बिहवा रूपी भागिन रहती है वह अपना विष  
धिरम में छैलती है ।

(४७) बाजों रुपये इन्धम मिहने पर भी किसी की  
निवा न सुनो और न करो ।

(४८) सत्य बर्म सब मारा होवा हो तो बसकी रक्षा  
के लिये बोलो अन्यथा मौन रहो ।

(४९) बोलने में सौ दबा हाति है और ब बोलने में  
सौ दबा काम है ।

(५०) तिन्दक क बचम नागिन से भी भयंकर हैं ।

(५१) एक एक शब्द को मोठी से भी मईगा समझे ।

( २१५ )

(६६) विषय कषाय से वचने का उपाय एक विवेक है ।

(७०) विषय कषाय का साम्राज्य तीन लोक में है ।

(७१) चौरासी लाख जीव योनि में भटकाने वाला सिर्फ एक विषय-कषाय है ।

(७२) विषय कषाय ही ससार है ।

(७३) विषय कषाय दावानल में अज्ञानी शीतलता ढूँढते हैं किन्तु वे भस्म हो जाते हैं । (पतंगवत्)

(७४) विषय कषाय अनत-ज्ञानी से निन्दित होने पर अज्ञानी पवित्र मानते हैं ।

(७५) विषयी-कषायी विश्व का गुलाम है ।

(७६) अज्ञानी को विषय-कषाय का भूत लगता है ।

(७७) विषय-कषाय का भूत अनंत पुण्य को नष्ट करता है ।



कपाशी से नारकीचे नेरिये भी पूछा करते हैं ।

(६०) समभाषी देखताफ़ों का पूछ्य है ।

(६१) सब पापोंका मूख एक कषाय है ।

(६२) कषाय नरक निगोद की सीढ़ी है ।

(६३) कषाय ऋद्धि पूर्व की तपस्वा को मनु करता है ।

(६४) कषायी सुद ब्रह्मता है और औरों को ज्ञयता है ।

(६५) विषय-कषाय हकारक विष से भी भयंकर हैं ।

(६६) विषय-कषाय के विचार मात्र से भी मरक में आते हैं तो विषय-कषाय बढ़ाने वालों का क्या होगा ?

(६७) अकण्ठकाल तक विषय कषाय का सेवन किया फिर भी तपति न हुई और न होगी ।

(६८) विषय कषाय की मूर्खा से संस्पर्ध मूर्खित हैं ।

( २१७ )

(८६) मेरी भूल बताने वाला मेरा मित्र है उस पर क्रोध क्यों करूँ ? ज्ञानी ऐसा विचारते हैं ।

(६०) क्रोध करने वाला दूसरों को क्रोध करना सिखाता है ।

(६१) परके हित के लिये परोपकारी अपना सर्वस्व दे देते हैं मुझे क्रोधी को कुछ भी नहीं देना है और समा धन मुझे मेरे पास ही रखना है ।

(६२) अज्ञानी क्रोध करके विष पीता है पर तू क्यों विष पीता है ? और नरकगामी बनता है ।

(६३) मेरे अशुभ कर्म काटने का यह साधन है ।

(६४) क्रोध का विजय नहीं किया तो ज्ञान किस काम का ?

(६५) चन्दन काटने वाले को और कुल्हाड़ी को सुगन्ध देता है तो मुझे क्या ( क्रोधी को )

रेना चाहिये ?

- (६६) अपना अधिकार करके भी छोधी मुझे सुधारने की कोशिश करते हैं वनस्पत उपकार में कैसे भूल सकया हूँ, उपकार न मामल भीषण है ।
- (६७) मुझे असाध्य का उदय न होता तो वह मुझ पर कोष क्यों करता ? उसका कुछ रोष नहीं है रोष कबल मरी ही कर्म प्रकृति का है । कोष करने से नये कर्म बँधते हैं जमा रखने से नये कर्म नहीं बँधते और पुराने कर्म चप होते हैं तो मैं ऐसा काम क्यों छोड़ूँ ? शत्रुर्षा बन्दर के समान हैं उन्हें काम पित्ररे में कैद कर आराम साधना कीजियेगा । घाय्य देकर भी काम की रक्षा करो ।

## अध्यात्म पद

- (१) पुद्गल की सगति से जीव के भव भ्रमण बढ़ते हैं ।
- (२) संसार रूप नृत्यशाला में विषयी-कषायी नृत्य करते हैं । ( अनन्त काल से ) ।
- (३) ज्ञान ज्योति की विलीनता ही भाव निद्रा है ।
- (४) चैतन्य सत्ता की तल्लीनता ही मोक्ष मार्ग है ।
- (५) आत्मध्यान विना सब ध्यान भयकर हैं ।
- (६) स्वस्वरूप में लीन रहने वाला ही स्वाधीन है शेष सब पराधीन हैं और अनन्त संसारी हैं ।
- (७) आत्म रमणता यही जीवन मुक्त दशा है ।
- (८) ज्ञान दर्शन का सार चारित्र और चारित्र का सार निर्वाण और यही आत्मस्वभाव है ।
- (९) छोटी उम्र वाला व्यवहार में बाल है पर

( २१० )

अज्ञानी पुनः व ब्रह्म निरचय में महा लब्ध है ।

( १ ) रोग के समय कड़वी दवाई पीने में शिष्ट  
प्रकार कहासीमठा रहते हैं वही प्रकार ज्ञान-  
पान में ज्ञानी सदैव कहासीम रहते हैं ।

( ११ ) अज्ञानी जितने कर्म जोड़ेंगे उतने में सब करते  
हैं । करने ही कर्म ज्ञानी अल्पसु हर्ष में सब  
करते हैं ।

( १२ ) ज्ञानी अत्येक स्वासोरवास में आगुप्त है ।

( १३ ) अष्टावि पदार्थ से शरीर बन्य है तो ऐसे शरीर  
में सुन्दरता कहाँ से आकणी ?

( १४ ) १ मास में गर्भस्थ बीज खून व प्याही बी-  
जाता रहता है ।

२ मास में पानी के बुलबुले बीजा आकर  
जाता होता है ।

३. मास में बुढ़बुढ़ा कठिन होता है ।

४. मास में मास की आकृति बनती है ।

५. मास में मास में से ५ अक्षर फूटते हैं  
१ तिर, २ हाथ, २ पाव ।

६ मास में आँख, कान, नासिका, ओष्ठ,  
अंगुलियों बनती हैं ।

७. मास में चमड़ी नख और केस आते हैं ।

८ मास में हलन चलन की क्रिया प्रारम्भ  
होती है ।

९. मास में बाहर आने के योग्य बनता है ।

(१५) माता की विष्टा चाहे कच्ची हो या पक्की वहीं  
जीव का निवास स्थान है ।

(१६) खाया हुआ भोजन कच्ची विष्टा है और  
पाचन हुए बाद पक्की विष्टा है ।



( २२३ )

(२१) 'अमृत विष के योग से विष घनता है । उसी प्रकार विषय कषाय से ज्ञानी भी अज्ञानी बनते हैं ।

(२२) आत्मा के लिये विषय कषाय कुपण्य भोजन है ।

(२३) मुर्दे को पत्नी नोचते हैं, उसी प्रकार अज्ञानी मुर्दे को विषय कषाय रूप पत्नी नोच २ कर खा जाते हैं ।

(२४) मुर्दे के हाथ में हथियार व्यर्थ है, उसी प्रकार ज्ञानी ज्ञान का उपयोग न ले तो वह ज्ञान निरर्थक है ।

(२५) गधे को चन्दन भार रूप है, वैसे ही चारित्र्य हीन की ज्ञान की बाँटें भार के समान हैं ।

(२६) विषय कषाय ज्ञान और दर्शन के दोनों चक्र फोड़ कर अन्धा बनाती है ।



( ११४ )

(१०) विषयी-कषायी स्व जीवन गुणो ब्रैह्म है ।

(१८) पूर्व जन्म की अज्ञानता से कर्मे हुए पापों के  
क्षिप्त परभावों को छोड़ और वर्तमान जीवन को  
सुधारो ।

(१६) शारीरिक मर्यादा में प्रमाद सर्प पुस गया है,  
बढ़ ज्ञान को नष्ट कर अज्ञान विष फैलाता है ।

(३ ) घट दिन स्त्री भाग से यह शारीरिक मर्यादा  
जड़ रहा है वो फिर ऐसे मर्यादा में जीवन वास  
करना प्रसन्न करते हैं और जीवन ऐसे शरीर से  
माह रचते हैं ।

(११) परिग्रह व महत्वाकांक्षा की वृद्धि होने से  
आरम्भ विषय कषाय व पाप की वृद्धि होती  
है ।

(१२) अज्ञान ही माता पिता पुत्र बन्धु, मित्र व

( २२५ )

स्नेही है आत्मा के सिवाय सब दूसरे हैं ।

(३३) समस्त कषाय का नाश ही शुद्ध भाव है ।

(३४) जैसे बिज्ली चूहे खाने में पाप नहीं मानती  
उसी प्रकार अज्ञानी आरम्भ परिग्रह विषय  
और कषाय में पाप नहीं मानते ।

(३५) जैसे एक चूहे के पीछे कई बिज्लियाँ दौड़ती हैं  
उसी प्रकार एक आत्मा को सताने के लिए  
अनेक विषय कषायी कर्म लगे रहते हैं । संयमी  
व ज्ञानी अपनी रक्षा कर सकते हैं ।

(३६) अज्ञानी का एक क्षण भर भी ऐसा नहीं है  
जिस समय वह विषय-कषाय व कर्म न बाध  
रहा हो । समय २ पर वह सात या आठ कर्म  
उपार्जन कर रहा है और भारी हो रहा है ।

(३७) ससार में सुख है ही नहीं । लुधा, तृषादि



( २२७ )

कषाय व अशुभ लेश्या में जीवन पूर्ण करता है उसकी क्या गति होगी ? मर्त्य विचारिण्य ।

(४२) स्थावर जीवों में अल्प शक्ति होने पर भी चारित्र्य मोह के कारण अनन्त कषाय हैं तो लो रात दिन आरम्भी, परिग्रही, विपयी, कषायी जीवन बिता रहे हैं उन मनुष्यों की कौनसी गति होगी ?

(४३) तस काय की स्थिति पत्थर के आकाश में अधर रहने जितनी है और स्थावर काय की स्थिति पत्थर के जमीन पर रहने जितनी है । पाठक इस पर खूब ही मनन करें ।

(४४) नारकी के जीवों में परस्पर शत्रु बुद्धि है अगर मित्र बुद्धि होतो दुःख कम हो उसी प्रकार अज्ञानी ने पापोदय से धर्म क्रियाओं से शत्रुओं

मान रखनी जिससे दुःखी हो रहा है ।

(४५) विषयभिक्काही भरकर मरक में अन्त है वहाँ  
सिद्धे मनु एक वेद है और यह योगि में अन्त  
है तो वहाँ कर्त्तव्योक्ति कष्ट ही जाती है जैसे  
बैज योग्ये आदि ।

(४६) मनुष्य माता के मन्त्र मूर्धनि स्वाम में अन्त  
होता है विद्या के कीये का अन्त की दुःख रहा  
मिलती है किन्तु गर्भस्थ जीवन के लिये न रहा  
है न मकरा ।

(४७) अन्त की मंदरा ही सदा सुख और योग्यता  
ही अन्त दुःख और संसार वर्मक है ।

(४८) शरीर के लिये सोमक अन्तम, संक्षिप्त पाठक  
जैसे ही आत्मा के लिये हिंस विषय पाठक  
है ।

(४६) पत्थर से मनुष्य अपना सिर फोड़े तो उसमें पत्थर का क्या दोष है ? उसी प्रकार जीव विषय कषाय में फँसे तो उसमें विषय कषाय का क्या दोष है जैसे पत्थर निर्दोष है उसी प्रकार विषय कषायी संयोग भी निर्दोष है ।

(५०) अज्ञानी को ससुराल की गालियाँ मीठी लगती हैं और माता पिता की हित शिक्षा कटु लगती है उसी प्रकार जीव धर्माश्रयन में दुःख मानता है और विषय कषायी पापी प्रवृत्ति में सुख मान रहा है ।

(५१) पशु, पक्षियों को सम्मान साता नहीं देते हैं तदपि वे उनके लिये मिथ्या मोह रखते हैं उसी प्रकार मानव भी मिथ्या मोह रखता है ।

(५२) सती स्त्री प्राण जाने पर भी पर पुरुष की

इच्छा नहीं करती वही प्रकार छान्नी बिबब  
 कपास में नहीं जलते, और आत्म रमयता  
 करते हैं ।

(५३) आत्म पातक सब कृत्य आत्म अविच्छेद हैं ।

(५४) लेख बत्ती व बर्तन के योग से दीपक जलता  
 है वही प्रकार छान्नी वरीन व चारित्र के योग से  
 आत्मा अ शुद्ध स्वरूप प्रकट होता है ।

(५५) अग्नि के हाथ में दिग्द होने पर भी उसे कुल  
 नहीं सुम्पता वही प्रकार अज्ञानी को ज्ञान  
 जितने प्रत्यक्ष व परोक्ष प्रमाण बताये जाय वो  
 भी उस पर कुल अमर नहीं होता ।

(५६) मविच्छति इति मन्त्र जिसमें सम्बद्धात्म,  
 वरीन व चारित्र उत्पन्न होने की सत्य है वह  
 भ्रम्य है । और जिसमें इन्द्र अमर है वह

अभठय

- (५७) आँख के बिना शरीर निरर्थक उसी प्रकार धर्म बिना मानव जन्म निरर्थक है ।
- (५८) ज्ञान दर्शन का जिसमें गुण न हो वह अजीव सा ।
- (५९) आठ कर्मों की मार से आत्मा मूर्च्छित हो रही है ।
- (६०) मोहनीय कर्म हिताहित का बोध नहीं होने देता ।
- (६१) जीव की कर्म से मित्रता है जिससे दुष्ट मित्र अपना कर्तव्य बजाकर आत्मा को विशेष दुःखी बनाता है ।
- (६२) सज्जन शुभ राह पर ले जाते हैं पर दुर्जन दुष्ट मार्ग में जाते हैं उसी प्रकार अशुभ कर्म



अष्टम कार्य कराते हैं और छठे कर्म छठे कार्य करते हैं ।

(६३) आत्मा बैठा कर्म-बीज बोता है वसी प्रकार वसको फल मिलता है ।

(६४) आत्मा और कर्म के बीच में अष्टम भाव सांख्य क्यों बरो है वे अष्टम भाव ही आत्मा और कर्म का संयोग करने हैं ।

(६५) शरीर में अहं करने वाली ही आत्मा है ।

(६६) सुख दुःख का अनुभव कर्म से होता है ।

(६७) जो क सचे हुए ज्ञान का पाम करने जान्ते मानती है वसी प्रकार अज्ञानी विषय वस्तु में जान्ते मानते हैं और भव भ्रमण करते हैं ।

(६८) जोर वस बोदे क गोले पर वैर रखते ही बरबात करता है और बुराहीन रहता है

( २३३ )

उसी प्रकार समदृष्टि भोग को रोग समझ कर उससे उदासीन रहते हैं ।

(६६) रोगी रोग मिटने पर रोग की इच्छा नहीं करता उसी प्रकार समदृष्टि भोग की इच्छा नहीं करते ।

(७०) रोगी रोग से मुक्त होने की भावना करता है उसी प्रकार समदृष्टि भोग रूप रोग से मुक्त होने की भावना करते हैं ।

(७१) हे भव्य आत्मा ! आप में राग द्वेष न रहे ऐसी कृपा करें ! यही आत्मा का सच्चा धर्म है ।

(७२) मिथ्या दृष्टि भोग में इष्टानिष्ट बुद्धि रखते हैं पर समदृष्टि समभाव रखते हैं ।

(७३) मिथ्यात्वी मृत्यु समय डरता है पर समदृष्टि मृत्यु को महोत्सव मानता है और परम

अनभिज्ञ रहता है ।

(७४) मिथ्यात्वही शरीर व क्लृप्त् को अपन्य मानते हैं पर समदृष्टि आस्था ज्ञान दर्शन चरित्र और तपस्वि को अपन्य मानती है ।

(७५) स्व गुह्यता व पर की कपुता वही मिथ्या दृष्टि का लक्षण है । हर समदृष्टि स्व कपुता व पर की गुह्यता करने में ही आकम्ब मानते हैं ।

(७६) समदृष्टि सब जीवों को कर्माधीन समझकर उपाशेष न करते समभाव रखते हैं ।

(७७) चरित्रों के बीसे गुण समदृष्टि में रहते हैं ।

(७८) अनन्य संसारी के गुण मिथ्यात्वही में होते हैं ।

(७९) रस्यवन लयने वाले को पञ्च पत्न्याने की अस्मृत रहती है वही पञ्च ज्ञानी को चरित्र की अस्मृत है पञ्च रहित रस्यवन कामदायक

नहीं है उसी प्रकार चारित्र रहित ज्ञान विशेष लाभदायक नहीं है ।

(८०) शीतलता दूर करने के लिये अग्नि में गिरने वाला दुःखी होता है उसी प्रकार मिथ्यात्वी विषयेच्छा से भोग भोगने वाला इस लोक व परलोक में दुःखी होता है । ( अनन्त काल तक )

(८१) दीपक में प्रकाश रहता है, उसी प्रकार समष्टि ज्ञान दीपक से सदा प्रकाशित है ।

(८२) चोर को जिस प्रकार सिपाही मारते हैं उसी प्रकार वेदनीय कर्मरूप सिपाही भी विषयी कषायी को अनन्तकाल से मार मारते हैं ।

(८३) सिपाही मार २ कर थक जाते हैं तब चोर को शांति मिलती है उसी प्रकार वेदनीय कर्म सजा देकर के थक जाते हैं । तब आत्मा को शान्ति

मिळती है ।

(८४) आचकर्म जेकर के समान है ओ आराम को विविध जीवयोगि में अपने कर्तव्यानुसार कर रक्ता है ।

(८५) नाम कर्म बहुत स्विष्ट होता है कि ओ आत्मा के मूल स्वरूप को पहचान के विविध रूप अत्यन्त कष्ट से चारण कर रहा है ।

(८६) ओ हेव ओय जपारेव अ मतये विचार करते हैं वही मत्तुरव हैं ।

(८७) जीव हवी काचडिवा रातीर रूप-अवयव में कर्म रूप मय लेकर ८४००००० बोमि में भ्रमण करता है ।

(८८) ठीक लोक के पदार्थ भी ज्ञानी को वही दिख सकते ।

(८६) अज्ञानी ज्ञानी से द्वेष करते हैं ।

(८७) उल्लू सूर्य से द्वेष करके अन्धकार को पसन्द करता है । उसी प्रकार अज्ञानी मिथ्यात्व से खुश रहते हैं ।

(८८) कालरूप मणिधर के मुँह में तमाम विश्व का समावेश है । भारत में नित्य ४०,००० मनुष्य मरते हैं ।

(८९) इन्द्रिय रूपी पिशाच आत्मा की घात करता है । आत्म रमणता ही सच्चा सुख है ।

(९०) जैसे शराबी अपने शरीर को भूल जाता है वैसे अज्ञानता के नशे में आत्मा खुद को भूल गया है, आत्मा सो परमात्मा ।

(९१) सम्यक् प्रयत्न के अभाव में परमात्मा के स्थान पर पत्थर घनता है स्थावर तीव्र योनि में

( २३८ )

अमृत का वह दुःख भोग्य है आसक्त  
ही सब सुखों का मूल है । मैं कोन ? कहाँ से  
अप्य ? कहाँ चला हूँ ? इस का भी भिन्न  
राम नहीं है उससे अथा अज्ञानी कोन है ?



( २३६ )

## ॥ संचित चौबीस तीर्थकरों का वर्णन ॥

आध्यात्मिक विकास के ऊँचे शिखर पर पहुँचाने वाले महापुरुषों को जैन-धर्म में तीर्थकर कहा जाता है। तीर्थकर देव राग, द्वेष, भय, शोक, क्रोध, मान, माया, लोभ, मोह, चिन्ता आदि विकारों से सर्वथा रहित होते हैं। केवल ज्ञान और केवल दर्शन के धारक होते हैं।

सभी दुर्गुणादि दोषों से रहित, उत्तमोत्तम गुणालंकृत को तीर्थकर देवाधिदेव कहते हैं।



## जैन तीर्थंकर

तीर्थंकर कौन होते हैं ?

तीर्थंकर जैन साहित्य का एक मुख्य पारिव्यापिक शब्द है। यह शब्द किसका पुराण है इस के लिए इतिहास के पंथ में पढ़ने की जरूरत पड़ी। भाष्यकार का विवरण से विवरण इतिहास भी इसका कारण काह या सचमे में अचमक है और वह जकार से तो वह कहना चाहिए कि यह शब्द अचमक इतिहास अचमकी से है भी बहुत दूर परे की चीज।

जैन धर्म के साथ यह शब्द का अमिल सम्बन्ध है। दोनों को दो अलग अलग स्थानों में विभक्त करना मानो दोनों के वास्तविक स्वरूप को ही विकृत कर दिया है। जैनो की देख देखी यह शब्द अचमक पन्थों में भी कुछ-कुछ माचीन अचम में व्यवहार हुआ है।

---

१ ऐसी ही साहित्य का संकायत है।

परन्तु वह सब नहीं के बराबर है। जैनों की तरह उनके यहाँ यह एक मात्र छद्म एव उनका अपना निजी शब्द बन कर नहीं रह सका।

हाँ तो जैन धर्म में यह शब्द किस अर्थ में व्यवहृत हुआ है, और इसका क्या महत्त्व है ? यह देख लेने की बात है। तीर्थंकर का शाब्दिक अर्थ होता है—तीर्थ का कर्ता-निर्माता-बनाने वाला। 'तीर्थ' शब्द का जैन परिभाषा के अनुसार मुख्य अर्थ है—धर्म। ससार समुद्र से आत्मा को तारने वाला एक मात्र अहिंसा एव सत्य आदि धर्म ही हैं, अतः धर्म को तीर्थ कहना, शब्द शास्त्र की दृष्टि से भी उपयुक्त ही है। तीर्थंकर अपने समय में ससार सागर से पार करने वाले धर्मतीर्थ की स्थापना करते हैं, उद्धार करते हैं, अतः वे तीर्थंकर कहलाते हैं। धर्म

के आधार पर करने वाले साधु, साध्वी आश्रम = गुरुत्व  
पुरुष और माधिका = गुरुत्व की रूप चतुर्विध संघ  
को भी गोप्य दृष्टि से तीर्थ कहा जाता है। अब  
चतुर्विध धर्म संघ की स्थापना करने वाले महापुरुषों  
को तीर्थकर कहते हैं।

जैन-धर्म की मान्यता है कि—जब जब संसार में  
अत्याचार का राज्य होता है मध्य कुरुक्षेत्रों से  
जन्मीकृत हो जाती है लोगों में ऐसी नार्थिक भावना  
बीज होकर आसुरी पाप भावना और बकड़ होती है  
तब तब संसार में तीर्थकरों का अवतार होता है।  
और वे संसार की मोह माया का परित्याग कर, त्याग  
और वैराग्य की अलंकार पूरी रमा कर, अमेडादेड  
अपकर कह कहकर पहले स्वर्ग स्वर्ग की पूर्ण क्थोदि  
का दर्शन करते हैं—जैन धर्माचार के अनुष्ठान केवल

( २४३ )

ज्ञान प्राप्त करते हैं, और फिर मानव संसार को धर्मोपदेश देकर असत्य-प्रपंच के चंगुल से छुड़ाते हैं, सत्य के पथ पर लगाते हैं, और संसार में पूर्ण सुख शान्ति का साम्रज्य स्थापित करते हैं । तीर्थंकरों के शासन काल में प्रायः प्रत्येक भव्य स्त्री पुरुष अपने आप को पहचान लेता है, और 'स्वयं सुख पूर्वक जीना, दूसरों को सुख पूर्वक जीने देना, तथा दूसरों को सुख पूर्वक जीते रहने के लिए अपने सुखों की कुछ भी परवाह न करके अधिक से अधिक सहायता देना'—उक्त महान् सिद्धान्त को अपने जीवन में उतार लेता है । अस्तु, तीर्थंकर वह, जो संसार को सच्चे धर्म का उपदेश देता है, संसार को उस के नाश करने वाली बुराइयों से बचाता है, संसार को भौतिक सुखों की लालसा से हटा कर अध्यात्म सुखों



( २४५ )

जन्म जात शत्रु प्राणी भी द्वेष भाव को छोड़ कर बड़े प्रेम भरे भ्रातृ भाव के साथ पूर्ण शान्त अवस्था में रहते हैं। द्वेष और द्रोह क्या चीज होते हैं, इसका उनके हृदय में भान ही नहीं रहता। क्या मनुष्य, क्या पशु सभी पर अखंड शान्ति का साम्राज्य छाया रहता है। उनकी ज्ञान शक्ति अनन्त होती है। समस्त चराचर विश्व का उन्हें हस्तामलक के समान पूर्ण प्रत्यक्ष ज्ञान होता है। विश्व का कोई भी रहस्य ऐसा नहीं रहता, जो कि उनके ज्ञान में न देखा जाता हो।

जैनधर्म में मानव जीवन की दुर्बलता के अर्थात् मनुष्य की अपूर्णता के सूचक अठारह दोष माने गए हैं।

१—मिथ्यात्व=असत्य विश्वास, २—अज्ञान,

३—कोष, ४—मान, ५—माया=कपट, ६—शोभ,  
 ७—एति=सुन्दर वस्तु के मिलने पर हर्ष, ८—अएति  
 =असुन्दर वस्तु के मिलने पर रोद, ९—निश,  
 १०—शोक, ११—अखीक=मूठ १२—चौर=चोरी  
 १३—मस्तर=बाह, १४—भय १५—दिस, १६—उग=आसक्ति,  
 १७—झीडा=कोल तमारा साच रंग १८—हास्य=हंसी मजाक । ( कुछ मन्त्रों  
 में अष्टारह शोच दूसरे रूप में भी माने गए हैं । )

जब तक मनुष्य इन अष्टारह शोचों से सर्वथा मुक्त नहीं होता तब तक वह आध्यात्मिक शुद्धि के पूर्ण विचारों के पद पर नहीं पहुँच सकता । ज्यों ही वह अष्टारह शोचों से मुक्त होता है, त्यों ही आत्म शुद्धि का महान् ऊँचे स्थान पर पहुँच जाता है और कृष्ण राग अथवा रीति के द्वारा समस्त विषय का

ज्ञाता द्रष्टा बन जाता है। तीर्थंकर भगवान् भी अट्टारह दोषों से सर्वथा रहित होते हैं। एक भी दोष अणुमात्र अंश में भी उनमें नहीं होता।

### तीर्थंकर ईश्वरीय अवतार नहीं हैं

अजैन संसार जैन तीर्थंकरों के प्रति बहुत कुछ आन्त धारणाएँ रखता है। खेद है कि—इतिहास सम्बद्ध लाखों वर्षों से अजैन-संसार का जैन-संसार के साथ निकट सम्बन्ध चला आ रहा है, फिर भी उसने निष्पक्षपात दृष्टि से कभी सत्य को परखने की चेष्टा न की।

कुछ लोग कहते हैं कि—जैनी अपने तीर्थंकरों को ईश्वर का अवतार मानते हैं। मैं उन बन्धुओं से कहूँगा कि वे भूल में हैं। जैन धर्म ईश्वरवादी नहीं है। वह किसी एक संसार का कर्ता, धर्ता, संहर्ता



( २५८ )

ईश्वर को नहीं मानता । उसकी यह मान्यता थी है कि हजार मुन्हाओं बाँटा हुआ वह नारा करने वाला भक्तों का प्रहसन करने वाला सर्वथा परोक्ष, कोई एक ईश्वर है; और यह क्या समय जस्त संस्कार पर क्या-भाव लाकर गो-श्लोक सत्य-श्लोक का बैकुण्ठ धाम कर्त्ति से शोका हुआ संस्कार में जाता है किसी के यहाँ जन्म होता है और फिर कीला दिनाकर बाधित लोट जाता है । अबका नहीं करी है नहीं बैठा हुआ ही संस्कार पत्रिका को सूँ फेर देता है और मन चाहा सा बजा देता है अर्थात् कर दिनाकर है ।

वैमर्षम में समुच्च से बढ़कर और कोई दूसरा सम्प्रदाय प्रणीत नहीं है । वैन सम्प्रदाय में जान नहीं करी भी देखेंगे समुच्चों को सम्बोधन करते हुए

( २४६ )

‘देवाणुप्पिय’ शब्द का प्रयोग हुआ पायेंगे। उक्त सम्बोधन का यह भावार्थ है कि ‘देव-संसार भी मनुष्य के आगे तुच्छ है। वह भी मनुष्य के प्रति प्रेम, श्रद्धा एवं आदर का भाव रखता है। मनुष्य अगाध अनन्त शक्तियों का प्रभवस्थान है। वह दूसरे शब्दों में स्वयं सिद्ध ईश्वर है, परन्तु संसार की मोहमाया के कारण कर्म मल से आच्छादित है, अतः बादलों से ढका हुआ सूर्य है, कुछ भी प्रकाश नहीं फैक सकता।

परन्तु व्यों ही वह अपने होश में आता है, अपने वास्तविक स्वरूप को पहचानता है, दुर्गुणों को त्याग कर सद्गुणों को अपनाता है; तो धीरे धीरे निर्मल शुद्ध एवं स्वच्छ होता चला जाता है, और एक दिन जगमगाती हुई शक्तियों का पुञ्ज बन

कर माम्बदा के पूर्ण विकास की कोख पर पहुँच कर सर्वज्ञ, सर्वदर्शी, ईश्वर, परमात्मा हुए, हुआ बन जाया है । तदन्तर जीवमुक्त दशा में संसार को सत्य का प्रकाश होता है और जन्म में निर्वास पाकर मोह-बरा में सदा कष्ट के क्षिप अमर, अमर अविनाशी-जैन-परिभाषा में सिद्ध होजाया है ।

अस्तु तीर्थंकर भी मनुष्य ही होते हैं, वे कोई अजीब ऐसी सृष्टि के मायी ईश्वर के अवतार या ईश्वर के अंश बंश कुछ नहीं होते । एक दिन वे भी हमारी दुन्हायी तरह ही वासनाओं के गुह्यम से प्रापमग्न संसित के संसार के दुःख शोक व्याधि व्याधि से संव्रस्त ब । सत्य क्या है असत्य क्या है—यह कहीं कुछ भी पता नहीं था । इन्द्रिय सुख ही एकमात्र ज्ञेय था और उधी कल्पन के पीछे

अनादि काल से नाना प्रकार के क्लेश उठाते, जन्म मरण के संक्रावात में चक्कर खाते घूम रहे थे । परन्तु अपूर्व पुण्योदय से सत्पुरुषों का संग मित्रा, चैतन्य और जड़ का भेद समझा, भौतिक एवं आध्यात्मिक सुख का महान् अन्तर ध्यान में आया, फलतः झटपट ससार की वासनाओं से मुँह मोड़कर सत्य पथ के पथिक बन गए, आत्म-सयम की साधना में लगातार अनेक जन्म बिताए और अन्त में एक दिन वह मनुष्य-भव प्राप्त किया कि उस में महान् तीर्थंकर के रूप में प्रगट हो गए । उस जन्म में भी यह नहीं कि किसी राजा महाराजा के यहाँ जन्म लिया और वयस्क होने पर भोग विलास करते हुए ही तीर्थंकर हो गए । सब कुछ राज्य वैभव छोड़ना होता है, पूर्ण अहिंसा, पूर्ण सत्य, पूर्ण अस्तेय, पूर्ण

महाचर्य और पूर्ण सन्तोष की स्थिति में विनम्र-गुण  
 जुटा रहना होता है, पूर्ण स्थानी छात्र बनकर ब्रह्मन्त्र  
 निर्जन स्थानों में अत्यन्त मनन करना होता है, अनेक  
 प्रकार के आध्यात्मिक, आधिदैविक एवं आध्यात्मिक  
 पुस्तकों का पूर्ण शक्ति के साथ सहन कर माध्यात्मिक  
 शत्रु पर भी अन्तर्द्वेष से ब्रह्मन्त्र का शीतल करने  
 ब्रह्माज्ञा होता है तब कहीं पापमय से मुक्ति होने पर  
 कर्म-ज्ञान और केवल इशान की प्राप्ति के द्वारा  
 तीर्थंकर पर प्राप्त होता है ।

### तीर्थंकरों का पुनरागमन नहीं

मैं एक जैन मित्र हूँ और प्रायः सब ओर प्रमाण  
 कर उपदेश देना मेरा कर्तव्य है । अतः, बहुत से  
 स्थानों में अनेक बन्धुओं द्वारा यह शक्ति बतलाई गई  
 है कि जैनो में २५ ईश्वर का देव हैं जो प्रत्येक

कालचक्र में घारी-बारी से जन्म लेते हैं और धर्मो-पदेश देकर पुनः अन्तर्धान हो जाते हैं।' इस शका का समाधान कुछ तो पहले ही कर दिया गया है। फिर भी स्पष्ट शब्दों में यह बात बतला देना चाहता हूँ कि—जैन धर्म में ऐसा अवतारवाद नहीं माना गया है। अवतल तो अवतार शब्द ही जैन-परिभाषा का नहीं है। यह एक वैदिक परम्परा का शब्द है, जो उसकी मान्यता के अनुसार विष्णु के बार-बार जन्म लेने के रूप में राम, कृष्ण आदि सत्पुरुषों के लिए आया है। आगे चलकर यह मात्र महापुरुष का द्योतक रह गया और इसी कारण आजकल के जैन बन्धु भी किसी के पूछने पर झटपट अपने यहाँ २४ अवतार बता देते हैं एवं तीर्थंकरों को अवतार कह देते हैं। परन्तु इसके पीछे किसी एक व्यक्ति द्वारा

बार-बार जन्म लेते ही प्राप्ति भी नहीं पाई है जिसको छोड़ कर बोध बनना मैं अब विरहास कर गया कि ९४ तीर्थंकर जैसे हुए हैं और वे ही बार-बार जन्म लेते हैं संसार का उद्धार करते हैं और फिर अपने स्थान में आ बिठावते हैं ।

बौद्धधर्म में मोक्ष में जाने के बाद संसार में पुनरागमन नहीं माना जाता । विरह का प्रत्येक निबन्ध कार्य-कारण के रूप में सम्भव है । विन्य कारण के कभी कार्य नहीं हो सकता । बीज होगा तभी अंकुर हो सकता है भागा होगा तभी बल हो सकता है । अस्तु आवागमन का जन्म-मरण पाने का कारण कर्म है और वे मोक्ष अवस्था में रहते नहीं । अतः कोई भी निवारणार्थ सज्जन समझ सकता है कि—जो आस्था कर्म-फल से मुक्त होकर मोक्ष का

( २५५ )

चुका, वह फिर संसार में कैसे आ सकता है ? बीज तभी तक उत्पन्न हो सकता है, जब तक कि वह भुना नहीं है, निर्जीव नहीं हुआ है । जब बीज एक बार भुन गया, तो फिर कभी तीन काल में भी उत्पन्न नहीं हो सकता । जन्म-मरण अंकुर का बीज कर्म है, उसे तपश्चरण आदि धर्म-क्रियाओं से जला दिया, तो बस फिर सदा काल के लिए अजर अमर । एक प्राचीन जैन आचार्य ने इस सम्बन्ध में क्या ही अच्छा कहा है—

दग्धे बीजे यथाऽत्यन्त,

प्रादुर्भवति नाकुरः ।

कर्म-बीजे तथा दग्धे,

न रोहति भवाकुरः ॥

बहुत दूर चला आया हूँ, परन्तु विषय को स्पष्ट





होती हैं। जैनधर्म किसी एक व्यक्ति, जाति या समाज के पीछे ही मुक्ति का ठेका नहीं रखता। उसकी उदार दृष्टि में तो हर कोई मनुष्य—चाहे वह किसी भी देश, जाति, समाज या धर्म का हो, जो अपने आप को बुराइयों से बचाता है, आत्मा को अहिंसा, क्षमा, सत्य, शील आदि मद्गुणों से पवित्र बनाता है, वह मुक्त हो सकता है।

तीर्थंकरों में और अन्य मुक्त होने वाले महा-पुरुषों में आन्तरिक शक्तियों की घाबत कोई भेद नहीं है। केवल-ज्ञान, केवल-दर्शन आदि आत्मिक शक्तियाँ सभी मुक्त होने वालों में एक-सा होती हैं। जो कुछ भेद है, वह धर्म-प्रचार की मौलिक दृष्टि का और अन्य योग सम्बन्धी अद्भुत शक्तियों का। तीर्थंकर महान् धर्म-प्रचारक होते हैं, वे अपने अद्वि-



इतने विशाल स्वामी ही । साधारण मुक्त पुरुष अपना लक्ष्य अवश्य प्राप्त कर लेते हैं, परन्तु जनता पर अपना चिरस्थायी एवं अलुण्ण प्रभुत्व नहीं बैठा पाते । यही भेद है, जो तीर्थंकर और अन्य मुक्त पुरुषों में अन्तर डालता है ।

प्रस्तुत विषय के साथ लगती हुई यह बात भी स्पष्ट किये देता हूँ कि यह भेद मात्र जीवन्मुक्त दशा में अर्थात् देहधारी अवस्था में ही है । मोक्ष में पहुँच जाने के बाद कोई भी भेद-भाव नहीं रहता । वहाँ तीर्थंकर और अन्य मुक्त पुरुष सभी एक ही स्वरूप में रहते हैं । क्यों कि जब तक जीवात्मा जीवन्मुक्त दशा में रहता है, तब तक तो प्रारब्ध-कर्म भोगने बाकी रहते हैं, अतः उनके कारण जीवन में भेद रहता है । परन्तु देहमुक्त दशा में, मोक्ष में तो कोई



( २६१ )

समवशरण ( धर्मसभा ) में अहिंसा का अखंड राज्य होता है । सिंह और मृग आदि परस्पर विरोधी भी एक साथ प्रेम से बैठे रहते हैं । न सिंह में मारक वृत्ति रहती है और न मृग में भय-वृत्ति । अहिंसा के देवता के सामने हिंसा का अस्तित्व भला कैसे रह सकता है ?

ऊपर कुछ बातें असम्भव जैसी मालूम होती हैं; परन्तु आध्यात्मिक योग के सामने ये कुछ भी असम्भव नहीं हैं । आजकल भौतिक विद्या के चमत्कार ही कुछ कम आश्चर्यजनक नहीं हैं, तब आध्यात्मिक विद्या के चमत्कारों का तो कहना ही क्या ? आज के साधारण योगी भी कभी-कभी अपने चमत्कारों से मानव-बुद्धि को हतप्रभ कर देते हैं, तो फिर तीर्थंकर देव तो योगिराज हैं । उनके



हित हुए । बाद में राज्य-त्याग कर दीक्षा ग्रहण की और कैवल्य पाया । आपका जन्म चैत्र कृष्णा अष्टमी को और निर्वाण=मोक्ष माघ कृष्णा त्रयोदशी को हुआ । आप की निर्वाण-भूमि कैलाश पर्वत है । ऋग्वेद, विष्णु पुराण, अग्नि पुराण, भागवत आदि जैनेतर वैदिक साहित्य में भी आपका गुण कीर्तन किया गया है ।

(२) भगवान् अजितनाथजी दूसरे तीर्थंकर थे । आपका जन्म अयोध्या नगरी के इक्ष्वाकुवंशीय क्षत्रिय सम्राट् जितशत्रु राजा के यहाँ हुआ । आपकी माता का नाम विजयादेवी था । भारतवर्ष के दूसरे चक्रवर्ती सम्राट् आपके चचा सुमित्रविजय के पुत्र थे । आपका जन्म माघ शुक्ला अष्टमी को और निर्वाण चैत्र शुक्ला पंचमी को हुआ । आपकी निर्वाण-भूमि



सम्मेदशिक्षर है, जो व्यास-ऋषि बंगाल में करकण्ठ पहाड़ के नाम से प्रसिद्ध है ।

(१) भगवान् संमन्नायकी टीकरी टीर्थकर के आपका जन्म जाबली नगरी में हुआ । आपके पिता का नाम इन्द्राक्षरशीय महापद्म भित्ति और माता का नाम सेना देवी था । आपने पूरे जन्म में विद्वत्-बाहुन राजा के रूप में अत्यन्त प्रजा का पालन किया था और अपना सब कोप हीनों के विचारों से दूर रखा था । आपका जन्म मार्गशीर्ष शुक्ल चतुर्दशी को और निर्वाण पौष शुक्ल पंचमी को हुआ । आप की निर्वाण-मिति भी सम्मेदशिक्षर है ।

(४) भगवान् अमिनन्दनरायकी जीवे टीर्थकर थे । आपका जन्म अशोक नगरी के इन्द्राक्षरशीय राजा संवर के यहाँ हुआ । आपकी माता का नाम

सिद्धार्था था । आपका जन्म माघ शुक्ला द्वितीया को और निर्वाण वैशाख शुक्ला अष्टमी को हुआ । आपकी निर्वाण-भूमि सम्मेदशिखर है ।

(५) भगवान् सुमतिनाथ पाँचवें तीर्थकर थे । आपका जन्म अयोध्या नगरी (कौशलपुरी) में हुआ । आपके पिता महाराजा मेघरथ और माता सुमगला देवी थीं । आपका जन्म वैशाख शुक्ला अष्टमी को और निर्वाण चैत्र शुक्ला नवमी को हुआ । आपकी निर्वाण भूमि भी सम्मेदशिखर है । आप जब गर्भ में आये, तब आपकी माता की बुद्धि बहुत स्वच्छ और तीव्र हो गई थी, अतः आपका नाम सुमतिनाथ रक्खा गया ।

(६) भगवान् पद्मप्रभ छठे तीर्थकर थे । आपका जन्म कौशाम्बी नगरी के राजा भीधर के यहाँ हुआ ।

माता का नाम सुसोमा वा । जन्म कथितं कृष्ण  
 द्वादशी को और निर्वाण मार्गेश्वर कृष्ण पञ्चदशी  
 को हुआ । आपकी निर्वाण-भूमि भी सम्मोदशितर है ।

(७) भगवान् सुपारबन्ताव पाठवें तीर्थकर थे ।  
 आपकी जन्म-भूमि काली (बमारस) पित्त प्रतिष्ठित  
 राजा और माता पुष्पी । आपका जन्म कुरुक्षेत्र  
 द्वादशी को और निर्वाण भाद्रपद कृष्ण सप्तमी को  
 हुआ । निर्वाण-भूमि सम्मोदशितर है ।

(८) भगवान् चन्द्रप्रभ पाठवें तीर्थकर थे ।  
 आपकी जन्मभूमि चन्द्रपुरी बगरी, पित्त महासेव  
 राजा और माता कर्मका । आपका जन्म शिव  
 द्वादशी को और निर्वाण भाद्रपद कृष्ण सप्तमी को  
 हुआ । निर्वाण-भूमि सम्मोदशितर ।

(९) भगवान् सुनिबिन्दुवन्ती (पुष्पवंत) तीर्थ

( २६७ )

कर थे । आपकी जन्म-भूमि काकन्दी नगरी, पिता सुग्रीव राजा, माता रामादेवी । आपका जन्म मार्गशीर्ष कृष्ण पंचमी को और निर्वाण भाद्रपद शुक्ला नवमी को हुआ । निर्वाण-भूमि सम्मेदशिखर है ।

(१०) भगवान् शीतलनाथ दशवें तीर्थकर थे । आपकी जन्म भूमि भद्रिलपुर नगरी । पिता हृदरथ राजा और माता नन्दारानी । जन्म माघ कृष्ण द्वादशी को और निर्वाण वैशाख कृष्ण द्वितीया को हुआ । निर्वाण-भूमि सम्मेदशिखर ।

(११) भगवान् श्रेयासनाथजी ग्यारहवें तीर्थकर थे । आपकी जन्म-भूमि सिंहपुर नगरी, पिता विष्णुसेन राजा और माता विष्णुदेवी । आपका जन्म फाल्गुण कृष्ण द्वादशी को और निर्वाण श्रावण कृष्ण तृतीया को हुआ । निर्वाण-भूमि सम्मेद

( २१८ )

शिक्षर । मगवान् महावीर ने पूर्व जन्मों में त्रिपटु  
बाहुर्दर के रूप में श्री जेठासनाबजी के चरणों में  
करवेरा प्राप्त किया था ।

(१२) मगवान् बाहुपूम्पजी काटखें तीर्थकर थे ।  
आपकी जन्म-भूमि चम्पा नगरी, पिता बाहुपूम्प  
राजा और माता जयदेवी । आपका जन्म चतुर्गुप्त  
कृष्ण बाहुर्दरा को और निर्वाण व्यासद रुद्रा  
बाहुर्दरा को हुआ । निर्वाण-भूमि चम्पा नगरी ।  
आप बाह्म जयचारी रहे विवाह नहीं कइया ।

(१३) मगवान् विमलनाथजी तेरहवें तीर्थकर  
थे । आपकी जन्मभूमि कम्पिऊपुर नगरी, पिता  
कदंबरा राजा और माता रणमदेवी । जन्म माघ  
रुद्रा पृथ्वी को और निर्वाण व्यासद कृष्ण सप्तमी  
को हुआ । निर्वाण-भूमि चम्पेदशिक्षर ।

( २६६ )

(१४) भगवान् अनन्तनाथजी चौदहवें तीर्थंकर थे । आपकी जन्म-भूमि अयोध्या नगरी, पिता सिंह-सेन राजा और माता सुयशा । जन्म वैशाख कृष्ण तृतीया को और निर्वाण चैत्र शुक्ला पंचमी को हुआ । निर्वाण भूमि सम्मेद शिखर ।

(१५) भगवान् धर्मनाथजी पंद्रहवें तीर्थंकर थे । आपकी जन्म-भूमि रत्नपुर नामक नगरी, पिता भानुराजा और माता सुव्रता । जन्म माघ शुक्ला तृतीया को और निर्वाण ज्येष्ठ शुक्ला पंचमी को हुआ । निर्वाण-भूमि सम्मेदशिखर ।

(१६) भगवान् शान्तिनाथजी सोलहवें तीर्थंकर थे । आपका जन्म हस्तिनापुर के राजा विश्वसेन की अचिरा रानी से हुआ । जन्म ज्येष्ठ कृष्ण त्रयोदशी को और निर्वाण भी इसी तिथि को हुआ । निर्वाण-

( १७० )

भूमि सम्मोदशिवर । आप माछ के पंचम बरबर्ती  
 राजा भी थे । आप के जन्म होने पर देश में फैली  
 हुई मृगी रोग की महामारी शान्त हो गई । इसलिध  
 आपका नाम शान्तिनाथ रक्खा गया । आप बहुत ही  
 दयलु प्रकृति के थे । पहले जन्म में आपने कबूतर की  
 रक्षा के लिए बरसे में शिकारी को अपने हाथों का  
 मोल छुट कर दे दिया था ।

(१७) भगवान् कुम्भनाथजी चत्वार्षे तीर्थंकर  
 थे । आपका जन्म-स्थान इस्तिनागपुर सिता सूरपवा  
 माता भीरेशी । जन्म बैराज कुम्भ बतुरेशी का  
 और निर्वास बैराज कुम्भ प्रतिष्ठा ( पद्म ) को  
 हुआ । निर्वास-भूमि सम्मोदशिवर । आप माछ के  
 छठे बरबर्ती राजा भी थे ।

(१८) भगवान् भरनाथजी चत्वार्षे तीर्थंकर

थे । आप का जन्म-स्थान हस्तिनागपुर, पिता सुदर्शन राजा, और माता श्रीदेवी । आपका जन्म मार्गशीर्ष शुक्ला दशमी को और निर्वाण भी मार्गशीर्ष ( मगसिर ) शुक्ला दशमी को ही हुआ । निर्वाण-भूमि सम्मेदशिखर । आप भारत के सातवें चक्रवर्ती राजा भी हुए ।

( १६ ) भगवान् मल्लिनाथजी उन्नीसवें तीर्थंकर थे । आपका जन्म-स्थान मिथिला नगरी, पिता कुम्भराजा, और माता प्रभावतीदेवी । आपका जन्म मार्गशीर्ष शुक्ला द्वादशा को हुआ । निर्वाण भूमि सम्मेदशिखर है । आप वर्तमान कालके चौबीस तीर्थंकरों में स्त्री तीर्थंकर थे । आपने विवाह नहीं किया, आजन्म ब्रह्मचारी रहे । स्त्री होकर आपने बहुत व्यापक भ्रमण किया और धर्म-प्रचार किया । आपने चालीस हजार





( २७३ )

(२२) भगवान् नेमिनाथजी बाईसवें तीर्थंकर थे ।  
 आपका दूसरा नाम अरिष्टनेमि भी था । आपकी जन्म-  
 भूमि आगरा के पास शौरीपुर नगर, पिता यदुवश के  
 राजा समुद्रविजयजी, और माता शिवादेवी- । जन्म  
 श्रावण शुक्ला पंचमी को और निर्वाण आषाढ शुक्ला  
 अष्टमी को हुआ । निर्वाण भूमि काठियावाड़ में गिर-  
 नार पर्वत है, जिसे पुराने युग में रेवतगिरि भी  
 कहते थे । भगवान् अरिष्टनेमिजी कर्मयोगी श्रीकृष्ण  
 चन्द्रजी के ताऊ के पुत्र भाई थे । कृष्णजी ने आपसे  
 ही धर्मोपदेश सुना था । आप बड़े ही कोमल-प्रकृति  
 के महापुरुष थे । आपका विवाह सम्बन्ध महाराजा  
 चप्रसेन की-सुपुत्री राजीमती से निश्चित हुआ था,  
 किन्तु विवाह के अवसर पर बरातियों के भोजन के  
 लिए पशु बध होता देख कर विरक्त हो मुनि-वन

गण, पिबाहू नहीं करुण ।

(२३) भगवान् पार्ष्णनाथजी तेई घरें तीर्बकर बे ।  
 व्यापकी बन्म भूमि करी बेश बजारस मगरी पिठा  
 भरषसेन एडा और माठा बामादेवी । बन्म रौप  
 कृष्ण दरामी और निर्बाण नाथस गुणज्ञा चहरी ।  
 निर्बाण-भूमि सन्मेश शिखर । व्यापने कमठ लफ्फरी  
 को नोप दिधा बा और बसकी घूरी में से बहते हुए  
 माग लगरी को बचावा बा ।

(२४) भगवान् महावीर चौबीसवें तीर्बकर बे ।  
 व्यापकी बन्म भूमि बौराणी ( बन्मि कृष्ण ) पिठा  
 सिद्धाब एडा और माठा तिराबदेवी । बन्म रौप  
 गुणज्ञा बपोदरी और निर्बाण कार्विक कृष्ण पौरस ।  
 निर्बाण-भूमि पावापुरी । भगवान् महावीर बड़े ही  
 बत्कृष्ण रवागी पुरष बे । घाट बरें में सबेस पीछे हुए

( २७५ )

हिंसामय यज्ञों का निषेध आपके ही द्वारा हुआ था ।  
बौद्ध साहित्य में भी आपका उल्लेख आता है । बुद्ध  
आपके समकालीन थे । आज-कल भगवान् महावीर  
का ही शासन चल रहा है ।

(जैनत्व की भाँकी से वद्वधृत)



## २४ चौबीस ही तीर्थंकर क्यों होते हैं ?

मिथ-महाभुमाव, प्रत्येक भद्र चक्र के हिस्सब से चतुर्विंशति तीर्थंकर ही हो सकते हैं यथा—

- १—श्री ऋषभदेवजी म० हुए १८ कोटा कोसी  
सागर पीछे ।
- २— " अश्विनाथजी " २ सात कोट सागर बाएँ हुए
- ३— " संभवाथजी " ३ " " "
- ४— " अमिनंदन " १ " " "
- ५— " सुमति " ५ " " "
- ६— " पद्म प्रभुजी " ६ " " "
- ७— " सुपार्ष्णथजी " ७ " " "
- ८— " चन्द्रप्रभुजी " ८ " " "

( २७७ )

- ६—श्री सुविधिनाथजी,, ६० क्रोड़ ,, ,,
- १०— ,, शीतलनाथजी ,, ६ ,, ,, ,,
- ११— ,, श्रेयास ,, ,, १ क्रोड़ सागर में सौ  
सागर ६६ लाख २६ हजार वर्ष कम
- १२— ,, वासुपूज्य स्वामी जी म० ५४ सागर ,,
- १३—श्री विमलनाथजी म० ३० ,, ,,
- १४—श्री अनन्त ,, ६ ,, ,,
- १५—श्री धर्मनाथ ,, ४ ,, ,,
- १६— ,, शान्तिनाथ ,, ३ सागर में पौन  
पल्य कमती
- १७— ,, कुंथुनाथ ,, अर्द्ध पल्य ,,
- १८— ,, अहनाथ ,, पाव पल्य में १  
क्रोड़ १ हजार वर्ष कम
- १९— ,, मल्लीनाथ ,, एक क्रोड़ ८ हजार वर्ष ,,

( २४८ )

- २०—श्री मुनिमुद्रत स्वा० म० २४ कात्त वर्ष ॥  
 २१—श्री नमिनामस्मी म० ६ कात्त वर्ष ॥  
 २२— ॥ अरिष्ट तेमि ॥ ५ ॥ ॥  
 २३—श्री पार्वन्त्य ॥ ८२५२० वर्ष ॥  
 २४— महाबोर स्वा २५ वर्ष ॥

इस काल तक के ज्योतिष से प्रत्येक कात्त तक में  
 ४ ही तीर्थकर देखाभिनेय होते हैं ।

**विवाह किन किन तीर्थकरों का हुवा—  
 या न हुआ ।**

- १ से १८ में एक तीर्थकरों का विवाह हुआ—  
 १९ में से २२ ॥ ॥ ॥ नहीं हुआ—  
 २३ २४ में तीर्थकरों का विवाह हुआ—

# तीर्थंकर कौन २ से स्वर्ग से आये थे वहां क्या २ स्थिति थी

|                             |                         |
|-----------------------------|-------------------------|
| १-सर्वार्थसिद्धि से-३३ सागर | १३-सहस्रार देव-१८ सागर  |
| २-विजय विमान-३२ ,,          | १४-प्राणत देवलोक २० ,,  |
| ३-७ वें प्रैवेयक- २६,,      | १५-विजय विमान ३२ ,,     |
| ४-जयंत विमान-३२ ,,          | १६-सर्वार्थसिद्धिवि. ३३ |
| ५- ,, ,, ,,                 | १७- ,, ,, ,, ,,         |
| ६-६ वें प्रैवेयक- ३१ ,,     | १८- ,, ,, ,, ,,         |
| ७-६ वें प्रैवेयक- २८ ,,     | १९-जयंत विमान ३२ ,,     |
| ८-विजय विमान-३२ ,,          | २०-अपराजित वि० ,, ,,    |
| ९-आण देवलोक १६ ,,           | २१-प्राणत देव २० ,,     |
| १०-प्राणत ,, २० ,,          | २२-अपराजित वि० ३२ ,,    |
| ११-अच्युतदेव २२ ,,          | २३-प्राणत देवलोक २० ,,  |
| १२-प्राणत देवलोक २० ,,      | २४- ,, ,, ,, ,,         |



( २८० )

२४ तीर्थंकरों के कुल का क्या २ गोत्र

१—१६ तक इषवाङ्ग बंरा— (गोत्र)

१०—१२ वें तक हरिवंश (n)

२१—२३—२४ वें तक इषवाङ्ग n ( )

२४ तीर्थंकर म० के शरीर का वर्ण

१ से ३ तक कांचन वर्ण के ( पीला रंग )

४ वां १२ वां कांचन वर्ण के

७ वां कांचन वर्ण का

८ वां ६ वां का रवेत रंग का

९ वां कांचन वर्ण के

११ " "

१३ "

१४ " "

( २८१ )

१५ वा काचन वर्ण

१६ „ „

१७ „ „

१८ „ „

१९ वाँ २३ वाँ का हरा वर्ण

२० वाँ २२ वाँ का श्याम वर्ण

२१ वाँ २४ वाँ का काचन वर्ण

## २४ तीर्थंकरों की जन्म भूमि ( नगरी के नाम )

१. विनीता नगरी

५. अयोध्या नगरी

२. अयोध्या „

६ कौसुम्बी „

३ सावत्थी „

७. बनारसी „

४. अयोध्या „

८. चन्द्रपुरी „

( २८९ )

|                   |              |      |
|-------------------|--------------|------|
| ६ काकम्भी नगरी    | १७ गजपुर     | नगरी |
| १० महिषपुर        | १८ गजपुर     | "    |
| ११ सिंहपुरी       | १९ मधुघा     | "    |
| १२ चम्पापुरी ,    | २० राजगृही   | "    |
| १३ कम्भिषपुर नगरी | २१ मधुरा     | "    |
| १४ अजोध्या "      | २२ सौरीपुर   | "    |
| १५ रत्नपुरी "     | २३ बनारसी    | "    |
| १६ गजपुर नगरी     | २४ इति कुम्ह |      |

( २४ तीर्थंकर की अवण तिथि इस प्रकार हैं ) ।

|                   |                 |
|-------------------|-----------------|
| १ भाद्रपद कृष्ण ४ | ४ वैशाख शुक्ल ४ |
| २ वैशाख शुक्ल १३  | ५ भाद्रपद ९     |
| ३ फाल्गुण ८       | ६ माघ कृष्ण ६   |

( २८३ )

|                      |                      |
|----------------------|----------------------|
| ७. भाद्रव कृष्णा ८   | १६. भाद्रव कृष्णा ७  |
| ८ चैत्र ,, ५         | १७. श्रावण ,, ६      |
| ९. फाल्गुण ,, ६      | १८. फाल्गुण शुक्ला २ |
| १० वैशाख ,, ६        | १९. ,, ,, ४          |
| ११ ज्येष्ठ ,, ६      | २० श्रावण ,, १५      |
| १२. ज्येष्ठ शुक्ला ६ | २१ आश्विन ,, १५      |
| १३. वैशाख शुक्ला १०  | २२ कार्तिक ,, १२     |
| १४ श्रावण कृष्णा ७   | २३ चैत्र कृष्णा ४    |
| १५ वैशाख शुक्ला ७    | २४ आपाद शुक्ला ६     |

२४ तीर्थंकरों के जन्म समय क्या  
नक्षत्र थे ? ये थे ।

|                       |             |         |
|-----------------------|-------------|---------|
| १. उत्तराषाढा नक्षत्र | ३ मृगशिर    | नक्षत्र |
| २ रोहिणी ,,           | ४. पुनर्वसु | ,,      |

( २८४ )

|                     |    |                     |    |
|---------------------|----|---------------------|----|
| ३ मषा               | त० | १३. पुष्प           | त० |
| ४ चित्रा            | "  | १४. मरुषी           | "  |
| ७ विशाखा            | "  | १५. कुटिम्ब         | "  |
| ८ अश्लेषा           | "  | १८. रेवती           | "  |
| ९ मूल               | "  | १६. अरिषदी          | "  |
| १ पूर्वाषाढा        | "  | २०. मघस             | "  |
| ११ मघा              | "  | २१. अरिषदी          | "  |
| १२. रात्रिषा        | "  | २२. चित्रा          | "  |
| १३. ज्येष्ठ माघपक्ष | "  | २३. विशाखा          | "  |
| १४ रेवती            | "  | २४. ज्येष्ठ अश्लेषा | "  |



( २८५ )

## २४ तीर्थंकरों की जन्मराशि के नाम

|           |      |            |      |
|-----------|------|------------|------|
| १—धन      | राशि | १३—मीन     | राशि |
| २—वृश्चिक | „    | १४—„       | „    |
| ३—मिथुन   | „    | १५—कर्क    | „    |
| ४—मिथुन   | „    | १६—मेष     | राशि |
| ५—सिंह    | „    | १७—वृश्चिक | „    |
| ६—कन्या   | „    | १८—मीन     | „    |
| ७—तुला    | राशि | १९—मेष     | „    |
| ८—वृश्चिक | „    | २०—मकर     | „    |
| ९—धन      | „    | २१—मेष     | „    |
| १०—„      | „    | २२—कन्या   | „    |
| ११—मकर    | „    | २३—तुला    | „    |
| १२—कुम्भ  | „    | २४—कन्या   | „    |

( २८६ )

## २४ तीर्थंकर के शरीर पर चिन्ह हैं उनके नाम

- |                         |                      |
|-------------------------|----------------------|
| १. वृषभ का चिन्ह        | १३. बटार का चिन्ह    |
| २. हाथी का चिन्ह        | १४. सिंघानक का चिन्ह |
| ३. भरव का चिन्ह         | १५. बज्र का चिन्ह    |
| ४. बैरु का चिन्ह        | १६. मृग का चिन्ह     |
| ५. कौबयल्ली का चिन्ह    | १७. धन का चिन्ह      |
| ६. पद्म कमल का चिन्ह    | १८. बन्दावर्तन चिन्ह |
| ७. सावित्र का चिन्ह     | १९. कलश का चिन्ह     |
| ८. चन्द्र का चिन्ह      | २०. कच्छुप का चिन्ह  |
| ९. मकर का चिन्ह         | २१. कमल का चिन्ह     |
| १०. श्रीधरस स्वास्तिक,, | २२. शंख का चिन्ह     |
| ११. गवडा का चिन्ह       | २३. सर्प का चिन्ह    |
| १२. मछी का चिन्ह        | २४. केसरीचिह्न चिन्ह |

( २८७ )

# २४ तीर्थंकर के शरीर की अवगहना ( लम्बाई का प्रमाण )

|             |              |
|-------------|--------------|
| १ ५०० धनुष  | १३ ६० धनुष   |
| २. ४५० धनुष | १४. ५०    "  |
| ३. ४००    " | १५. ४५    "  |
| ४. ३५०    " | १६ ४०    "   |
| ५. ३००    " | १७ ३५    "   |
| ६. २५०    " | १८. ३०    "  |
| ७ २००    "  | १९. २५    "  |
| ८. १५०    " | २०. २०    "  |
| ९. १००    " | २१. १५    "  |
| १० ६०    "  | २२. १०    "  |
| ११ ८०    "  | २३. ६    हाथ |
| १२. ७०    " | २४. ७    "   |

---



( २८ )

## २४ तीर्थंकरों की आयुष्य का प्रमाण

|                 |                 |
|-----------------|-----------------|
| १ ८४ वर्ष पूर्व | १३ ६० वर्ष वर्ष |
| २ ७२ वर्ष पूर्व | १४ २० वर्ष वर्ष |
| ३ ६ वर्ष पूर्व  | १५ १ वर्ष वर्ष  |
| ४ ५ वर्ष पूर्व  | १६ १ वर्ष वर्ष  |
| ५ ४ वर्ष पूर्व  | १७ ६५ हजार वर्ष |
| ६ ३ वर्ष पूर्व  | १८ ८४ हजार वर्ष |
| ७ २ वर्ष पूर्व  | १९ २५ हजार वर्ष |
| ८ १ वर्ष पूर्व  | २ ३ हजार वर्ष   |
| ९ २ वर्ष पूर्व  | २१ १ हजार वर्ष  |
| १० १ वर्ष पूर्व | २२ १ हजार वर्ष  |
| ११ ८४ वर्ष वर्ष | २३ १ शत वर्ष    |
| १२ ७२ वर्ष वर्ष | २४ ७१ वर्ष      |

( २८६ )

# २४ तीर्थंकरों में से राजगद्दी कितनों ने भोगी

|                        |              |                           |
|------------------------|--------------|---------------------------|
| १. ६३                  | लक्ष पूर्व   | १३. ३० लाख वर्ष           |
| २. ५३                  | " "          | १४. १५ " "                |
| ३. ४४                  | " "          | १५. ५ " "                 |
| ४. ३६॥                 | " "          | १६. २५ ह० व० म० चक्रवर्ती |
| ५. २६                  | " "          | १७. २३७५० म० चक्रवर्ती    |
| ६. २१॥                 | " "          | १८. २१ ह० म० चक्रवर्ती    |
| ७. १४                  | " "          | १९. राजगद्दी नहीं भोगी    |
| ८. ६॥                  | " "          | २०. १५ ह० व०              |
| ९. १                   | " "          | २१. ५ ह० व०               |
| १०. ॥                  | " "          | २२. राजगद्दी नहीं भोगी    |
| ११. ४२                 | " जम्बूद्वीप | २३. " "                   |
| १२. राजगद्दी नहीं भोगी |              | २४. २ वर्ष तिलोत्थीपणे    |



( २८ )

# २४ तीर्थंकरों की आयुष्य का प्रमाण

|                 |                 |
|-----------------|-----------------|
| १ ८४ वर्ष पूर्व | १३ ६० वर्ष वर्ष |
| २ ७२ वर्ष पूर्व | १४ ३० वर्ष वर्ष |
| ३ ६ वर्ष पूर्व  | १५ १० वर्ष वर्ष |
| ४ २० वर्ष पूर्व | १६ १ वर्ष वर्ष  |
| ५ ४ वर्ष पूर्व  | १७ ३५ हजार वर्ष |
| ६ ३ वर्ष पूर्व  | १८ ८५ हजार वर्ष |
| ७ २० वर्ष पूर्व | १९ २५ हजार वर्ष |
| ८ १० वर्ष पूर्व | २० ३० हजार वर्ष |
| ९ ९ वर्ष पूर्व  | २१ २० हजार वर्ष |
| १० १ वर्ष पूर्व | २२ १ हजार वर्ष  |
| ११ ८५ वर्ष वर्ष | २३ १ शत वर्ष    |
| १२ ७२ वर्ष वर्ष | २४ ७१ वर्ष      |

( २८६ )

# २४ तीर्थंकरों में से राजगद्दी कितनों ने भोगी

|                        |                           |
|------------------------|---------------------------|
| १. ६३ लाख पूर्व        | १३. ३० लाख वर्ष           |
| २. ५३ " "              | १४. १५ " "                |
| ३ ४४ " "               | १५. ५ " "                 |
| ४. ३६॥ " "             | १६. २५ ह० व० म० चक्रवर्ती |
| ५. २६ " "              | १७. २३७५० म० चक्रवर्ती    |
| ६. २१॥ " "             | १८. २१ ह० म० चक्रवर्ती    |
| ७. १४ " "              | १९. राजगद्दी नहीं भोगी    |
| ८. ६॥ " "              | २०. १५ ह० व०              |
| ९. १ " "               | २१. ५ ह० व०               |
| १०. ॥ " "              | २२ राजगद्दी नहीं भोगी     |
| ११. ४२ " जर्घ          | २३. " "                   |
| १२. राजगद्दी नहीं भोगी | २४. २ वर्ष तिलोमीपये      |



( २१० )

## २४ तीर्थंकरों ने कितनों के साथ दीक्षा ली ।

| १  | ४ | इक्षार के साथ | १३  | १ | इक्षार साथ |
|----|---|---------------|-----|---|------------|
| २  | १ | न के          | १४  | १ | न १        |
| ३  | १ | न के न        | १५  | १ | न न        |
| ४  | १ | न के न        | १६  | १ | न न        |
| ५  | १ | न के न        | १७  | १ | न न        |
| ६  | १ | न के न        | १८  | १ | न न        |
| ७  | १ | न के न        | १९  | १ | न न        |
| ८  | १ | न के न        | २०  | १ | न न        |
| ९  | १ | न के न        | २१  | १ | न न        |
| १० | १ | न के न        | २२  | १ | न न        |
| ११ | १ | न के न        | २३  | १ | न न        |
| १२ | १ | न के न        | २४  | १ | न न        |
| १३ | १ | न के न        | २५  | १ | न न        |
| १४ | १ | न के न        | २६  | १ | न न        |
| १५ | १ | न के न        | २७  | १ | न न        |
| १६ | १ | न के न        | २८  | १ | न न        |
| १७ | १ | न के न        | २९  | १ | न न        |
| १८ | १ | न के न        | ३०  | १ | न न        |
| १९ | १ | न के न        | ३१  | १ | न न        |
| २० | १ | न के न        | ३२  | १ | न न        |
| २१ | १ | न के न        | ३३  | १ | न न        |
| २२ | १ | न के न        | ३४  | १ | न न        |
| २३ | १ | न के न        | ३५  | १ | न न        |
| २४ | १ | न के न        | ३६  | १ | न न        |
| २५ | १ | न के न        | ३७  | १ | न न        |
| २६ | १ | न के न        | ३८  | १ | न न        |
| २७ | १ | न के न        | ३९  | १ | न न        |
| २८ | १ | न के न        | ४०  | १ | न न        |
| २९ | १ | न के न        | ४१  | १ | न न        |
| ३० | १ | न के न        | ४२  | १ | न न        |
| ३१ | १ | न के न        | ४३  | १ | न न        |
| ३२ | १ | न के न        | ४४  | १ | न न        |
| ३३ | १ | न के न        | ४५  | १ | न न        |
| ३४ | १ | न के न        | ४६  | १ | न न        |
| ३५ | १ | न के न        | ४७  | १ | न न        |
| ३६ | १ | न के न        | ४८  | १ | न न        |
| ३७ | १ | न के न        | ४९  | १ | न न        |
| ३८ | १ | न के न        | ५०  | १ | न न        |
| ३९ | १ | न के न        | ५१  | १ | न न        |
| ४० | १ | न के न        | ५२  | १ | न न        |
| ४१ | १ | न के न        | ५३  | १ | न न        |
| ४२ | १ | न के न        | ५४  | १ | न न        |
| ४३ | १ | न के न        | ५५  | १ | न न        |
| ४४ | १ | न के न        | ५६  | १ | न न        |
| ४५ | १ | न के न        | ५७  | १ | न न        |
| ४६ | १ | न के न        | ५८  | १ | न न        |
| ४७ | १ | न के न        | ५९  | १ | न न        |
| ४८ | १ | न के न        | ६०  | १ | न न        |
| ४९ | १ | न के न        | ६१  | १ | न न        |
| ५० | १ | न के न        | ६२  | १ | न न        |
| ५१ | १ | न के न        | ६३  | १ | न न        |
| ५२ | १ | न के न        | ६४  | १ | न न        |
| ५३ | १ | न के न        | ६५  | १ | न न        |
| ५४ | १ | न के न        | ६६  | १ | न न        |
| ५५ | १ | न के न        | ६७  | १ | न न        |
| ५६ | १ | न के न        | ६८  | १ | न न        |
| ५७ | १ | न के न        | ६९  | १ | न न        |
| ५८ | १ | न के न        | ७०  | १ | न न        |
| ५९ | १ | न के न        | ७१  | १ | न न        |
| ६० | १ | न के न        | ७२  | १ | न न        |
| ६१ | १ | न के न        | ७३  | १ | न न        |
| ६२ | १ | न के न        | ७४  | १ | न न        |
| ६३ | १ | न के न        | ७५  | १ | न न        |
| ६४ | १ | न के न        | ७६  | १ | न न        |
| ६५ | १ | न के न        | ७७  | १ | न न        |
| ६६ | १ | न के न        | ७८  | १ | न न        |
| ६७ | १ | न के न        | ७९  | १ | न न        |
| ६८ | १ | न के न        | ८०  | १ | न न        |
| ६९ | १ | न के न        | ८१  | १ | न न        |
| ७० | १ | न के न        | ८२  | १ | न न        |
| ७१ | १ | न के न        | ८३  | १ | न न        |
| ७२ | १ | न के न        | ८४  | १ | न न        |
| ७३ | १ | न के न        | ८५  | १ | न न        |
| ७४ | १ | न के न        | ८६  | १ | न न        |
| ७५ | १ | न के न        | ८७  | १ | न न        |
| ७६ | १ | न के न        | ८८  | १ | न न        |
| ७७ | १ | न के न        | ८९  | १ | न न        |
| ७८ | १ | न के न        | ९०  | १ | न न        |
| ७९ | १ | न के न        | ९१  | १ | न न        |
| ८० | १ | न के न        | ९२  | १ | न न        |
| ८१ | १ | न के न        | ९३  | १ | न न        |
| ८२ | १ | न के न        | ९४  | १ | न न        |
| ८३ | १ | न के न        | ९५  | १ | न न        |
| ८४ | १ | न के न        | ९६  | १ | न न        |
| ८५ | १ | न के न        | ९७  | १ | न न        |
| ८६ | १ | न के न        | ९८  | १ | न न        |
| ८७ | १ | न के न        | ९९  | १ | न न        |
| ८८ | १ | न के न        | १०० | १ | न न        |

## २४ तीर्थंकरों का दीक्षा लेते तप

- |               |                |
|---------------|----------------|
| १. घेले का तप | १३. वेले का तप |
| २. „ का तप    | १४. बेले का तप |
| ३. „ का तप    | १५. „ का तप    |
| ४. „ का तप    | १६. „ का तप    |
| ५. नित्य भक्त | १७. „ का तप    |
| ६. एक व्रत    | १८. „ का तप    |
| ७. बेले का तप | १९. तेले का तप |
| ८. „ का „     | २०. वेले का तप |
| ९. „ का „     | २१. बेले का तप |
| १०. „ का „    | २२. घेले का तप |
| ११. „ का „    | २३. बेले का तप |
| १२. „ का „    | २४. वेले का तप |

# २४ तीर्थंकरों की दीक्षा नगरी के नाम

|                   |                     |
|-------------------|---------------------|
| (१) विनीता नगरी   | (१३) कम्बिजपुर नगरी |
| (२) अयोध्या "     | (१४) अयोध्या "      |
| (३) सावली         | (१५) रत्नपुरी "     |
| (४) अयोध्या       | (१६) गङ्गापुर "     |
| (५) " "           | (१७) गङ्गापुर "     |
| (६) कौसुम्बी "    | (१८) " "            |
| (७) बनारसी "      | (१९) मिथला "        |
| (८) बगलपुरी "     | (२०) धनगुप्ती "     |
| (९) काकरी "       | (२१) मधुरा "        |
| (१०) भरिजपुर नगरी | (२२) सौरीपुर "      |
| (११) सिद्धपुरी    | (२३) बनारसी "       |
| (१२) बगलपुरी      | (२४) काशीपुरी "     |

## २४ तीर्थंकरों के प्रथम पारणा स्थान व आहार दोनों

|                        |                       |
|------------------------|-----------------------|
| १-भेयास के घर इक्षुरस  | १३-जयराजा के घर चीरका |
| २-ब्रह्मदत्त " " चीरका | १४-विजयराजा " "       |
| ३-सुरेन्द्र " " "      | १५-धनसिंह के " "      |
| ४-इन्द्रदत्त " " "     | १६-सुमित्र के " "     |
| ५-पद्म " " "           | १७-व्याघ्रसिंह " "    |
| ६-सोमदेव " " "         | १८-अपराजित " "        |
| ७-माहेन्द्र " " "      | १९-विश्वसेन " "       |
| ८-सोमदत्त " " "        | २०-ब्रह्मदत्त " "     |
| ९-पुष्प " " "          | २१-दिनकुमार " "       |
| १०-पुनर्वसु " " "      | २२-वरदिन " "          |
| ११-नन्द " " "          | २३-धन्यनाम " "        |
| १२-सुनन्द " " "        | २४-बाहुल ब्राह्म " "  |



# २४ तीर्थंकरों की दीक्षा तिथि व दीक्षा किस वृद्ध के नीचे ली ।

|                          | वृद्ध | पुत्र | तत्पुत्र |
|--------------------------|-------|-------|----------|
| १—वैश्व कृष्ण ८          | स्य   | "     | "        |
| २—माध कृष्ण ६            | शिव   | "     | "        |
| ३—मार्गशर्वाण्ड शुक्ल १५ | शिव   | "     | "        |
| ४—माध शुक्ल १२           | शिव   | "     | "        |
| ५—वैशाख " ६              | शिव   | "     | "        |
| ६—कनिष्क कृष्ण १३        | शिव   | "     | "        |
| ७—अश्वि शुक्ल १३         | शिव   | "     | "        |
| ८—वैश्व कृष्ण १३         | शिव   | "     | "        |
| ९—मार्गशीर्ष " ६         | शिव   | "     | "        |
| १०—माध १२                | शिव   | "     | "        |
| ११—अश्वि " १३            | शिव   | "     | "        |

|                         |                |
|-------------------------|----------------|
| १२—फाल्गुण कृष्णा १५ -  | पाडल वृक्ष तले |
| १३—माघ शुक्ला ४         | जम्बू " "      |
| १४—वैशाख कृष्णा १४      | अशोक " "       |
| १५—माघ शुक्ला १३        | दधिपर्ण " "    |
| १६—ज्येष्ठ कृष्णा १४    | नन्दी " "      |
| १७—चैत्र " ५            | भीलक " "       |
| १८—मार्गशीर्ष शुक्ला ११ | आम्र " "       |
| १९— " " ११              | अशोक " "       |
| २०—फाल्गुण " १२         | चम्पक " "      |
| २१—असोज कृष्णा ६        | वकुल " "       |
| २२—श्रावण शुक्ला ६      | वैडस " "       |
| २३—पौष कृष्णा ११        | घातकी " "      |
| २४—मार्गशीर्ष " १०      | शाल " "        |

( २६६ )

# २४ तीर्थंकर कौन कौन कितने काल ब्रह्मस्थावस्था में रहे

| १ ब्रह्मस्थ रहे | १ हजार वर्ष |
|-----------------|-------------|
| ९    "          | १९ वर्ष     |
| १०   "          | १४   "      |
| ११   "          | १८   "      |
| १२   "          | १०   "      |
| १३   "          | ६ मघ        |
| १४   "          | ६    "      |
| १५   "          | ३    "      |
| १६   "          | ४    "      |
| १७   "          | ३    "      |
| १८   "          | २    "      |

( २६७ )

|                 |            |
|-----------------|------------|
| १२. छायास्थ रहे | १ वर्ष मास |
| १३. ,           | २ मास      |
| १४. ,           | ३ वर्ष     |
| १५. ,           | २ ,        |
| १६. ,           | १ ,        |
| १७. ,           | १६ ,       |
| १८. ,           | ३ ,        |
| १९. ,           | १ याम      |
| २०. ,           | ११ मास     |
| २१. ,           | ६ ,        |
| २२. ,           | ५४ दिन     |
| २३. ,           | ८३ दिन     |
| २४. ,           | १२ वर्ष    |

( १६८ )

## २४ तीर्थंकर केवल ज्ञान समय तप

|        |                    |
|--------|--------------------|
| १ तेषा | १ एक मव            |
| २ बेसा | ७ से २१ बे एक बेसा |
| ३ कडा  | २२ तेषा            |
| ४ कडा  | २३ तेषा            |
| ५ कडा  | २४ बेसा            |

## २४ तीर्थंकर की केवल ज्ञान तिथियें इस प्रकार थी

|                 |    |                  |    |
|-----------------|----|------------------|----|
| १ कपडगुण कृष्णा | ११ | ६ बैश शुक्ला     | १२ |
| २ वीष           | १२ | ७ कपडगुण कृष्णा  | १३ |
| ३ कार्तिक       | १३ | ८ कपडगुण कृष्णा  | १४ |
| ४ वीष           | १४ | ९ कार्तिक शुक्ला | १५ |
| ५ बैश शुक्ला    | १५ | १० वीष कृष्णा    | १६ |

( २६६ )

|                  |    |                     |    |
|------------------|----|---------------------|----|
| ११. माघ कृष्णा   | ३  | १८. कार्तिक शुक्ला  | १२ |
| १२. माघ शुक्ला   | २  | १९. मृगशीर्ष ,,     | ११ |
| १३. पौष शुक्ला   | ६  | २०. फाल्गुण कृष्णा  | ११ |
| १४. वैशाख कृष्णा | १४ | २१. मृगशीर्ष शुक्ला | ११ |
| १५. पौष शुक्ला   | १५ | २२. आश्विन कृष्णा   | १२ |
| १६. पौष शुक्ला   | ६  | २३. चैत्र कृष्णा    | ४  |
| १७. चैत्र ,,     | ३  | २४. वैशाख शुक्ला    | १० |

२४ तीर्थंकरों के पिता, माता, जन्म मास व तिथि का वर्णन, २४ तीर्थंकर महाराज के लेख में इसी ग्रन्थ के पूर्व आ चुका है, उसमें पाठक पढ़ने का पुरुषार्थ करें ।



# २४ तीर्थंकरों के केवल ज्ञान नगरी

|             |      |             |      |
|-------------|------|-------------|------|
| १ पुरिमठावा | नगरी | १३ कंठिकपुर | नगरी |
| २ अयोध्या   | नगरी | १४ अयोध्या  | नगरी |
| ३ छावली     | "    | १५ रत्नपुरी | "    |
| ४ अयोध्या   | "    | १६ गजपुर    | "    |
| ५ अयोध्या   | "    | १७ गजपुर    | "    |
| ६ कौमुदी    | "    | १८ गजपुर    | "    |
| ७ बनारसी    |      | १९ मिथिला   | "    |
| ८ बम्हापुरी | "    | २० राजपुरी  | "    |
| ९ काशी      | "    | २१ मधुपुर   | "    |
| १० मरिचपुर  | "    | २२ गिरगार   | "    |
| ११ सिद्धपुर | "    | २३ बनारसी   | "    |
| १२ बम्हापुर | "    | २४ राजपुर   | "    |

( ३०१ )

## २४ तीर्थंकरों ने दीक्षा पाली

|                     |                     |
|---------------------|---------------------|
| १ से ८ तक लाख पूर्व | १७. २३७५० वर्ष      |
| ९ आषा               | १८. २१ हजार वर्ष    |
| १० पाव              | १९. ५४६०० हजार वर्ष |
| ११ इक्षीस           | २०. ७॥ हजार वर्ष    |
| १२ चौपन्न           | २१. २॥ हजार वर्ष    |
| १३ पन्द्रह          | २२. ७०० सौ वर्ष     |
| १४ साढे सप्त        | २३. ७० वर्ष         |
| १५ अढाई             | २४. ४२ वर्ष         |

## २४ तीर्थंकरों के गणधरों की संख्या

### मुख्य गणधरों का नाम

|               |               |
|---------------|---------------|
| १-८४ पुण्डरीक | ३-१०२ चारु    |
| २-६५ सिद्धसेन | ४-११६ वज्रनाभ |



( ३०२ )

५-१०० चरम  
 ६-१०० प्रद्योतन  
 ७-६५ विदमौ  
 ८-६३ विप्र  
 ९-८८ वराह  
 १-८९ सम्भ  
 ११-७६ कण्ठप  
 १२-६६ सुमूम  
 १३-५७ मन्दर  
 १४-५ वरा

१५-४३ अरिगन्धर्व  
 १६-३६ चक्र पुष  
 १७-३५ सावि  
 १८-३३ कु भ  
 १९-२८ अश्वि  
 २०-१८ मल्ली  
 २१-१७ सुम  
 २२-११ वराह  
 २३-१० आर्यदिन  
 २४-११ इन्द्रमूर्ति



# २४ तीर्थंकरों के साधुओं की संख्या

|            |             |
|------------|-------------|
| १. ८४०००   | १३. ६८ हजार |
| २. १०००००  | १४. ६६ ,,   |
| ३. २०००००  | १५. ६४ ,,   |
| ४. ३०००००  | १६. ६२ ,,   |
| ५. ३२००००  | १७. ६० ,,   |
| ६. ३३००००  | १८. ५० ,,   |
| ७. ३०००००  | १९. ४० ,,   |
| ८. २५००००  | २०. ३० ,,   |
| ९. २०००००  | २१. २० ,,   |
| १०. १००००० | २२. १८ ,,   |
| ११. ८४०००  | २३. १६ ,,   |
| १२. ७२०००  | २४. १४ ,,   |

( ३०४ )

# २४ तीर्थंकरों के साधियों की संख्या

|             |              |
|-------------|--------------|
| (१) ३ व्यास | (१३) १०६८००० |
| (२) ३३००००  | (१४) ६२०००   |
| (३) ३३६०००  | (१५) ६२४०    |
| (४) ६३ ००   | (१६) ६१३०    |
| (५) ४३ • •  | (१७) ६ ६ •   |
| (६) ४२      | (१८) ६       |
| (७) ४३      | (१९) ४४ ००   |
| (८) ३८०     | (२०) ४ ००    |
| (९) १२ ०००  | (२१) ४१      |
| (१०) १ ६    | (२२) ४ •     |
| (११) १ ३    | (२३) ३८०     |
| (१२) १००    | (२४) ३६      |

( ३०५ )

## २४ तीर्थंकरों के प्रथम साध्वीजी के नाम

(१) ब्राह्मी

(२) फाल्गु

(३) श्यामा

(४) अजिता

(५) काश्यपी

(६) रति

(७) सौमा

(८) सुमना

(९) वारुणी

(१०) सुयशा

(११) धारणी

(१२) धरणी

(१३) धरा

(१४) पद्मा

(१५) आर्यसिवा

(१६) सुचि

(१७) दामिनी

(१८) रक्षिता

(१९) वधुमती

(२०) पुष्पवती

(२१) अनिला

(२२) यक्षदिना

(२३) पुष्प चूडा

(२४) चन्दनमा

( १०१ )

२४ तीर्थंकरों के वैक्रिय लब्धि  
कितने २ थे ।

|          |         |
|----------|---------|
| १—२ १००  | ११—६००  |
| २—२०४००  | १४—८    |
| ३—१६८    | १५—०००० |
| ४—१६     | १६—१    |
| ५—१८४०   | १७—५१   |
| ६—१६१०८  | १८—७३   |
| ७—१५१ सौ | १९—१६   |
| ८—१४     | २०—९    |
| ९—१३     | २१—५    |
| १०—१२    | २२—१५   |
| ११—११    | २३—११   |
| १२— — —  | २४—००   |

— — —

( ३८७ )

## २४ तीर्थंकरों के वादियों की संख्या

|           |         |
|-----------|---------|
| १—१२६५०   | १३—३६०० |
| २—१२४००   | १४—३२०० |
| ३—१२०००   | १५—२८०० |
| ४—११०००   | १६—२४०० |
| ५—१०४००   | १७—२००० |
| ६—६६००    | १८—१६०० |
| ७—८४ सौ   | १९—१४०० |
| ८—७२ सौ   | २०—१२०० |
| ९—६ हजार  | २१—१००० |
| १०—५८ शत  | २२—८००  |
| ११—५ हजार | २३—६००  |
| १२—४७००   | २४—४००  |

( ३०८ )

## २४ तीर्थंकरों के अवधि ज्ञानियों की संख्या

|          |           |
|----------|-----------|
| (१) ६००० | (१३) ४८०० |
| (२) ६४०० | (१४) ४३०  |
| (३) ६६ • | (१५) ३६०० |
| (४) ६८   | (१६) ३ •  |
| (५) ११   | (१७) ३५   |
| (६) १    | (१८) २६०  |
| (७) ६    | (१९) २२०  |
| (८) ८०   | (२०) १८०० |
| (९) ८४   | (२१) १६   |
| (१०) ७२  | (२२) १५०० |
| (११) ६   | (२३) १००  |
| (१२) ५४० | (२४) १६०० |

( ३०६ )

## २४ तीर्थंकरों के मनः पर्यवकों की सं०

|          |          |
|----------|----------|
| १. १२७५० | १३. ५५०० |
| २. १२५५० | १४. ५००० |
| ३. १२१५० | १५. ४५०० |
| ४. ११६५० | १६. ४००० |
| ५. १०४५० | १७. ३३४० |
| ६. १०३०० | १८. २५५१ |
| ७. ६१५०  | १९. १७५० |
| ८. ८०००  | २०. १५०० |
| ९. ७५००  | २१. १२५० |
| १०. ,,   | २२. १००० |
| ११. ६००० | २३. ७५०  |
| १२. ६५०० | २४. ५००  |



# २४ तीर्थंकरों के केवलियों की संख्या

१-२०००

१३-२५००

२-२२

१४-२००

३-१५

१५-४२ \*

४-१४

१६-४३

५-१३

१७-३३

६-१२

१८-२८००

७-११

१९-२२०

८-१ \*

२०-१८००

९-७३

२१-१६ \*

१०-४००

२२-१७ \*

११-४५

२३-१ ००

१२-६

२४-४००

( ३११ )

## २४ तीर्थंकरों के चौदह पूर्वधारी कितने २ थे ।

|          |          |
|----------|----------|
| १. ४७५०  | १३. ११०० |
| २. ३७२०  | १४. १००० |
| ३. २१५०  | १५. ६००  |
| ४. १५००  | १६. ८००  |
| ५. २४००  | १७. ६७०  |
| ६. २३००  | १८. ६१०  |
| ७. २०३०  | १९. ६६८  |
| ८. २०००  | २०. ५००  |
| ९. १५००  | २१. ४५०  |
| १०. १४०० | २२. ४००  |
| ११. १३०० | २३. ३५०  |
| १२. १२०० | २४. ३००  |



( ३१२ )

# २४ तीर्थंकरों के वारह व्रतधारी भावकों की संख्या

|         |            |
|---------|------------|
| १ ३५०   | १३. २०८०   |
| २ २६८ ० | १४ २०५०००  |
| ३ २३३०  | १५ २ ४००   |
| ४ २८८   | १६. १६ ००० |
| ५ २८१   | १७ १७६     |
| ६ २७६ * | १८ १८४०    |
| ७ २५७ * | १९. १८३००  |
| ८ २५    | २ १७२ *    |
| ९ २२६   | २१ १७० *   |
| १० २०८  | २२ १६६००   |
| ११ २७६  | २३. १६४०   |
| १२. २१५ | २४ १५६     |



( ३१३ )

## २४ तीर्थंकर के बारह व्रत धारिका श्राविकाओं की संख्या

|            |            |
|------------|------------|
| १. ५५४०००  | १३. ४२४००० |
| २. ५४५०००  | १४. ४१४००० |
| ३. ६३६०००  | १५. ४१३००० |
| ४. ५२७०००  | १६. ३६३००० |
| ५. ५१६०००  | १७. ३८१००० |
| ६. ५०५०००  | १८. ३७२००० |
| ७. ४९३०००  | १९. ३७०००० |
| ८. ४७६०००  | २०. ३५०००० |
| ९. ४७१०००  | २१. ३४८००० |
| १०. ४५८००० | २२. ३३६००० |
| ११. ४४८००० | २३. ३३६००० |
| १२. ४३६००० | २४. ३१८००० |

( ११४ )

# २४ तीर्थंकरों के देव व देवी कौन २ हैं उनके नाम

| देव          | देवी    | देव             | देवी    |
|--------------|---------|-----------------|---------|
| १ गणेशदेव    | चण्डी   | १३. परमेश्वरदेव | विष्णु  |
| २ महादेव     | शक्ति   | १४. वायुदेव     | वसुंधरा |
| ३. त्रिशूल   | दुर्गा  | १५. अग्निदेव    | कन्या   |
| ४ नागदेव     | कालिका  | १६. गणेशदेव     | शक्ति   |
| ५ तुलसी      | महाकाली | १७. गणेशदेव     | शक्ति   |
| ६ कुम्भदेव   | शक्ति   | १८. अग्निदेव    | कन्या   |
| ७. मार्तण्ड  | शक्ति   | १९. कुम्भदेव    | शक्ति   |
| ८. विष्णु    | शक्ति   | २०. वायुदेव     | वसुंधरा |
| ९. अश्विदेव  | शक्ति   | २१. अश्विदेव    | शक्ति   |
| १०. अश्विदेव | शक्ति   | २२. गोमयदेव     | शक्ति   |
| ११. अश्विदेव | शक्ति   | २३. अश्विदेव    | शक्ति   |
| १२. कुमारदेव | शक्ति   | २४. मार्तण्डदेव | शक्ति   |

( ३१५ )

## २४ तीर्थंकर की मोक्ष संश्लेषणा

( मोक्ष समय का तप )

१—६ दिन का व्रत ( उपवास )

२—२३ तक एक २ मास तप था ।

२४—दो दिन का घेला तप

## २४ तीर्थंकर का निर्वाण समय आसन

१—पद्मासन मे

२ से २१ तक कायोत्सर्ग

२२—पद्मासन से

२३—कायोत्सर्ग

२४—पद्मासन से



## २४ तीर्थंकरों का निर्वाण स्थान

१—अष्टापद वे निर्वाण

२—से ११ तक सम्मोदशिलर पर्वत वे

१२—बम्पापुर

१३ स २१ तक सम्मोद शिलर

२२ गिरनार पर्वत वे

२३ सम्मोद शिलर

२४ वाचापुरी

## २४ तीर्थंकरों की निर्वाण तिथि

१ माघ कृष्ण १३

५ वैश्व कृष्ण ५

२ वैश्व कृष्ण ५

६ मार्गशीर्ष कृष्ण ११

३ " ५

७ चैत्र शुक्ल ११

४ वैशाख कृष्ण ५

८ माघ " ७

( ३१७ )

|                    |                       |
|--------------------|-----------------------|
| ६ भाद्रव शुक्ला ६  | १७ वैशाख कृष्णा १     |
| १०. वैशाख कृष्णा २ | १८. मागशीर्ष शु० १०   |
| ११. भावण ,, ३      | १९. फाल्गुण शु० १२    |
| १२. आषाढ शुक्ला १४ | २०. ज्येष्ठ कृष्णा ६  |
| १३. आषाढ कृष्णा ७  | २१. वैशाख ,, १०       |
| १४. चैत्र शुक्ला ५ | २२. आषाढ शु० ८        |
| १५. ज्येष्ठ ,, ५   | २३. भावण शु० ८        |
| १६. ,, कृष्णा १३   | २४. कार्तिक कृष्णा १५ |

२४ तीर्थंकरों का मोक्ष समय परिवार  
कितना २ था ।

|           |           |
|-----------|-----------|
| १ १० हजार | ४. १ हजार |
| २ १ हजार  | ५. १ ,,   |
| ३ १ ,,    | ६. ३०८    |



( ३१८ )

|    |         |    |        |
|----|---------|----|--------|
| ७  | ५०      | १६ | ६०     |
| ८  | एक हजार | १७ | १ हजार |
| ९  | " "     | १८ | " हजार |
| १० | " "     | १९ | ५०     |
| ११ | " "     | २० | १ हजार |
| १२ | ६       | २१ | "      |
| १३ | ६०      | २२ | ५३६    |
| १४ | ७०      | २३ | ३३     |
| १५ | १०८     | २४ | अच्छे  |

२४ तीथकर कितने २ भव कर तीर्थ  
कर पद प्राप्त किया ।

|   |            |   |           |
|---|------------|---|-----------|
| १ | १६ भव किये | ४ | ३ भव किये |
| २ | ३ "        | ५ | " " "     |
| ३ | " "        | ६ | " " "     |

( ३१६ )

|                |                 |
|----------------|-----------------|
| ७. ३ भव क्रिये | १६ १२ भव क्रिये |
| ८. " " "       | १७. ३ " "       |
| ९ " " "        | १८. " " "       |
| १० ३ " "       | १९. " " "       |
| ११. " " "      | २०. " " "       |
| १२ " " "       | २१ ३ " "        |
| १३. " " "      | २२. ६ " "       |
| १४ " " "       | २३ १० " "       |
| १५ " " "       | २४ २७ " "       |

२४ तीर्थंकरों के कितने २ पाठ  
मोक्ष गये ।

१ से १७ तक असख्यात पाठ मोक्ष गये ।

१८ से २३ तक सख्यात पाठ मोक्ष गये ।

२४. दो पाठ मोक्ष गये

( १२० )

२४ तीर्थंकरों के कौन २ गण थे ।

|             |              |
|-------------|--------------|
| १ मानव गण   | ११ मानव "    |
| २ " "       | १४ देव "     |
| ३ देव "     | १५ " "       |
| ४ " "       | १६ मानव      |
| ५ पाण्डस गण | १७ पाण्डस गण |
| ६ " "       | १८ देव गण    |
| ७ " "       | १९ " "       |
| ८ देव गण    | २० "         |
| ९ पाण्डस गण | २१ " "       |
| १० मानव गण  | २२ पाण्डस गण |
| ११ देव गण   | २३ " "       |
| १२ पाण्डस " | २४ मानव गण   |

# २४ तीर्थंकरों के गर्भ काल मान

|                      |                      |
|----------------------|----------------------|
| १. ६ मास ४ दिन रहे   | १३. ८ मास २१ दिन रहे |
| २. ८ मास २५ दिन रहे  | १४. ६ मास ६ दिन रहे  |
| ३. ६ मास ६ दिन रहे   | १५. ८ मास २६ दिन रहे |
| ४. ८ मास २८ दिन रहे  | १६. ६ मास " "        |
| ५. ६ मास ६ दिन रहे   | १७. ६ मास " "        |
| ६. ६ मास ६ दिन रहे   | १८. ६ मास " "        |
| ७. ६ मास १६ दिन रहे  | १९. ६ मास ७ दिन रहे  |
| ८. ६ मास ७ दिन रहे   | २०. ८ मास ८ दिन रहे  |
| ९. ८ मास २६ दिन रहे  | २१. ६ मास ८ दिन रहे  |
| १०. ६ मास ६ दिन रहे  | २२. ६ मास ८ दिन रहे  |
| ११. ६ मास ६ दिन रहे  | २३. ६ मास ६ दिन रहे  |
| १२. ८ मास २० दिन रहे | २४. ६ मास ७१ दिन रहे |

# श्रावणजी के गुण २१ या गृहस्थी के भी

१. वरार इष्ट होवे      २. पशुबन्ध होवे
३. सौम्यमकृति वाक्य होवे ४. लोकप्रिय होवे
५. अक्षर मकृति      ६. पाप भीड होवे
७. बर्म मखावान् होवे      ८. दाक्षिण्य (चतुर) होवे
९. कल्याणान् होवे      १०. इष्टबन्ध होवे
११. मध्यस्थ स्वभाव वाक्य होवे
१२. गभीर, अदिष्ट, विवेकी होवे
१३. गुणानुपगमी होवे १४. बर्मोपदेश करमे वाक्य होवे
१५. न्याय पक्षी होवे १६. दुष्ट विचारक होवे
१७. मर्दाना पूर्वक व्यवहार करमे वाक्य होवे
१८. विलय स्थित होवे १९. कुतूहल वरकार मर्ममे वाक्य
२०. परोपकारी होवे २१. धरम्यमें धरम्य धर्म्य वरदे

( ३२३ )

## तीर्थंकर गोत्र ( नाम )

### बांधने के २० कारण

( श्री ज्ञाता सूत्र, आठवा अध्यायन )-

१. श्री अरिहंत भगवान् के गुण कीर्तन करने से
२. श्री सिद्ध भगवान् के गुण कीर्तन करने से
३. आठ प्रवचन ( ५ समिति, ३ गुप्त ) का आराधन करने से ।
४. गुणवंत गुरु के गुण कीर्तन करने से
५. स्थविर ( वृद्ध मुनि ) के गुण कीर्तन करने से
६. बहुभुत के गुण कीर्तन करने से
७. तपस्वी के गुण कीर्तन करने से
८. सीखे हुवे ज्ञान को बारम्बार चिन्तन से ।
९. समकित निर्मल पालने से ।

१०. विनय ( ७-१०-१३४ ) प्रकट से करने से ।

११. समय समय पर आचरण करने से ।

१२. किये हुये व्रत प्रत्याख्यान निर्मल पत्रमे से ।

१३. गुण ( धर्म गुण गुण ) ग्राम ग्रामे से ।

१४. बारह प्रकार की निर्मल ( वप ) करने से ।

१५. बाल ( समय बाल-मुपबाल ) देने से ।

१६. वैष्णवत्व ( १ प्रकार की सेवा ) करने से ।

१७. चतुर्विध संघ की शान्ति-समाधि ( सेवा-योग ) देने से ।

१८. मन्त्र २ अपूर्ण तत्त्वज्ञान पढ़ने से ।

१९. सूत्र सिद्धान्त की भक्ति ( सेवा ) करने से ।

२०. मिथ्यात्व त्याग और समकित बधोत करने से ।

जीव भगवन्तान्त कर्मों को खपाते हैं । इन पत्रप्रयोगों को करते हुये उत्कृष्ट रसावली ( भावना )

भावे सो छीर्यकर गोत्र कर्म बाधे ।

## जल्दी मोक्ष जाने के २३ वोल

१. मोक्ष की अभिलाषा रखने से ।
२. उष तपश्चर्या करने से ।
३. गुरु मुख द्वारा सूत्र सिद्धान्त सुनने से ।
४. आगम सुनकर वैसी ही प्रवृत्ति करने से ।
५. पांच इन्द्रियों को दमन करने से ।
६. छकाय जीवों की रक्षा करने से ।
७. भोजन करने के समय साधु साध्वियों की भावना माने से ।
८. सद्विज्ञान सीखने व सिखाने से ।
९. नियाणा रहित एक फोटी से व्रत में रहता हुआ नव फोटी से व्रत प्रत्याख्यान करने से ।



१० दूरा प्रसार की प्रेरणापूर्वक करने से ।

११ कष्टों को पतनी करने निमूक्त करने से ।

१२ शक्ति होने के लिये प्रयत्न करने से ।

१३ कर्म के लिये पापों की दूरिष्ट आलोचना करने से ।

१४ किये के लिये प्रतीति को निर्मल पाठने से ।

१५ अभिप्राय सुपात्र प्राप्त करने से ।

१६ शुद्ध मन से शीघ्र ( प्रत्यक्ष ) पाठने से ।

१७ निर्द्वन्द्व ( पाप रहित ) मयूर वचन बोलने से ।

१८ महत्त्व किये के लिये संयम मार को अर्थात् पाठने से

१९ धर्म शुद्ध प्रयत्न प्रयत्ने से ।

२० हर महान्त ६ ६ पोषण करने से ।

२१ शान्ति समय आचरण ( प्रतिष्ठापन ) करने से ।

२२ पिछली रात्रि में धर्म आचरण करते के लिये टीका

मनोरथादि विवरण से ।

( ३२७ )

२३. मृत्यु समय आलोचनादि से शुद्ध होकर समाधि पंडित मरण मरने से ।

इन २३ धोलों को सम्यक् प्रकार से जानकर सेवन करने से जीव जल्दी मोक्ष में जावे ।

—०—

## परम कल्याण के ४० बोल

- |                           |                           |
|---------------------------|---------------------------|
| गुण                       | दृष्टात, सूत्र की साक्षी  |
| १. सम्यक्त्व निर्मल पातने | श्रेणिक नृप (ठाणाग सूत्र) |
| से ।                      | का कल्याण                 |
|                           | हुआ ।                     |
| २. नियाणा रहित तप-        | तामली तापस ( भग०          |
| श्चर्या से ।              | का कल्याण सूत्र)          |
|                           | हुआ ।                     |

गुण्य

दशोष्ठ, सूत्र की साक्षी

३ तीस योग विरचन  
रखने से ।गजमुकुमास का ( अष्ट  
कण्ठस्य दुष्मा दुर्गांग सूत्र )४ समभाव से स्वीकृत  
सहने से ।अश्वमेध साक्षी ॥ ३ ॥  
का अष्टकस्य दुष्मा५ पंच महात्म्य निर्मोह  
वाङ्मने से ।गौतम स्वामी (मण्ड. सूत्र)  
का अष्टकस्य दुष्मा६ अमास बोध अप्रमत्ती  
होने से ।शैब्य राजर्षि (शाखा सूत्र)  
का अष्टकस्य  
दुष्मा ।

● इन्द्रिय दमन करके से

हरकेरी मुनि ( अष्टक  
का अष्टकस्य दुष्मा सूत्र )८ मित्रों में माया कपट  
करने से ।मन्त्रिनाथ प्रसुत्री ( शाखा  
का अष्टकस्य दैवे सूत्र )  
दुष्मा ।

गुण

६. धर्म चर्चा करने से ।

दृष्टात, सूत्र की साक्षी  
केशी गौतमजी (८० सूत्र)  
का कल्याण हुआ

१०. सत्य धर्म पर श्रद्धा  
करने से ।

वरुण नाग (भगवत सूत्र)  
नतुण का०

११. जीवों पर करुणा  
करने से ।

मेघ कुमार का (हाथी के०  
कल्याण हुआ (ज्ञाता सूत्र)

१२. सत्य बात निशंकता  
से कहने से ।

आनन्द श्रावक (उपाशक  
का कल्याण (दशाग  
हुआ । सूत्र )

१३. कष्ट पड़ने पर भी  
व्रतों की दृढ़ता रखने से

अवड और उववाई सूत्र  
७०० शिष्य का  
कल्याण हुआ

१४. शुद्ध शीलव्रत  
पालने से ।

सुदर्शन सेठ सुदर्शन  
का क० चारित्र

| गुण                     | दृष्टांत      | सूत्र की संक्षेप |
|-------------------------|---------------|------------------|
| १४. परिमल की ममता       | कपिल          | कचपम्बक०         |
| स्थागमे से ।            | माह्म्य क०    | सूत्र            |
| १५. कदारता से सुपात्र   | मुमुक्षु गवता | विपाक            |
| राग हेमे से ।           | पवि का क      | सूत्र            |
| १६. संयम को बिगाते      | एशुबमती       | कचपम्ब-          |
| हृदे को स्थिर करने से   | रयनेमी०       | कन सूत्र         |
| १७. कम तपस्या बढ़ते     | बन्नामुनि     | क० सूत्र         |
| भाव करने से ।           |               |                  |
| १८. अस्मानि से बैया     | पञ्चक मुनि०   | जाता सूत्र       |
| बुल्ल करने से ।         |               |                  |
| १९. सदैव अग्निस्थ भावना | भरत चक्रवर्ती | अम्बुद्वीप०      |
| भावे से ।               |               |                  |
| २०. अशुभ                | परिणाम        | असन्न चन्द्र     |
| लेकने से ।              | मुनि०         | नेष्टिक          |
|                         |               | चरित्र           |

गुण

दृष्टांत, सूत्र की साक्षी

२२. सत्यज्ञान पर भ्रष्टा अर्हन्नक भाव० ज्ञाता सूत्र करने से ।

२३ चतुर्विध संघ की सनतकुमार च० भग-  
सेवा करने से पूर्व भव० घटी०

२४. उत्कृष्ट भाव से मुनि बाहुबलीजी ऋषभदेव  
सेवा करने से । पूर्व भव में चरित्र

महा निर्जरा की

२५. शुद्ध अभिप्रह करने से पाच पादव० ज्ञाता सूत्र

२६ धर्म दलाली करने से श्री कृष्णवासु० अन्तगद

२७. सूत्र ज्ञान की भक्ति, उदाई राजा० भगवती  
करने से ।

२८. जीव दया पालने से धर्मरुचि साधु० ज्ञातासूत्र

२९. व्रत से गिरते ही अर्णक मुनि० आवश्यक  
सावधान होने से ।

गुरु

छात्र सूत्र की साक्षी

३० आपत्ति में धैर्य रखने  
से ।कामुक वृत्त० अन्ध-  
भुक्ति० दम कर्मा३१ विनयन की मति  
करने से ।

प्रभावही एनी० न न

३२ व्यर्थों का मोह छोड़  
दण करने से ।मेघरथ शान्तिनाथ  
एना० चारित्र३३ शक्ति होते एना  
करने से ।बदेही एना० एव प्रसेनी  
सूत्र३४ सहोदर भाइयों का  
भी मोह त्यागने से ।एन बकरेव ३३ एना  
पु० चरित्र३५ इच्छा के वपसर्ग  
सहने से ।अपदेवभादक वरासक  
सूत्र३६ देव गुरु बन्धन से  
निर्भीक होने से ।सुदर्शन अंतगद सूत्र  
छेठ०

- गुण दृष्टात, सूत्र की साक्षी  
 ३७. चर्चा से वादियों को मण्डूक भावक० भगवती  
 जीतने से । सूत्र  
 ३८. मिले हुए निमित्त आर्द्रकुमार० सूत्रकृताग  
 पर शुभ भाव से ।  
 ३९. एकत्व भावना भाने से नमिराजर्षि० उत्त० अ० ६  
 ४०. विषय सुख में गृह्य जिनपाल० ज्ञातासूत्र  
 न होने से ।





( ३३४ )

## ग्रह शान्ति पाठ

(१) सूर्य और मंगल की पीड़ा हो तो ॐ ह्रीं यमो  
सिद्ध्यन्ते ॥

(२) जम्बू और शुक्र की पीड़ा हो तो ॐ ह्रीं यमो  
अरिहन्ताय ॥

(३) बुध की पीड़ा हो तो ॐ ह्रीं यमो वरचम्यकाय ॥

(४) शुक्र बृहस्पति की पीड़ा हो तो ॐ ह्रीं यमो आच-  
रिषाय ॥

(५) शनि, एहू केतु शन की पीड़ा हो तो ॐ ह्रीं  
यमो कोप सन्वस्ताय ॥

अतः प्रत्येक दिन मङ्गल की पीड़ा करने के लिये प्रत्येक  
दिन मुहूर्त में एक हजार पाठ का करव करे ।

( ३३५ )

॥ सदा मंगल कारक पाठ ॥

॥ ॐ असि छाउसाय नमः ॥

सदैव त्रिकाल में १०८ बार जप से गृह कलह  
दूर हो, शान्ति, सम्पत्ति, प्राप्त हो । मनो विकार  
निवारण हों ॥



## ॥ कृपा की एक रश्मि ॥

गुच्छ स्वच्छि पर त्वर्गीय वातस्मरणीय परम व  
 गुह्यात्मा महा वषात्रिभि परम दम्पष्टु गुह्य संवमी श्री  
 वपस्वी गङ्गपठिरायत्री महाराज व वाज नक्षत्रापी  
 राक्षसार्ग जैन समाज के प्राण श्रीमन्मैमाचार्य  
 पञ्चाथ केराटी श्री त्वामी काशीरामजी म० अ अपूर्व  
 वपस्वर है, सदा इन महापुरुषों अ अकी हैं । और  
 श्री गङ्गवर्ष्य मयवर्ष्य वाज नक्षत्रापी गुह्य संवमी वप  
 त्वमापी चतुर्विध संघ के परम दिव्येनी श्री रवामी  
 भागमन्त्री म की कृपा से वह पुरुषार्थ सुख व ह्य  
 अथ आपकी इस संवर्ष पर अवसर कृपा छवि है ।  
 येही वष्य छवि सदैव रहे ।

आपका शिष्य-मुनि त्रिलोकचन्द्र,  
 वंशधी ।

## जीवन परिचय की झलक

श्री पण्डित रत्न श्री स्वामी त्रिलोकचन्द्रजी महाराज का जन्म स्थान राजस्थान जोधपुर स्टेट में फालना स्टेशन के बिल्कुल निकट नगर खुडाला में ओसवाल वंश में हुआ। यहाँ ओसवाल जैनों के ३०० के करीब घर हैं, पर सभी श्री श्वेताम्बर मूर्ति पूजक हैं, यहाँ की बस्ती बड़ी सुन्दर दंग से है, अधिक जनता विदेश से व्यापार का सम्बन्ध रखती हैं, यथा पूना, बम्बई, अहमदाबाद, गुलाबपुरादि में। आपके पिताजी भी बाम्बे में ही व्यापार व्यवहार करते थे। अब भी आपके सासारिक सम्बन्धी भाई भतीजे पूना व बाम्बे में व्यवसाय करते हैं।

हैं आपके पिताजी का नाम श्रीमान् बमहस्पती  
 व मातेरवटी का नाम बराबन्सी देवी का आपकी  
 बाबूबाबसा से ही धर्म ज्ञेय था, आपकी माता व  
 मामीजी के भी धार्मिक जब संस्कार थे, जब कुछ  
 अवस्था में बिद्याऽभ्यसकिया, और छोटी अवस्था  
 में ही सिद्धी व पञ्चाव शान्त में आने का शुभ कर्म  
 से सम्पादन हुआ, और जो प्रवर्तक बरोबुद्ध स्वविर  
 बह बिभूषित श्री स्वामी मागमहन्नी महाराज की  
 अष्टोम कृपा दृष्टि से पवित्र सम्मार्गक स्वानक्यासी  
 होन जमय धर्म प्राप्त हुआ । इस महात्मा का अपूर्व  
 दशम पञ्चाव शान्त में अपूर्वका शहर में दि  
 सं ११७६ के माघ माघ में हुए, जब वक्त महा-  
 तपोनिधि पवित्रात्म्या सुसंनमी भी तपस्वी गङ्गापति-  
 राजा महाराज व बाबू बराबन्सी शान्त स्वमायी

( ३३६ )

शास्त्रमर्मज्ञ न्याय मार्गान्वेषक जप तप समाधि  
स्थ भी स्वामी भागमलजी महाराज उक्त नगर में  
ही विराजमान थे । श्री गुरुदेवजी महाराज के  
चरण सेवा में भाव चारित्री रूप रहे करीब दो वर्ष  
के अभ्यास के पश्चात् स्टेट नालागढ़ में आप भी जी  
का दीक्षोत्सव बड़ा समारोह से हुआ, वहाँ की जैन  
बिरादरी ने विशाल धनराशि लगा के यह शुभ कार्य  
पूर्ण किया । उस समय परमप्रतापी मधुर भाषी जैना-  
जैन शास्त्र के प्रकाण्ड मर्मज्ञ बाल ब्रह्मचारी श्री  
युवाचार्य पदालकृत श्री काशीरामजी महाराज ने  
शिष्य मण्डली से पधार कर दीक्षा संस्कार का सर्व  
कार्य किया, और उस वक्त जो धारा प्रवाह मुक्तकठ  
से आप भी जी ने दो घटा से अधिक प्रभावशाली  
भाषण दिया, जिससे वहाँ का नरेश व उपस्थित कई

हजार की जनता जबरन कर विस्मृत हो चली, और  
 वहाँ नरेरा ने अपने मन्त्री राज सखिब का० एगुरीर  
 सिंहजी से कहा मेरे इस जीवन का आश पड़िया ही  
 मोक्ष है, जो ऐसा स्वर्ग और ऐसा सख्ती-नरेश बनने  
 करने का काम प्राप्त हुआ वह और स्वर्ग के भी  
 हीका वहाँ की की जो पुण्यवर भी मोक्षमयी  
 म के सिद्ध बने थे । मैं भी पुण्यवरजी मन्त्री का  
 बन्धन कि स मुक्त से कहूँ आश के बखोबदेरा से  
 मैं यह श्रुत गया हूँ कि मेरे जैसे स्वर्ग का हजार  
 होना महाकठिन है, अब आप भी भी ही बड़ा  
 सहेंगे जो आप करमायें वही मैं रही-कर करने को  
 तैयार हूँ । आश ही अस्मिक राखनी मुझे मिली, नहीं  
 ता सबका अन्धकार में ही था मैं प्रतिबन्ध अपनी  
 छोट में आश के परिचापदेरा से दीपवली, हाथी,

( ३४१ )

विजयादशमी, चतुर्विंशति पक्षादशी, द्वादशपूर्णिमा,  
 श्री महावीरप्रभुजी का जन्म दिवस ऐसे ही राम, कृष्ण  
 जी का जन्म दिवस और अपना और युवराज का  
 जन्म दिन मेरी राजगद्दी का दिवस और भाद्रपद  
 शुक्ला पचमी, इतने दिन प्रति वर्ष जीव हिंसा व  
 शिकार सर्वथा छोड़ता हूँ । और अपनी रियासत  
 भर में दया धर्म को पालन कराता हूँ, आप श्री जी  
 की यह वाणी का रस और त्याग कदापि नहीं  
 भूलूंगा । नालागढ़ नरेश ने श्री महाराज से यह  
 अर्ज की कि आप अग्ने लिये जो भी मार्गों में यथा-  
 शक्ति देने को तैयार हू । तब श्री पूज्यवरजी म०  
 ने फरमाया हमें दया, दान, प्रजा की रक्षा प्राणीमात्र  
 का हित ही चाहिये, और किसी जर जमीनादि की  
 अभिलाषा नहीं, अतः हम सन्यासी इन चीजों के



हजार की जनता बचल कर विस्मित हो उठी, और  
 वहाँ मरेरा ने अपने मन्त्री एवं सचिव का एगुरीर  
 सिद्दी से कहा मेरे इस बीबत का क्या परिणाम ही  
 मोक्ष है, जो देश रक्षण और देश सङ्गमोक्षेरा बचल  
 करने का काम प्राप्त हुआ एक और व्यक्ति ने भी  
 हीजा वहाँ की की जो पुष्कर भी मोतीपुष्पी  
 म के सिद्ध बने थे । मैं भी पुष्करभी महा का  
 पम्बदाद जिस मुक्त से कहूँ, आज के बसोपरेय से  
 मैं बह जान गया हूँ कि मेरे जैसे व्यक्ति का बहल  
 होना महाकठिन है, यह आप भी भी ही बल  
 सहेगे जो आप करपाये वही मैं स्वीकार करने को  
 तैयार हूँ । आज ही आरिषक धराभी मुझे किसी मही  
 तो सर्वथा सम्पन्न मैं ही था मैं कतिबने अपनी  
 स्तेह में आज के पनिबोपरेय से, दीपावली, दोहो,

ही प्राप्त होते हैं, शेष समाप्त हो गये ( आपका मुख्य ध्येय गुर्वाज्ञा, शास्त्राभ्यास, चारित्र्य शुद्धि, धैर्यता, आत्म चिन्तन व मनन, आप अपनी क्रिया व चर्या में कभी पीछे नहीं रहते, यह सर्व उपकार श्री गुरुदेव जी महाराज का ही है ।

आपके लघुगुरु भ्राता ( भाई ) शान्त चित्त विनीत सेवा भावी त्यागमूर्ति सरलात्मा श्री मङ्गल-चन्द्रजी महाराज हैं, इनका जन्म शुभस्थान दहरा, महावटी (जि० करनाल) पंजाब प्रदेश में अप्रवाल जैन स्थानक वासी वंश में हुआ था, इन्हें बड़े वैराग्य से श्री गुरुदेवजी म० के समीप वि० सं० २००७, चातुर्मास दिल्ली सठ्ठी मण्डी आश्विन मास में शोरा कोठी कैदार बिल्डिंग में हजारों नर नारियों के मध्य में श्री गुरुदेवजी म० व मरुस्थल प्रान्त के

( ३४२ )

स्थापी हैं आप अपने इष्ट से कहा दूर न गइयें,  
 कुत्रिज बात अठख बा अचल रहे आप के अपने  
 जीवन में हो इष्ट पूज्यवरकी मर्मा के लक्षणों से  
 काम ठाढ़ और हर तरह मर्मा को पूर्णता करने  
 कर और कराया ।

आप भी जी पर अनेक मुनिपुत्रों का पवित्र दण्ड  
 कर है, छात्राभ्यसन में साक्षात्भास में समसाधन  
 से यहाँ पर उनक नाम न मिल सके यदि समग्र  
 मिता हो दूसर मन्त्र में उन महापुरुषों के मन्त्र नवी-  
 त्वात दिख जायेंगे । विस्तर मन्त्र से और अधिक  
 शिष्ट भी न सक ।

आपने आपकी सेवा की ल को स्मरित सेवा की  
 और अनेक मन्त्र रचे भी और लिखे भी । अष्ट वर्ष  
 ११ द्वादश मन्त्र मिलल चुके हैं अब तो रोज मन्त्र

( १३४३ )

ही प्राप्त होते हैं, शेष समाप्त हो गये ( आपका मुख्य  
ध्येय गुर्वाज्ञा, शास्त्राभ्यास, चारित्र्य शुद्धि, धैर्यता,  
आत्म चिन्तन व मनन, आप अपनी क्रिया व चर्या  
में कभी पीछे नहीं रहते, यह सर्व उपकार भी गुरुदेव  
जी महाराज का ही है ।

आपके लघुगुरु भ्राता ( भाई ) शान्त चित्त  
विनीत सेवा भावी त्यागमूर्ति सरलात्मा भी मङ्गल-  
चन्द्रजी महाराज हैं, इनका जन्म शुभस्थान वहरा,  
महावटी (जि० करनाल) पंजाब प्रदेश में अप्रवाला  
जैन स्थानक वासी वंश में हुआ था, इन्हें बड़े वैराग्य  
से श्री गुरुदेवजी म० के समीप दि० सं० २००५, ०१  
चातुर्मास दिह्ली सब्जी मण्डी के निकट नाम में रहे, ०१  
कोठी कैदार बिल्डिंग में तथा नर नारिने से  
मध्य में भी गुरुदेवजी का वन्दन हमारे

( १४४ )

पाचमहर्षि मास्यवर सबजन हितैषी जैमाच्यर्षे पूज्य  
भी गणेशोपासकी म भी बौदनी चौक से स्वरिष्य  
मण्डली से पधारे थे व अम्य भुमिवर भी कर्त्तव्य  
ये और दिल्ली शहर से बाब मन्थारिषी विदुषी  
महासवी भी पभावेबीजी म भी स्वरिष्या से इस  
अवसर पर वहाँ पधारी थी और शोध कोठी में  
विद्यमान महा मास्यवती शान्त स्वभावी दीर्घ इतिष्य  
महासवी भी मोहनवेबीजी म भी स्वरिष्या से  
वहाँ कर्त्तव्य थी चतुर्विध संघ की कर्त्तव्य में  
अपने दीक्षा प्राप्त की, यह दीक्षा कार्य का श्रेय छप्पी  
सत्री भी संघ व कम्ता बीरामजी को है।

भी शुद्धरंज म भी स्वामी मागमन्त्री म  
राष्ट्रिय कल्याणरत्ना के कारण व भूतनों की पीडा  
से दिल्ली शहर में भी विद्यमान हैं। और इस वने

स्वर्ण में सुगन्ध वाली कहावत चरितार्थ हुई कि जो गत वर्ष अर्थात् वि० स० २००६ में सादड़ी मारवाड़ में वृद्धमाधु सम्मेलन हुआ था ।

भिन्न २ प्रान्तों के स्थानकवासी साधु साध्वी सैकड़ों के लगभग और भावक आविकाएँ हजारों के लगभग एकत्रित हुए थे और सादड़ी के स्थानकवासी श्री सघ ने सघ ऐक्य योजना को लक्ष्य में रखकर अपूर्व कार्य भार उठाया सो ही पुण्य भूमि व शुद्ध-काल भाव ने बड़े सुन्दर रूप से सफल बनाया क्योंकि मारवाड़ सादड़ी श्री सघ के भावक आविकाओं का धार्मिकोत्साह का परिचय तो सभी को ज्ञात है, तथापि वि० स० १९६६ वें में यहाँ के श्री सघ का चातुर्मास स्वक्षेत्र में करनार्थ श्री गुरुदेवजी म० से अत्याग्रह भरी विनती की कि—आप श्री जी हमारे

( १४६ )

क्षेत्र पर उपचार कर प्यो ही इस वर्ष चातुर्मास करने  
 की कृपा छह करें । स्वर्गीय पंजाब केराही माह माग्य-  
 वर श्रीमन्मन्त्रैयचार्य श्री केशरीरामजी म० की आज्ञा  
 व श्री संघ की पुरखोर बिमती से श्री गुरुदेवजी म०  
 ने ३ सुठों से चातुर्मास करना लीकार फरमाया कर  
 यादि गिन्य । श्री प्रवर्तक श्री स्वामी माग्यमन्त्रजी म०  
 के चातुर्मास में सर्व जनता समेसेम व सेवामात्र  
 उपरचर्याएँ सभी बहुत भावों से करती रही परन्तु  
 यहाँ कोई वार्षिक शिष्टपत्र संस्था न होने से भावी  
 जमता धर्मोत्थारण से अनमिष्ट थी वह कमी श्री  
 प्रवर्तकजी म० साहिब को बहुत अलखती । अतः  
 श्री प्रवर्तकजी म० की शुभ कामना व १०२० अर्द्ध  
 शताब्दीयामी श्री स्वामी विशोकचन्द्रजी म० छा० के  
 मार्मिक समोपदेश से प्यो पर जोड़े पैमाने पर पाठ

शाला प्रारम्भ हुई, जिसमें बालक बालिकाओं को धार्मिक शिक्षण सवर, सामायिक, प्रतिक्रमणादि व थोकड़ा ज्ञान प्राप्त होने लगा, श्री संघ का ऐसा उत्साह वृद्धि पर हुआ कि लोर्कशाह गुरुकुल, को विशाल रूप दिया । जिस बिल्डिंग में वृद्धसाधु सम्मेलन भी हुआ यह सर्व उपकार श्री पं० स्वामी भागमलजी म० सा० के चातुर्मास का है, सर्व श्रावकों ने एक ध्वनि से यह कहा, ऐसा अपूर्व धर्मवृद्धि ज्ञानवृद्धि का चातुर्मास हमने अपने जीवन में नहीं देखा, कि आपने किसी का एक पैसा खर्च किसी <sup>विज्ञ</sup> कार्य में नहीं कराया, और समाज की व धर्म की नींव कैसी सुदृढ़ बनाई, ऐसा सौभाग्य आप ही का है जो हमारी कमी को दूर किया । धन्य है ऐसे गुरुदेवों को, अब वहीं पर आते हैं कि चतुर्विध संघशुद्ध भाव लेकर



( ३४८ )

इस सम्मेलन में पधारे वे तो इस मुषर्षे बधसर पर  
 सबे माण्यवर जैताचार्य पुदाचार्य कपाण्यवर व्याधि  
 सध हो ने संग्रह्यार्थ देशकाज को कवच में रत्न कर  
 सधने अपनी ९ पदविर्षों का विहीमीकरत कर भी  
 त्यानकव सी जैन बर्द्धमान समण संघ सर्वेयत से  
 त्यापन किया और भिन्न २ सम्प्रदायें समाप्त की, और  
 अपना प्रबाम्यचार्य आदित्य रत्न रायस विराट् जैन  
 धर्म दिखाकर भी आरमाएनजी महाराज को बमय्य  
 और कपाचार्य शाण्ड दाम्य सर्वेयन प्रेमी भी गयोरी  
 काहमी महाराज को निधुत्त किया । और संघ रत्न  
 क किए इन दोनों महापुढपों के बीच सोइह मुनि-  
 एगों का एक मन्त्रिमरद्वय बनाया । सब मन्त्रियों के  
 आधिकार में भिन्न २ पा-तों का कार्य समर्पण किया ।  
 इस सोइह मन्त्री-मंडल में दो पंचाय माण्य के सुरङ्क

व प्रबंधक मन्त्री पद से विभूषित पंडितरत्न बालप्रह-  
 चारी शांतस्वभावी ज्ञानधारिणि पं० भी शुक्लचन्दजी  
 महाराज को नियुक्त किया, मरुस्थल प्रान्त को पावन  
 करते हुए शिष्य मंडलीसे जोधपुर शहर का चातुर्मास  
 समाप्त कर उग्र विहार करते हुए आप दिल्ली सदर में  
 पधारे । और वयोवृद्ध स्थविर पद विभूषित प्रवर्तक  
 श्री स्वामी श्री भागमलजी महाराज साहिब के दर्शनों  
 का सौभाग्य प्राप्त हुआ । और अन्य मुनिराजों  
 को आप श्री जी के दर्शनों का लाभ प्राप्त  
 हुआ और श्री वर्द्धमान स्थानक वासी जैन सघ  
 दिल्ली को आपके शुभ दर्शन व धर्मोपदेश  
 श्रवण करने की दीर्घकाल से अत्यन्त पिपासा लगी हुई  
 थी, चिरकाल की आशा को आप श्री जी ने पधार  
 कर सफल करी । पर जनता यह दीर्घकाल की पिपासा

बोदे काज में क्यों मिटा सकती थी। यह रिझी  
 सहर की संघ व सङ्ग्री मरही की संघ के विद्युजित  
 पबोबुस रकार पद विमक्ति सरज व वविग्रह्य से  
 की प्रायेता की कि हमारा संघज की संघ का यह  
 विचार है की व० र काज मङ्गलपी वंजाव मन्त्र के  
 सुरजक मन्त्री पद विमक्ति की स्वामी शुक्रपन्नी  
 म० का वातुर्मास पदों ही हो। की म० पबोबुस  
 स्वा प की स्वामी भागपन्नी म० के प्रयात्वा  
 कि यह सुनकर मुझे अतीव दर्द हुआ और मेरा भी  
 पही विचार है कि की पंडित की का वातुर्मास मेरे  
 पास ही रिझी सहर में ही हा, परन्ति प० प० के  
 अनेक चेष्टा की व वंजाव के कई चेष्टों की वातु  
 र्माकार की व० र० की म० की पुर पोर बिलगी हो  
 यी की कर भी व र० की शुक्रपन्नी म० से

दिल्ली सदर व सब्जी मंडी क्षेत्र की विनती को बड़े हर्ष से स्वीकृति प्रदान करी, आपका हृदय भी विशाल व उदार है और आपने फरमाया कि श्री प्रवर्तकजी म० यहाँ विराजमान हैं, इन महापुरुषों का कहना मेरे लिये मान्य है, ऐसा शुभावसर तो बड़े भाग्य से मिलता है, लोग तीर्थकरनार्थ दूर २ नदी पर्वतों में जाते हैं पर ऐसी सरलात्मा त्यागात्मा वयोवृद्ध म० की सेवा व दर्शन का लाभ कहाँ रक्खा है ।

और आप श्री जी ने दिल्ली शहर के सभी क्षेत्रों को चातुर्मास में धर्मोपदेश का लाभ देने के लिए आगार ( खुला रक्खा ) यह फरमान सुनते दिल्ली सदरादि सभी क्षेत्रों की जनता ने हर्ष प्रमोद से जय-ध्वनि के नाद से नभ मण्डल गुञ्जा दिया, अतः कार्य भी तो अतिहर्ष का था ।

( ३५९ )

बन्ध है भाव भी छी के बंधार हृदय और  
गम्भीरता को ।

॥ ॐ शान्ति ! शान्ति !! शान्ति !!!

लेखक भवदीय—

राजकुमार जैन



# धन्यवाद

इस ग्रन्थ के प्रकाशन में जिन महानुभावों ने तन, मन, धन से स्वशक्ति से पूरा सहयोग दिया है, वे सदैव धन्यवाद के पात्र हैं। उनके शुभ नाम-  
१, श्रीमान् ला० मामचन्दजी के सुपुत्र ला० पन्ना-  
लालजी कानी वाले ( हाल डिण्टीगज, दिल्ली )

२ गुप्तदानी

३ श्रीमान् ला० दर्हरामजी रामकृष्णजी गढ़ी जम्कि-  
यारा ( हाल हस्तिनागपुर )

४ श्रीमान् डा० प्रेमचन्द्रजी की धर्मपत्नि श्रीमती  
शान्तिदेवी वरनाले वाले (हाल वारहटूटी, दिल्ली)

५ श्रीमान् धर्मप्रेमी गुरुभक्त ला० प्यारालालजी  
राजाखेड़ी वाले की धर्मपत्नी श्रीमती धम्मदुरी  
देवी ( हाल खारी बावली, दिल्ली )

- ६ श्रीमान् शा० बलचन्द्रचरणजी की बर्मपत्नी श्रीमती  
लक्ष्मीदेवी राधाकृष्णजी बाबे (दाह नई दिल्ली)
- ७ स्वर्गीय शा सुन्दरलालजी अणेका स्वाकछोटी  
(दाह दिल्ली)
- ८ श्रीमती कच्छीदेवी नाझागद बाबे (दाह न्यू दिल्ली)
- ९ श्रीमान् डा बिष्णुमतीचमजी की बर्मपत्नी का  
घोर से । नाझागद बाबे (दाह न्यू दिल्ली )
- १० गीरदण्डा मण्डी के माइजी से श्री पूण मद्र  
बाग दिया ।
- ११ डा खानीराम मूकचन्द्रजी पण्डितान बाबे  
(दाह मोठीबाबाग दिल्ली)
- १२ डा ब्रम्हपन्थ सुन्दरीबका कच्छबा बाबे  
( दाह मोठीबा कथम दिल्ली)
- १३ डा कच्छीचमजी एमेरवरदण्डजी  
( कच्छबा बाबे ) दाह मोठीबाबाग दिल्ली ।

( ३ )

- १४ ला० प्यारेलालजी वैणीप्रसादजी जैन  
( हलालपुर वाले ) हाल यू० पी० पलिये कला  
( लखीमपुर खैरी ) ।
- १५ ला० गोपीराम इन्द्रचन्द्रजी खूबड़ू वाले  
( हाल दिल्ली डिण्टोगज ) ।
- १६ श्रीमती आशादेवी धर्मपत्नी शिखरचन्दजी जैन  
( दिल्ली सब्जीमण्डी, कमलानगर )
- १७ ला० सूरजभानजी राजकुमारजी जैन  
( राजपुर वाले, हाल दिल्ली, पहाड़ीधीरज )
- १८ ला० रामलालजी शोरीलालजी ओसवाल  
अमृतसर वाले ( हाल दिल्ली सदर )
१९. ला० मोतीलाल आफ ला० नत्थू शाह लालू शाह  
दिल्ली सदर ।

आपका—शुभेच्छुक  
सुखचैनलालजी जैन



प्रचारक—

धर्म प्रेमी गुरुमच्छ गुरु विचारक  
भीमान् स्ता० सुखचैनलालजी जैन  
फरीदकोट बाबे ( इन्द्र विहीन सदर )

पुस्तक मिहने ५५ पठा—

- १ जैनधर्म प्रचारक सामग्री भण्डार  
जैन स्थानक सदर बाजार, डिप्टीगंज, दिव्री ।
- २ ला० प्यारेलालजी धोमप्रसादजी जैन  
नयाबास, दिव्री
- ३ स्ता० मामधंदजी पन्नालालजी जैन  
सदर बाजार, डिप्टीगंज, दिव्री

---

सौम्यता इतिहास प्रेम श्रीम माहेंद्र देवजी ।

